'दी भिनक्रानिक स्टडी आफ दी आर्यन डाइलैक्ट्स इन मिर्जापुर डिस्ट्रिक्ट'

(मिर्जापुर जिले की आर्यबोलियों का संकालिक अध्ययन)

इलाहाबाद-यूनिवर्सिटी में डी०फिल०उपाधि के लिए प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

निर्देशक—

प्रो० एम.बी.जायसवाल

हिन्दी विभाग,इलाहाबाद यूनिवर्सिटी

प्रस्तोता—

मूलशंकर शर्मा, एम०ए०

प्राक्कथन

मिर्जापुर जनपद अपनी प्राकृतिक शोभा तथा सांस्कृतिक गौरव की दृष्टि से महत्वपूर्ण है । जनपद का अपना ऐतिहासिक महत्व है । चुनार, नौगढ़, विजय-गढ़, एवं अगोरी के किले प्राचीन समृद्धि का परिचय देते हैं । इनके अतिरिक्त कैमूर पर्वत श्रेणी में बनी हुई गुफाएं तथा गुफाचित्र जनपद की सांस्कृतिक उन्नति एवं गौरव की प्रतीक हैं । इनके होते हुए भी जनपद में कुछ ऐसी प्राकृतिक सीमाएं रही हैं जिनके कारण सम्पूर्ण जनपद का अन्त:सम्बन्ध कुछ काल पहले नहीं रहा है । इस दूरी के कारण एक अलगाव तथा एक दूसरे को गलत समझने की प्रवृत्ति बीच में रही है । आज जब जनपद में औद्योगिक विकास हुआ है तथा यातायात के साधन विकसित हुए हैं, लोग एक दूसरे के निकट आ गए हैं तथा एक दूसरे को समझने लगे हैं । जनपद के सम्बन्ध में आकर्षण का कारण एक ओर पहाड़ों में छिपी हुई भू-सम्पत्ति है तो दूसरी ओर सांस्कृतिक वैभव की प्रतीक जनजातियां तथा उनके बिखरे हुए संगठन हैं ।

जनपद के सम्बन्ध में प्रचलित अन्य धारणाओं के साथ भाषा की समस्या भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है । मिर्जापुर जनपद ऐसी भौगोलिक सीमा पर स्थित है जहां पूर्वी हिन्दी की बोलियां तथा भोजपुरी साथ-साथ व्यवहृत होती हैं। दोनों बोलियों की सीमान्त रेखा पर ऐसा भाषीय मिश्रण तैयार होता है जिसमें विभाजक रेखा खींचना नितान्त कठिन है । जनपद का कुछ भाग जंगल पहाड़ों से ढका हुआ है जिसमें आदिवासी जातियां फैली हुई हैं जो भाषा के ऐसे मिश्रित रूप का प्रतिनिधित्व करती हैं जिसके सम्बन्ध में मानक स्थिति का निर्धारण करना नितान्त कठिन है । एक ही गांव में विभिन्न जातियों के लोग भिन्न भिन्न भाषा का प्रतिनिधित्व करते हैं । एक ही वक्ता दो भाषाएं बोलता है । इस स्थिति में विद्वानों ने इस सम्बन्ध में जो भी प्रयत्न किया है, वह अपूर्ण रह गया है ।

जनपद की बोलियों के सम्बन्ध में जिन ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ है उनमें चार प्रमुख हैं । सर्वप्रथम जार्ज अब्राहिम ग्रियर्सन ने अपने भाषा सर्वेक्षण में जनपद की बोलियों के सम्बन्ध में विचार किया है । इन्होंने बोलियों की जो सीमा निर्धारित की है वह अंशत: सत्य है । अपने विस्तृत अध्ययन में ग्रियर्सन साहब बोलियों के

व्याकरणिक रूपों के सम्बन्ध में जो कुछ भी लिखे गए हैं वह अपर्याप्त है, साथ ही बोलियों के व्याकरणिक रूपों का पूर्ण प्रतिनिधित्व नहीं करते ।

जनपद की बोलियों के सम्बन्ध में जिन भारतीय विद्वानों ने अध्ययन किया है उनमें डा० बाबूराम सक्सेना तथा डा० उदयनारायण तिवारी का नाम विशेष उल्लेखनीय है । डा० सक्सेना ने 'अवधी का विकास' नामक अपने शोध-प्रबन्ध में मिर्जापुर की अवधी के सम्बन्ध में प्रकाश डाला है । चूंकि मिर्जापुर जनपद अवधी की अंतिम पूर्वी सीमा है एवं डा० सक्सेना ने लखीमपुर के आस-पास की अवधी को आधार बनाया है, इसलिए जनपद के सम्बन्ध में जिस विवरण की आवश्यकता थी वह सम्भव नहीं हो पाई है । इसका एक मात्र कारण शोध-प्रबन्ध का विस्तार है ।

भोजपुरी भाषा का अध्ययन करते हुए डा० उदयनारायण तिवारी ने जनपद की भोजपुरी के सम्बन्ध में विस्तार के साथ परिचय दिया है । आपने अवधी एवं भोजपुरी की सीमा भी निर्धारित की है जो डा० ग्रियर्सन के मतानुकूल है । आदरणीय तिवारी जी ने भोजपुरी के अध्ययन में बलिया की भोजपुरी को आदर्श माना है और उसी को आधार मान कर शेष रूपों पर प्रकाश डाला है । यह अध्ययन काफी पुराना है, और आज बोली रूपों में परिवर्तन हो गया है । डा० तिवारी ने जनपद की भोजपुरी के सम्बन्ध में जो भी उदाहरण दिए हैं वे आज कहीं भी प्राप्त नहीं होते । आपके अध्ययन में मिर्जापुर तथा बनारस दोनों स्थानों के उदाहरण एक से दिए हुए हैं । मिर्जापुर जनपद का कुछ भाग ही ऐसा है जो बोली के उस रूप का व्यवहार करता है जो बनारस में बोली जाती है । शेष भाग नितान्त भिन्न है । डा० तिवारी ने अवधी एवं भोजपुरी की जो सीमा निर्धारित की है उसमें भी आज परिवर्तन हो गया है यथा- मिर्जापुर शहर या उससे ५ मील पश्चिम भोजपुरी बोली ही नहीं जाती ।

इस सम्बन्ध में अन्तिम अध्ययन 'अवधी एवं भोजपुरी की सीमान्त बोलियों का अध्ययन' रूप में डा० अमरबहादुर सिंह ने किया है । आपने बोलियों की सीमा के सम्बन्ध में डा० तिवारी की मान्यता को ही स्वीकार किया है । चूंकि आपके

अध्ययन का क्षेत्र लम्बा भूभाग है इस कारण बोलियों के सम्बन्ध में स्पष्ट संकेत प्राप्त होते हैं ।

इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि इन विद्वानों ने जनपद के सम्बन्ध में उन तथ्यों को छोड़ दिया है, जो अपने आप में महत्वपूर्ण हैं । ये तथ्य ही प्रस्तुत अध्ययन की प्रेरणा हैं जिन्होंने लेखक को माध्यम बना कर उभरने का प्रयत्न किया है । लेखक स्वयं इस जनपद के उस भूभाग का रहनेवाला है जहां भोजपुरी शुद्ध रूप में बोली जाती है । भोजपुरी के सम्बन्ध में हुए अध्ययन से यह बराबर प्रेरणा मिलती रही है, कि इस सम्बन्ध में कुछ किया जाय ।

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में मिर्जापुर जनपद में बोली जाने वाली बोलियों के उन रूपों पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है जो द्रविड़ परिवार की बोलियों या अन्य दक्षिणी बोलियों से सम्बन्ध नहीं रखते । जनपद में ऐसी भी जातियां हैं जो कोलेरियन या द्रविड़ परिवार की भाषा का प्रयोग करती है। चूंकि उनका सम्पर्क अवधी या भोजपुरी भाषा बोलने वाले लोगों से भी है,इसलिए ये जातियां एक साथ दो भाषाएं बोलती हैं । इन जातियों के बोलियों को इस अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया गया है । प्रस्तुत अध्ययन जनपद की आर्यबोलियों का प्रतिनिधित्व करता है ।

अध्ययन को तीन भागों में बांटा गया है । अध्ययन के प्रथम अध्याय में जनपद के बोली भूगोल का परिचय दिया गया है । यह अध्ययन किसी पुस्तक को आधार बनाने की अपेक्षा स्वतः पर्यवेक्षण पर निर्भर है । लेखक ने जनपद के अधिकांश सुगम,दुर्गम स्थानों की यात्रा,शब्दावली संग्रह तथा उनके वर्गीकरण के आधार पर निष्कर्ष निर्धारित किए हैं । इस अध्ययन से जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं वे पहले से नितान्त भिन्न हैं । बोली भूगोल में जनपद में प्रचलित समस्त_बोलियों की सीमा निर्धारित करने का प्रयत्न हुआ है तथा बोलियों में अन्तःसंगति के आधार पर जो आन्तरिक भिन्नताएं प्राप्त हुई हैं, उनका भी उल्लेख किया गया है ।

अध्ययन का द्वितीय अध्याय जनपद की बोलियों का व्याकरणिक अध्ययन है।

जनपद में प्रचलित ध्वनियों की एक मानक अवस्था का निर्माण किया गया है तथा उनकी भिन्नताओं पर प्रकाश डाला गया है।

अध्ययन का तृतीय आयाम पदग्रामिक अध्ययन है जिसमें आबद्ध रूपों का अध्ययन, एवं संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया एवं क्रियाविशेषण आदि की व्याकरणिक रूप तालिकाओं के निर्माण का प्रयत्न किया गया है। समस्त अध्ययन पदग्रामिक व्याख्या तक ही सीमित है। इस वर्ग में जनपद में प्रचलित समस्त भिन्नताओं को सामने रख का मानक अवस्था का निर्माण हुआ है।

लेखक स्वयं तहसील राबर्ट्सगंज, ग्राम परासी (केन्द्र सं०१) का निवासी है। भोजपुरी उसकी मातृभाषा है। अध्ययनमें केन्द्र १ को आधार बना कर केन्द्रीय बोली का निर्माण किया गया है। चूंकि केन्द्र १ जनपद के केन्द्र में है और उसके आस पास भोजपुरी का जो रूप प्रचलित है वह केन्द्रीय है इसलिए केन्द्रीय रूप को आधार बना कर जनपद में प्रचलित शेष अन्य रूपों का अध्ययन किया गया है। जनपद में जिन केन्द्रों से सामग्री ली गयी है उनमें पंद्रह प्रमुख हैं। केन्द्र सं० १ परासी, २ चीड़ुर, ३ मन्दना ४ पवरांव, ५ चुनार, ६ धर्मपुर ,७ मुबकरा ८ मिर्जापुर, ९ दुबैनीपुर, १० कमनी,११ ध्यौरापुर ,१२ मलपहरी, १३ रामपुर १४ मैलोड़ तथा १५ वां माण्डा है। इसके अतिरिक्त मन्दरा, सेवारी, सेनुरिया, पहरी इत्यादि स्थानों से सामग्री ली गयी है जो अपनी भाषा की स्थिति में केन्द्र सं०१ की प्रतिबिंब है। इसलिए इन केन्द्रों को छोड़ दिया गया है। केवल इनकी सामग्री को स्वीकार किया गया है।

सामग्री संकलन में इस बात का भी प्रयत्न हुआ है जिसमें सामग्री का प्रचलित अनुपातम् रूप प्राप्त हो सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कहानियों एवं लोकगीतों का आश्रय न लेकर उन वाक्यों का संग्रह किया गया है जिसमें ध्वन्यात्मक रूपों के साथ साथ व्याकरणिक कोटियों की पूर्ण सामग्री उपलब्ध हो सके। इस तरह का सामग्री संकलन दुष्कर कार्य है, इसलिए इन बोली रूपों के संग्रह में, जो सामान्य-बोधगम्य नहीं रही हैं, काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। सामग्री संकलन, उसका वर्गीकरण एवं प्रस्तुतीकरण आधुनिक भाषा विज्ञान की वर्णनात्मक पद्धति से हुआ है। ध्वनियों के विश्लेषण में इस बात का भी ध्यान रखा गया है

जिससे भिन्न विधाओं का यथावत् अनुवेक्षण हो सके । सामग्री संकलन कार्य सामान्य रीति से उन्हीं पुरुषों से हुआ है जो उस की बोली बोलते हैं, यद्यपि कुमारिकाएं भी मिल गए हैं । सामग्री संकलन में जाति, वर्ग तथा लिंग का विशेष ध्यान रखा गया है । कोल, पहारी, धुरिया, गोंड, ओरावा, मझवार इत्यादि जातियों में बांसर जाति सामान्यतः दो बोलियों का प्रयोग नहीं करती । इस जाति की जो सामग्री प्राप्त हुई है वह प्रस्तुत अध्ययन के भीतर नहीं आती । अस्तु उसका उल्लेखमात्र किया गया है ।

मिर्जापुर जनपद जहां भौगोलिक क्षेत्रफल की दृष्टि से प्रदेश के बड़े जिलों में से है, वहीं यातायात की असुविधा के कारण अत्यन्त दुर्गम है । जनपद के दक्षिणी क्षेत्र में वर्षा तथा शरद् में यातायात की कोई व्यवस्था हो नहीं सकती । जाड़े के कष्टकर बाद जंगलों से लकड़ी, या कोयले की गाड़ी ढोने के लिए जो ट्रक गाड़ियां चलती हैं वहीं इन दुर्गम स्थानों तक पहुंचाती हैं । इन स्थानों में महुअरी, म्योरपुर, बभनी इत्यादि केन्द्र हैं । इस स्थिति में जनपद के विभिन्न भूभाग में पदयात्रा के अतिरिक्त और कोई साधन शेष नहीं बचता । सोनपारी क्षेत्र में जहां जंगल है, तथा जो गांव गहरों में हैं वे दस मील दूर । सामग्री अधिकांश स्थानों की यात्रा करके प्राप्त की गयी है तथा इस बात का भी प्रयत्न हुआ है कि बोली का कोई ऐसा रूप न छूटने पाए जो समीपवर्ती बोली से भिन्नता रखता हो । सामग्री संकलन की इस यात्रा में मैं अपने अभिन्न मित्र श्री शिवनाथ सिंह, अध्यक्ष राजनीति विज्ञान, डिग्री कालेज गाजीपुर को भूल नहीं पाता जो जातीय पंचायतों संबंधी अपने शोध अध्ययन में सामग्री संकलन हेतु अधिकांश स्थानों पर मेरे साथ रहे । इन दुर्गम स्थानों में उनके साथ के बिना यात्रा असंभव थी । सामान्यतया अपनी सुविधा को ध्यान में रखते हुए क्षेत्रीय कार्य करना स्वयं असुविधा का आवाहन माना जाता है, इस स्थिति में उन पुरुषों का ही सहारा लिया जाता है जो विद्वान समझे रख लिए रखते हैं । इस स्थिति में उन स्थानीय पुरुषों का निर्धारण नहीं हो पाता जो आवश्यक होते हैं । प्रस्तुत प्रबंध इस बात का अपवाद है । जिन स्थानों की सामग्री का प्रबन्ध में उपयोग हुआ है, उनका उल्लेख भाषा मानचित्र में कर दिया गया है ।

भाषा का अध्ययन कठिन कार्य समझा जाता है किन्तु आदरणीय गुरुजनों की कृपा से प्रत्येक कार्य अपना गन्तव्य प्राप्त कर लेता है । यहां भोजपुरी -भाषी

होने के कारण तथा जनपद की भोजपुरी के सम्बन्ध में पर्याप्त अध्ययन को देख कर स्वयं मेरे मन में एक उत्सुकता एम०ए० कक्षाओं से ही रही है । इसी आत्मविश्वास को लेकर जब मैं डाक्टर उदयनारायण तिवारी जी से मिला तो उन्होंने यही कहा कि – इस सम्बन्ध में जो भी कार्य हुए हैं वे ग्रियर्सन साहब को आधार बना कर । क्षेत्रीय कार्य अभी तक अब भी बाकी है । डा० साहब के प्रोत्साहन एवं आशीष से इस क्षेत्र में बढ़ने की मुझे प्रेरणा मिली है । भाषा विज्ञान की सैद्धान्तिक कठिनाइयों के समाधान के लिए डाक्टर तिवारी ने के.एम. इन्स्टीट्यूट, आगरा तथा विभिन्न समर स्कूलों में जाकर अध्ययन प्राप्त करने की प्रेरणा दी है तथा उसकी व्यवस्था की है । जबलपुर में रहते हुए भी आपने पत्र द्वारा तथा प्रयाग आकर समयानुसार जो बहुमूल्य सुझाव मुझे दिए हैं, उनके लिए मैं उनका चिरऋणी हूं ।

कन्हैयालाल मुंशी, भाषा विज्ञान विद्यापीठ के वरिष्ठ व्याख्याताओं में डा० मल्लाह, डा० उप्रेति, तथा भट्ट जी तथा अन्य कर्मचारियों ने जो दिशा-निर्देश दिए तथा सहायता की, उनका मैं आभारी हूं ।

समर स्कूलों में डा० मलकाने, डा० हरिकान्त वर्मा, डा० मीनाक्षी सुन्दरम् तथा पाणिनीय डा० बाबूराम सक्सेना ने जो सुझाव एवं परामर्श मुझे दिया है उनका मैं कृतज्ञ हूं । डा० सक्सेना के वात्सल्य एवं गंभीर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मैं सदा प्रभावित रहा हूं । डा० शास्त्री ने मेरे प्रबन्ध के अधिकांश अंशों को देखा है मुझे क्षेत्रीय सामग्री प्राप्त करने के लिए सदा उत्साहित करते रहे हैं । मैं उनकी कृपा भूल नहीं सकता ।

प्रबन्ध में मेरे निर्देशक प्रो. यम.बी. जायसवाल ने समान आहुति दी है । उनका वात्सल्यपूर्ण उदार हृदय प्रत्येक अवस्था में मेरा सहायक रहा है । सामग्री संकलन, विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण में उनका वैज्ञानिक सुझाव तथा मेरे कठिन बाधाओं के निराकरण की प्रवृत्ति का ही यह परिणाम है जो प्रबंध पूरा हो सका है ।

श्री शिवनाथ सिंह का मेरे जीवन में क्या स्थान है, कह नहीं सकता। — मेरी शोधयात्रा में ही वे मेरे साथ नहीं रहे अपितु प्रबन्ध के लेखन, में भी उनका हाथ है । मैं इनसे कभी उऋण हो सकूंगा, यह मैं स्वयं नहीं जानता ।

उन अनेक मित्रों को मैं भुला नहीं पाता जो प्रतिदिन मेरे साथ रहे हैं, मुझे सहारा देते रहे हैं। श्री चन्द्रभानी उपाध्याय एम०ए०, श्री डी०पी०सिंह एम०ए०, पं० रघुवंश शुक्ल, श्री डी०एन०गुप्त [illegible] एम०ए०, एम०[illegible] बन्धु सदा मुझे मार्गदर्शन कराते रहे हैं। उन सबका मैं कृतज्ञ हूं। शोध यात्रा में परिचित अपरिचित सभी सहयोगियों का मैं आभारी हूं जिन्होंने मुझे आश्रय दिया है। अन्त में मैं उन कृषकों का बहुत-बहुत आभारी हूं जिनकी कृपा के बिना कुछ भी नहीं हो सकता था।

मेरे आत्मीयों ने मुझे जो आशीष दिए, अपना बहुत कुछ खोकर भी मुझे समय दिया, उन्हें मैं क्या दूं। मेरे पितामह इस कल्पना को साकार देखते देखते मुझे छोड़ गए। शायद अब उनकी आत्मा को कुछ शान्ति मिले। मैं उन सबके प्रेम एवं आशीष को हृदय में संजो कर आगे बढ़ा हूं।

'त्वदीयं वस्तु गुरुदेव। तुभ्यमेव समर्पये।'

मूलशंकर शर्मा

नवम्बर, १९७०

(मूल शंकर शर्मा)

अनुक्रमणिका

परिशिष्ट

शुद्धि-पत्र

।	-	स्वर के ऊपर का चिह्न विलम्बित स्वर का प्रतीक ।
~	-	संपरिवर्तित रूप
[ ]	-	कोष्ठक के भीतर के रूप [illegible]
०	-	स्वर के नीचे अघोषित स्वर का प्रतीक
स	-	स्वर
व	-	व्यंजन
क	-	व्यंजन
आ	-	दीर्घस्वर
ø	-	शून्यता
१,२	-	इत्यादि संख्याएं केन्द्र संख्या की प्रतीक ।

क्षेत्र परिचय

भौगोलिक :-

मिर्जापुर जिला २३°५२' तथा २५°३२' अक्षांशान्तर उत्तर की ओर एवं ८२°७' तथा ८३°३३' पूर्व की ओर देशान्तर के बीच स्थित है। इसके उत्तर में बनारस जिला, पूर्व में बिहार राज्य के शाहाबाद तथा पालामऊ जिले, दक्षिण पश्चिम में मध्यप्रदेश तथा विंध्यप्रदेश राज्य तथा पश्चिम में इलाहाबाद जिला स्थित है। जिले में उत्तर की ओर एक प्राकृतिक सीमा के रूप में गंगा नदी जिले को बनारस जिले से पृथक करती है। जिले का क्षेत्रफल ४३६१ वर्गमील तथा जनसंख्या १०.३ लाख है।

जिले के मध्य से दो बड़ी नदियां तथा २ पर्वतश्रेणियां गुजरती हैं जिनके भौतिक आधारों पर जिला तीन महत्वपूर्ण सीमाओं में बंट जाता है। नदी के आधार पर (१) गंगा का उत्तरी मैदान (२) गंगा और सोन के बीच का क्षेत्र (३) सोन के दक्षिण का क्षेत्र या सोनपारी क्षेत्र। डा० ग्रियर्सन ने अपने भाषा सर्वेक्षण में इसी भेद को भौगोलिक आधार माना है। पर्वत के आधार पर (१) विंध्यपर्वत श्रृंखला के उत्तर का मैदान जिसे गंगा नदी दो भूभागों में बांट देती है। (२) विंध्यपर्वत श्रृंखला तथा कैमूर पर्वत श्रेणी के बीच का मैदान जिसके बीच में पहले वर्ग की तरह कोई भौतिक भेद नहीं दिखाई पड़ता। (३) कैमूर पर्वत श्रृंखला के दक्षिण का भाग जिसे सोन नदी दो भागों में बांट देती है। कैमूर पर्वत के दक्षिण के भाग का ६० प्रतिशत भाग पर्वतश्रृंखला तथा वन से ढका हुआ है जहां ग्रामीण बस्तियां बहुत ही विरल हैं। जिले की भूमि का २९.६ भाग खेती कार्य में प्रयुक्त है तथा ३४.१ प्रतिशत खेतीयोग्य है[2]। इसी भाग पर बस्तियां हैं। जिले का ६.३ प्रतिशत भाग जंगलों से ढका हुआ है। गंगा तथा सोन इन दो बड़ी नदियों के अतिरिक्त जिले में बेलन, कनहर, कर्मनाशा, रेहू, बीजुल इत्यादि नदियां भी हैं, जिनमें कुछ वर्षाऋतु में परस्पर सम्बन्ध में बाधक प्रमाणित हो सकती हैं। कैमूर पर्वत श्रृंखला सोन नदी के दक्षिण की ओर फैली हुई है जिसकी छोटी छोटी

श्रेणियां पूरे भूभाग में छाई हुई हैं। इस कारण सोनपारी क्षेत्र में समतल मैदान का अभाव होने के कारण जनसंख्या यहाँ भी विरल है। जब स्थान जहां तहसील राबर्ट्सगंज और तहसील दुद्धी की सीमा रेखा जुड़ती है, घने जंगल से ढका हुआ है। यह जंगल लगभग २० मील की चौड़ाई में पूर्व की ओर दुद्धी तहसील हेडक्वार्टर तक चला जाता है। इन प्राकृतिक अवरोधों के कारण सांस्कृतिक दृष्टि से जिले का दो भाग हो जाता है। (१) सोन के उत्तर का भाग, जो मिर्जापुर की ओर से संबंधित है। (२) सोन के दक्षिण का भाग जो बिहार राज्य से सम्बन्धित है। शासन की सुविधा की दृष्टि से जिला चार तहसीलों में बंटा हुआ है —

(१) मिर्जापुर (२) चुनार (३) राबर्ट्सगंज और (४) दुद्धी

मिर्जापुर तहसील जिले के पश्चिमी भाग में २४ ३६ तथा २५ १७' उत्तर एवं ८२ ७' एवं ८२ ५०' पूर्व समानान्तर अक्षांश देशान्तर के बीच स्थित है। तहसील के बीच के भूभाग से गंगा नदी बहती है जिसके दोनों ओर के मैदानी भाग में घनी जनसंख्या है। तहसील की दक्षिणी सीमा के पास से विंध्यपर्वत श्रेणी पश्चिम से पूर्व की ओर जाती है। इस तरह प्राकृतिक सीमाएं इस तहसील की दक्षिणी सीमा पर नियंत्रित करती हैं तथा गंगा नदी दो भागों में इसे बांट देती है।

चुनार :– तहसील चुनार जिले के पूर्वी सीमा पर स्थित है जो बनारस जिले से लगा हुआ है। तहसील को गंगा नदी दो भागों में बांट देती है। गंगा का उत्तरी मैदान, गंगा का दक्षिणी भाग जो विंध्यपर्वत श्रेणी तक चला जाता है तथा विंध्यपर्वत श्रेणी का दक्षिण भाग जो जंगल से ढंका है। पहलेदो क्षेत्र बड़े ही उपजाऊ हैं, पर अंतिम भाग पर जंगल और पहाड़ अधिक हैं इसलिए यहां जनसंख्या कम है।

राबर्ट्सगंज :- यह तहसील मिर्जापुर की केन्द्रीय तहसील है। इस तहसील में लगभग २० वर्गमील का उपजाऊ मैदान पूर्व से पश्चिम की ओर चला जाता है। इसके दक्षिण में कैमूर पर्वत श्रृंखला की ऊंची-नीची फैली हुई श्रेणियां हैं जो कहीं-कहीं ११,००६ तथा १२,००६ फीट तक ऊंची हैं[1]। इन पर्वत श्रेणियों के दक्षिण

१- मिर्जापुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ० २६२

में सोन नदी है जो पश्चिम से पूर्व की ओर जाती है। यह तहसील जहां एक ओर उपज की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, दूसरी ओर खनिज पदार्थोंकी पूर्णता तथा वनजातियों के निवास के कारण भी जो विभिन्न सांस्कृतिक वातावरण उपस्थित करती हैं।

दुद्धी :- यह जिले की दक्षिणी तहसील है जिसके पूर्व से बिहार एवं दक्षिण से मध्यप्रदेश राज्य की सीमाएं प्रारम्भ हो जाती हैं। तहसील का ५० प्रतिशत भाग जंगल, पहाड़ियों, नदियों तथा उनकी सखाओं से ढका हुआ है। जैसा कि अब्राहिम ग्रियर्सन ने लिखा था कि यहां के लोग जानवरों की तरह हैं, वैसी स्थिति आज नहीं रह गई है। प्रसिद्ध जलविद्युत केन्द्र रिहण्ड एवं ओबरा तथा हिन्द अल्यूमिनियम कारपोरेशन जैसे औद्योगिक केन्द्र के कारण यहां समसामयिक सभ्यता तथा प्राचीन सभ्यता दोनों के रूप साथ पाए जाते हैं। यहां अधिकांश आदिवासी जातियों का निवास है जिनमें कुछ आज भी बर्बर तथा अधनंगी हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से यह क्षेत्र बहुत ही महत्वपूर्ण है।

यातायात की दृष्टि से मिर्जापुर जिला हावड़ा-बाम्बे, या हावड़ा-दिल्ली मेन रेलवे लाइन पर बसा है। तहसील मिर्जापुर तथा चुनार में यातायात की सुविधा पहले से रही है। तहसील राबर्ट्सगंज एवं दुद्धी में औद्योगिक विकास होने के कारण साधारण सुविधा अवश्य हो गई है।

मिर्जापुर के सभी प्रमुख स्थान जैसे मिर्जापुर, विंध्याचल, लालगंज, अहरौरा, चुनार, राबर्ट्सगंज, चुर्क, गुरमा, ओबरा, डाला, दुद्धी, पिपरी इत्यादि जो जिले में एक ओर से दूसरी ओर फैले हुए हैं, या तो रेल मार्ग या राजमार्ग से जुड़े हुए हैं। ये स्थान या तो व्यापारिक या राजनैतिक केन्द्र हैं या औद्योगिक।

मिर्जापुर जिला सांस्कृतिक दृष्टि से अपना विशेष महत्व रखता है। अहरौरा के पास मिले हुए कुल्हाड़े के सामान, तथा व कैमूर पर्वत शृंखलाओं में बने हुए प्राचीन गुहाचित्र(Cave drawings) जहां इसकी प्राचीनता का परिचय प्रदान करते हैं वहीं दूसरी ओर जिले के विभिन्न भूभागों में फैली हुई विभिन्न जातियां इस परंपरा को जीवित रखे हैं जिनके बारे में विद्वानों ने तरह तरह के अनुमान

किए हैं । इस जिले की कुल जनसंख्या १०.३ लाख है । भारतीय जनगणनाके अनुसार हिन्दू,मुसलमान,ईसाई,सिख तथा जैन धर्म मानने वाली जातियाँ का यहाँ निवास है । इनके अतिरिक्त दो लाख छियासी हजार जनसंख्या परिगणित जातियों की है । जिनमें चमार,मझवार,अहिर,खैरवार,कोल , कोइरी,बेरी,तेली,बनिया,लोहार,कुम्हार,कहार,कलवार,बारी,धोबी,दुसाध, पनिका,भुनियां,गहेरी, केवट,लुनिया,गोंड़,धरिकार,बैगवार,धांगर,अगरिया, पहारी,घसिया,तुरिया,पाल्हिया तथा कोरबा इत्यादि जातियां सम्मिलित हैं। सभी जातियां अपनी सांस्कृतिक विशेषताएं रखती हैं । वितरण की दृष्टि से ये जातियां मिर्जापुर,चुनार तथा राबर्टसगंज में संख्या में अधिक हैं । शेष जातियां मिर्जापुर तहसील में शायद कहीं मिल जांय । चुनार तहसील में कोल, मझिवार तथा धरिकार आदि आदिम जातियों की संख्या विंध्याचल पर्वत-श्रेणी तथा उसके आस पास के जंगलों में पर्याप्त संख्या में प्राप्त होती है । वितरण की दृष्टि से ये जातियां राबर्टसगंज तथा दुद्धी तहसील में सर्वाधिक संख्या में प्राप्त होती हैं ।

जहां इनके आचार,विचार तथा रहन सहन एवं तिथि त्योहारों में दूसरी हिन्दू जातियों से अन्तर दिखाई पड़ता है वहीं सबसे महत्वपूर्ण भेद इनकी भाषा का है । ये जातियां अपनी जातीय भाषा का प्रयोग करती हैं । इन जातियों में कुर्मी,कोइरी,अहिर,कुम्हार,कहार,चमार,दुसाध,बियार,भुनियां,गहेरी इत्यादि जातियां तहसील राबर्टसगंज में ही अधिकांश रूप में मिलती है जो समीपवर्ती अन्य हिन्दू जातियों के सम्पर्क से पूर्णतया प्रभावित हैं और इनके रहन-सहन आचार-विचार,तिथि-त्योहार अन्य हिन्दू जातियों की तरह ही हैं । ये हिन्दू देवताओं पर विश्वास करती हैं ,उनकी पूजा भी करती हैं । इन जातियों में दुसाध जाति राहु-पूजक है,जिसकी पूजा अपने कर्मकाण्ड की व्यवस्था में बड़ी ही अद्भुत है । पूजन के समय यजमान पुरोहित,दर्शक जलते हुए आग की लपटों से निकल जाते हैं अंगारों पर चलते हैं पर जलते नहीं । कोल,तुरिया कोरबा,धांगर,खैरवार इत्यादि आदिम जातियां अपनी सांस्कृतिक विशेषताएं रखती हैं । भाषा की दृष्टि से इन जातियों को हम तीन वर्गों में बांट सकते हैं —

(१) वे आदिम जातियां जो अपनी जातीय भाषा का व्यवहार करती हैं जैसे- धांगर

(२) वे जातियां जो जातीय भाषा के अतिरिक्त समीपवर्ती मुख्य हिन्दू भाषा का व्यवहार करती हैं । जैसे- कोल, बैगवार, तुरिया, अगरिया, पहारी इत्यादि ।

(३) वे जातियां जो पूर्णतः आर्य बोली का प्रयोग करती हैं तथा अपनी मूल भाषा भूल चुकी हैं । जैसे- कोइरी, कुम्हार, कंहार, नाई, बारी, अहिर इत्यादि ।

दुद्धी तहसील में रहने वाली आदिवासी जातियां चूंकि जन सम्पर्क से दूर हैं इसलिए उनमें सांस्कृतिक तत्व सुरक्षित हैं पर भाषीय रूपों में संकरता आ गई है ।

इन जातियों के अतिरिक्त ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य जातियां भी हैं जो अपनी किसी जातीय बोली का व्यवहार नहीं करतीं । वे यहां की सामान्य जनभाषा का ही प्रयोग करती हैं । चूंकि वर्तमान समय में मिर्जापुर जिला एक प्रसिद्ध औद्योगिक स्थान भी हो गया है, इसलिए यहां देश के विभिन्न भूभागों के लोग जैसे मुसलमान, पंजाबी, सिन्धी, गुजराती, महाराष्ट्री, मारवाड़ी तथा दक्षिण भारतीय तमिल भाषी लोग भी आ गए हैं, जो हिन्दी की खड़ी बोली के साथ अपनी मातृभाषा का भी व्यवहार करते हैं । इनकी भाषा का अध्ययन प्रस्तुत वस्तुविषय की सीमा से बाहर है ।

जनपद मिर्ज़ापुर
मापक
एक इंच = बारहमील
वाराणसी
माण्डा
विरोही
मुजहरा
मीरजापुर
पचरावां
चुनार
दुर्जनीपुर
मैसोड़
मिर्ज़ापुर
राबर्ट्सगंज
खटखारिया
मन्दहा
परासी
पड़री
सोन नदी
मरहरी
रामपुर
परासपानी
दुद्धी
वीडर
म्योरपुर
बभनी
भलपहरी
संकेत-चिह्न
तहसील सीमा रेखा
भाषीय सीमा रेखा
भोजपुरी भाषी क्षेत्र
बघेली भाषी क्षेत्र

अध्याय -१

बाही-कूाठ
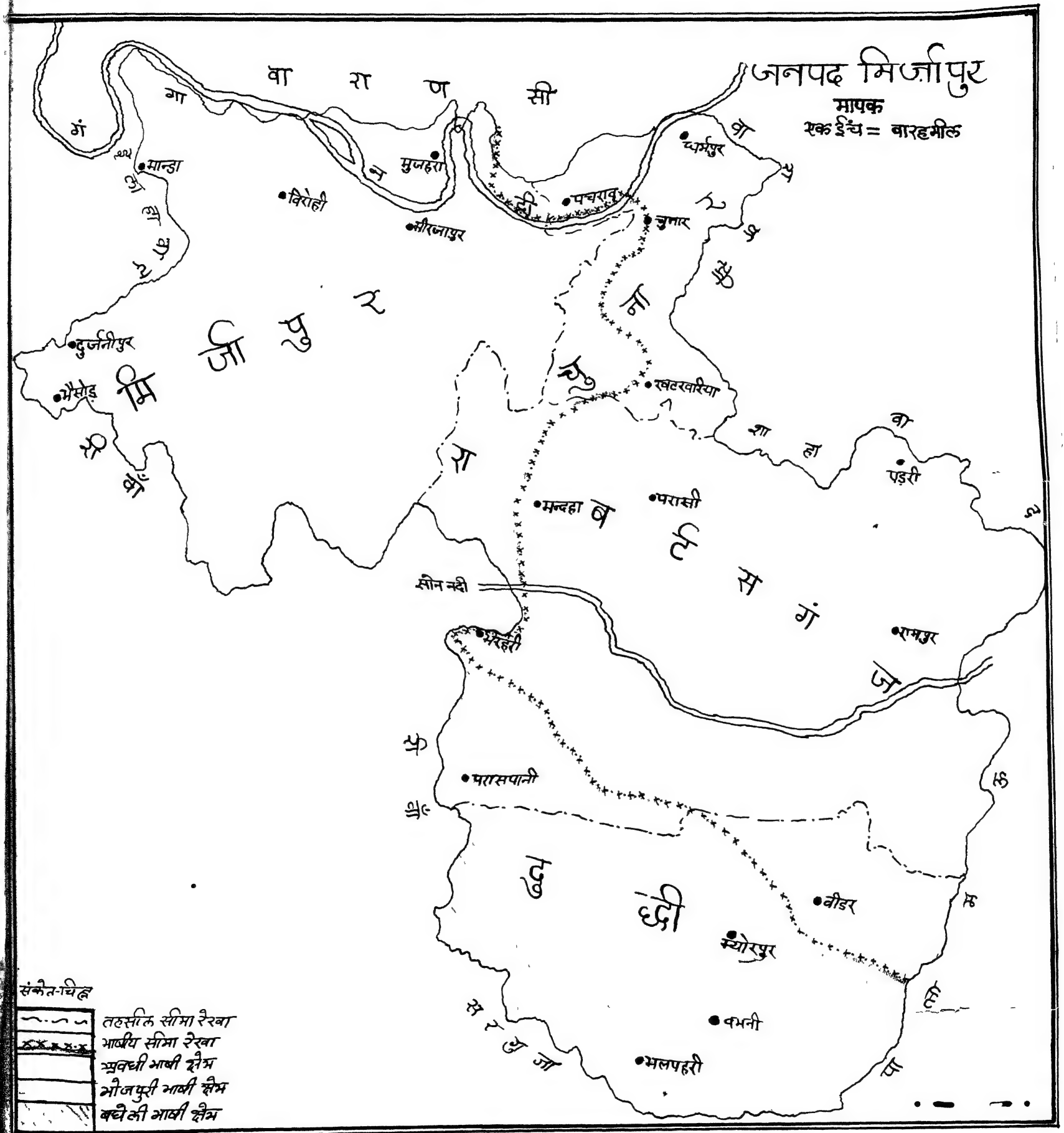
मिर्जापुर जनपद का बोली भूगोल

जिले में अधिक विभिन्नता का अनुमान उसके भौगोलिक विभाजन से ही सहज रूप में स्वीकार किया जा सकता है। इस भिन्नता का कारण भौगोलिक परिवर्तन ही नहीं है अपितु जातीय विभिन्नता भी है जो भाषीय प्रतिमान निर्धारण में आधारभूत तत्व रूप में है। विद्वानों ने मिर्जापुर जिले में इसी कारण भाषा के कई ही भेद स्वीकार किए हैं। मिर्जापुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर में यह स्पष्ट किया गया है कि जनपद की अधिकांश जनसंख्या बिहारी भाषा का प्रयोग करती है, जो जिले के उत्तरी तथा पश्चिमी भाग की भी अभिव्यक्ति का माध्यम है। जनगणना का सन्दर्भ देते हुए इस ग्रन्थ में यह स्पष्ट किया गया है कि यह ६२.८ प्रतिशत जनसंख्या की भाषा है। यह बोली पश्चिमी भोजपुरी का एक रूप है। व्यवहारिक रूप में यह बोली सोन के उत्तरी भाग की सामान्य भाषा है। सोनपार क्षेत्र में आदिवासी जातियों का निवास है। वे अपनी जातीय भाषा का प्रयोग छोड़ कर स्थानीय बघेली भाषा का प्रयोग करती हैं, जो पूर्वी हिन्दी की बोली है। १९६१ की जनगणना में ३५.६ प्रतिशत जनसंख्या पूर्वी हिन्दी भाषी पाई गई है, जब कि ५६ व्यक्ति जिप्सी भाषी पाए गए हैं जो मुण्डा या कोलारियन परिवार की भाषा से सम्बन्ध रखते हैं।[१]

इस विवेचन से हमें तीन निष्कर्ष प्राप्त होते हैं।

(१) जिले की प्रमुख भाषा पश्चिमी भोजपुरी है जो अधिकांश लोगों द्वारा व्यवहृत होती है।

(२) जिले में लगभग एक तिहाई जनसंख्या पूर्वी हिन्दी का प्रयोग करती है जिसमें बघेली भी सम्मिलित है।

(३) जनपद में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो जिप्सी भाषाएं भी बोलते हैं।

भारतीय जनगणना प्रतिवेदन १९६१ इस विषय में कोई सूचना नहीं देता कि जनपद के किस भाग में भाषा का कौन रूप व्यवहृत होता है और न यही

१- मिर्जापुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ.११६।

स्पष्ट करता है कि बोली के कौन-कौन रूप व्यवहृत होते हैं । प्रतिवेदन में हिन्दी ,हिन्दुस्तानी,उर्दू,पंजाबी,सिन्धी,गुजराती,मराठी,मारवाड़ी,तमिल, धांगरी,गोंडी,जयपुरी,नेपाली तथा इंगलिश भाषाओं का संकेत हुआ है तथा उनके वक्ताओं की संख्या दी हुई है[1]। भारतीय जनगणना ने जिन दो महत्व-पूर्ण बोलियों की ओर संकेत किया है वे हैं, धांगरी तथा गोंडी। धांगरी भाषा धांगर जाति की बोली है तथा गोंडी गोंड जाति की ,जो कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं। भोजपुरी और पूर्वी हिन्दी की चारों बोलियां हिन्दी की संख्या में ही सम्मिलित की गई हैं । धांगरी के बोलने वाले लगभग दो हजार हैं जिसमें लगभग चार सौ हिन्दी को भी सहभाषा रूप में बोलते हैं तथा शेष एक भाषा-भाषी ही हैं । गोंडी के बोलने वाले अल्पसंख्यक हैं । इस प्रतिवेदन से स्पष्ट हो जाता है कि जातीय बोली में धांगरी और गोंडी दो ही ऐसी आर्येतर जातीय बोलियां हैं जो अब भी जीवित हैं शेष जातियां या तो स्थानीय भोजपुरी को स्वीकार कर चुकी हैं या तो पूर्वी हिन्दी की बोली को । जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन अपने भाषा सर्वेक्षण में इस जनपद के सम्बन्ध में लिखते हैं- कि `मिर्जापुर जनपद तीन भागों में बंटा हुआ है,गंगा का उत्तरी भाग जो प्रमुख है,सोन के उत्तर तथा गंगा के दक्षिण का मैदान जिसे केन्द्रीय कहा जा सकता है तथा सोन पारी क्षेत्र । मध्य प्रमुख क्षेत्र की भाषा पश्चिमी भोजपुरी है जो ज्यों-ज्यों पश्चिम की ओर बढ़ती है अवधी में विलीन होने लगती है । यही बोली परगना किरियात सीखर के टप्पा कोन में भी बोली जाती है जो बनारस जिले की सीमा पर गंगा के उत्तरी भाग में बसा हुआ है ।

सोनपारी क्षेत्र की भाषा बघेली है । यह क्षेत्र बहुत विलम्ब से आर्यों के अधिकार में आया है । यहां की आदिवासी जातियां अपनी बोली का प्रयोग अब छोड़ चुकी हैं । उनमें से कुछ आज भी कोलारी बोलती हैं, लेकिन यहां रहने वाली जाति कोल, जैसाकि अध्ययन से स्पष्ट है, बघेली भाषा का ही व्यवहार करती हैं[2]।

---

१. भारतीय जनगणना प्रतिवेदन, १९६१ , पृ.८

२. भारत का भाषा सर्वेक्षण, ग्रियर्सन, भाग ५ , पृ. ११६।

अब्राहिम ग्रियर्सन ने पश्चिमी भोजपुरी भाषियों की संख्या ८१०,०० गंगा के उत्तरी भाग के अवधी बोलने वालों की ७५२,०००, सोनपार के बघेली बोलने वालों की ४६,५०० तथा कोरवारी बोलने वालों की ३३ दी है[१]। अपने भाषा सर्वेक्षण में धांगरी भाषा का सन्दर्भ ग्रियर्सन साहब ने नहीं दिया है। इस स्थान पर जिस नई भाषा की ओर वे संकेत करते हैं, वह कोरवारी है। बनारस एवं मिर्जापुर जिले की पश्चिमी भोजपुरी शीर्षक निबन्ध में भी उन्होंने उसी तथ्य की ओर ध्यान दिलाया है[२]।

भोजपुरी की सीमा निर्धारित करते हुए डा० उदयनारायण तिवारी स्पष्ट करते हैं -' सोन नदी को पार कर भोजपुरी अवधी की सीमा का स्पर्श करती है तथा सोन नदी के साथ यह ८२° देशान्तर के साथ चली जाती है । इसके बाद उत्तर की ओर मुड़ कर यह मिर्जापुर के १५ मील पश्चिम की ओर गंगा नदी के मार्ग में मिल जाती है । यहां से यह पुनः पूरब की ओर मुड़ती है, गंगा को मिर्जापुर के आस पास पार करती है तथा अवधी को अपने बांए छोड़ती हुई सीधे उत्तर की ओर ग्रैण्ड ट्रंक रोड पर स्थित तमंचाबाद का स्पर्श करती हुई जौनपुर शहर के कुछ मील पूरब तक पहुंच जाती है[३]।

अवधी तथा भोजपुरी के अतिरिक्त डा० तिवारी ने दो भाषाओं की ओर और संकेत किया है, वे हैं- बघेली एवं बुन्देली ।

डा० बाबूराम सक्सेना ने इस तथ्य की ओर संकेत किया है कि मिर्जापुर शहर के पश्चिम कुछ मील तक शुद्ध अवधी बोली जाती है । आपने सोनपारी क्षेत्र की बघेली की ओर संकेत करते हुए उसे भी ~~पश्चिमी~~ पूर्वी हिन्दी की एक बोली स्वीकार किया है[४]।

---

१. ग्रियर्सन, लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया, भाग ६, पृ. ११६ ।
२. " " " भाग ५ पूर्वीवर्ग भाग २, पृ. २६६, २६५
३. भोजपुरी भाषा और साहित्य, प्रथम खण्ड, १९५४, पृ. ९-१०
४. इवोल्यूशन आफ अवधी, पृ. ५

डा० अमरबहादुर सिंह ने इलाहाबाद-विश्वविद्यालय में स्वीकृत अपने शोध प्रबन्ध " अवधी और भोजपुरी की सीमावर्ती बोलियों का अध्ययन" में अवधी भोजपुरी की सीमा निर्धारित की है । वे लिखते हैं —

" मध्यप्रदेश के सरगुजा जिले में ८३ पूर्वी देशान्तर पर मिर्जापुर की सीमा से ५ मील दक्षिण में सनानाम, पो० पंडरी से उत्तर पश्चिम में रीवां और मिर्जापुर की सीमा के सहारे उत्तर में सोननदी की सीमा का अनुगमन करती हुई यह रेखा ८२ पूर्वी देशान्तर तक पहुंचती है । सरना के पूर्व में पश्चिमी भोजपुरी ,पश्चिम में अवधी और दक्षिण में बघेली तथा छत्तीसगढ़ी बोली जाती है । ८२ पूर्वी देशान्तर से पश्चिम में अवधी और पूर्व में भोजपुरी को छोड़ती हुई यह रेखा मिर्जापुर शहर से १५ मील पश्चिम में गंगा नदी को पार कर ग्रैण्ड ट्रंक रोड के सहारे प्राचीन भदोही राज्य की पूर्वी सीमा का अनुसरण करती हुई जौनपुर शहर से पूर्व की ओर चली जाती है ।"

इन विवेचनों को ध्यान से देखा जाय तो निष्कर्ष निकलता है कि बोलियों के वर्गीकरण, उनके वितरण तथा सीमा के सम्बन्ध में सभी एकमत हैं। इनसे जो निष्कर्ष निकलते हैं, उनसे स्पष्ट होता है कि मिर्जापुर जनपद में तीन प्रमुख बोलियों का व्यवहार किया जाता है ।

(१) पश्चिमी भोजपुरी

(२) अवधी एवं (३) बघेली

इन तीन बोलियों में पहली बिहारी भाषा से तथा अन्तिम दो पूर्वी हिन्दी की बोलियों से सम्बन्धित हैं । इन बोलियों के अतिरिक्त बांगरी,गोंडी, तथा कौरवारी भाषाएं भी बोली जाती हैं । प्रस्तुत अध्ययन में इस बात का प्रयत्न किया गया है कि इन सभी भाषाओं के समस्त भाषीय रूपों का प्रतिनिधित्व हो सके ।

प्रस्तुत अध्ययन में २४ केन्द्रों को सामग्री संकलन हेतु लिया गया है और इस बात का प्रयत्न हुआ है कि प्रचलित सभी भाषाओं का प्रतिनिधित्व हो के सके ।पटासी,पड़री,देवल,सटसरिया,कुसहा,कोटा,देवुरिया,पतरी,बढ़ार, मड़िहान,—सीखड़,ललना,नवरांव,चुनार,जमालपुर,मुक्हरा,मिर्जापुर,कँड़ुरा,हरसीपुर,कमनी, अहरौरा,कछवरी,रामपुर,मैंडाडू तथा माण्डा । विवेचन से स्पष्ट हुआ कि पड़री

तैलंग, लटवरिया, सेनुरिगा, नदमा एक ही व्याकरणिक आकृति प्रस्तुत करते हैं जो पराही की है, इसलिए इन्हें छोड़ दिया गया है और केवल इसी केन्द्र को प्रतिनिधि स्वीकार किया गया है। सामग्री संकलन में वर्ग, जाति, लिंग इत्यादि का भी ध्यान रखा गया है।

प्राप्त सामग्री के निरूपण से इतना स्पष्ट है कि जनपद की प्रमुख भाषा पश्चिमी भोजपुरी है जो दुदी तहसील के पूर्वी भाग में, सम्पूर्ण राबर्टसगंज तहसील, चुनार तहसील तथा मिर्जापुर के कुछ भाग में बोली जाती है। भाषीय मानचित्र में इस सीमा को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है।

जिले में भोजपुरी भाषा कनहर नदी के दोनों किनारों के सहारे सोन नदी की सीमा पर पहुंचती है। सोन के उत्तरी भाग को छूती हुई राबर्टसगंज की पूर्वी सीमा तक पहुंचती है जहां से पुन: पश्चिम की ओर मुड़ कर मन्दहा के पास से उत्तर की ओर बढ़ती है और राजगढ़ के पास से होती हुई पुन: उत्तर की ओर बढ़ जाती है जहां गंगा की सीमा का स्पर्श करती है। उसी के सहारे पश्चिम की ओर बढ़ती हुई बनारस जिले तक पहुंचती है। इस रेखा के उत्तर पश्चिम में अवधी दक्षिण पश्चिम में बघेली तथा दक्षिण में छत्तीसगढ़ी बोली जाती है। विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि मिर्जापुर के १५ मील पश्चिम में भोज-पुरी नहीं बोली जाती। मिर्जापुर नगर में, उसके लगभग १० मील पूर्व तक अवधी ही बोली जाती है। राबर्टसगंज तहसील में मन्दहा के पास से यह रेखा चुनार तहसील की लटवरिया ग्राम तक जाती है और वहां से पश्चिम में तहसील की सीमा के सहारे उत्तर की ओर बढ़ती है। इस रेखा के पास बस्ती बड़ी सामान्य है, दर और जंगल घिरा हुआ है। इसी सीमा के सहारे भोजपुरी की सीमा गंगा नदी का स्पर्श करती है और गंगा के सहारे पश्चिम की ओर बढ़ती है तथा विकास क्षेत्र मझवा के पास से जिले की उत्तरी सीमा में जा मिलती है। भौगोलिक सीमा की तरह भाषीय सीमा, रेखा द्वारा नहीं निश्चित हो सकती। रेखा वह प्रतिनिधि मानकीकरण है जहां दोनों ओर की बोलियों के शब्द समान रूप से व्यवहृत होते हैं किन्तु इस रेखा से ज्यों-ज्यों हम दूर होते जाते हैं भाषीय भिन्नता पूर्णत: स्पष्ट होती जाती है। भोजपुरी और अवधी की सीमा की भी यही स्थिति है।

भोजपुरी एवं अवधी की सीमा निर्धारण के पश्चात् हमें यह स्पष्ट हो जाता है कि भोजपुरी भाषा जहां जिले की सीमा का स्पर्श करती है वहां भोजपुरी का वह रूप है जो पालामऊ एवं शाहाबाद में प्रचलित है और जहां से जिले की सीमा को पार करती है वहां बनारस की भोजपुरी का प्रभाव है। अभिप्राय यह है कि मिर्जापुर की दक्षिणी सीमा पर भोजपुरी के दक्षिणी रूप का तथा शेष स्थानों पर पश्चिमी रूप का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर है।

भोजपुरी की सीमा निर्धारित हो जाने के पश्चात् जिले में अवधी की सीमा निर्धारित करना आवश्यक है। जनपद में अवधी की सीमा विकास क्षेत्र मझवा के पास से गंगानदी को छूती है गंगा के दक्षिणी किनारे के सहारे यह तहसील की पूर्वी सीमा पर पहुंचती है जहां से भोजपुरी सीमा के पश्चिम में दक्षिण की ओर बढ़ जाती है तथा विकास क्षेत्र राजगढ़ में राजगढ़ के पास से दक्षिण पश्चिम की ओर विकास क्षेत्र घोरावल में आ जाती है और मन्दहा के पास से सोन की सीमा का स्पर्श कर लेती है। इस रेखा का समस्त पश्चिमी दक्षिणी भाग अवधी भाषी है।

जनपद में सोन नदी के दक्षिण जिस सोनपारी भाषा की ओर संकेत डा० ग्रियर्सन ने किया है वह बघेली है। यद्यपि बघेली का स्वरूप सोन पार होते ही स्पष्ट होने लगता है किन्तु यहीं से बघेली की सीमा खींचनी कठिन का है। सोन पार में भोजपुरी की सीमा के विषय में पहले ही स्पष्टीकरण किया जा चुका है। दुद्धी तहसील में भोजपुरी की सीमा विकास क्षेत्र दुद्धी में कनहर नदी के सहारे प्रवेश करती है किन्तु भोजपुरी भाषा कनहर के पश्चिम पूरे विकास क्षेत्र में बोली जाती है। यह क्षेत्र भी सोनपारी क्षेत्र ही है। कनहर नदी के सहारे भोजपुरी की सीमा तहसील राबर्ट्सगंज के विकास क्षेत्र चोपन में प्रवेश करती है और कोटा के पास सोन नदी को छू लेती है। इस तरह सोनपारी क्षेत्र में राबर्ट्सगंज तहसील के विकास क्षेत्र चोपन का कनहर का पूर्वी भाग तथा तहसील दुद्धी का विकासक्षेत्र म्योरपुर एवं बभनी शेष रह जाता है। यही सोनपारी क्षेत्र है जिसमें बघेली बोली जाती है। इन तीनों विकास क्षेत्रों में बस्ती बहुत ही विरल है। भूमि का लगभग ६० प्रतिशत भाग

जंगल व पहाड़ों से ढका हुआ है । इस भूभाग में गोंड़, बैगी, मझिवार, खैरवार, पहारी, अगरिया इत्यादि जातियां बसी हैं । ये जातियां भी अपनी भाषा का व्यवहार करती हैं । इनके अतिरिक्त ब्राह्मण, इत्यादि जातियां जो बाद में यहां आकर बस गयी हैं, पश्चिमी भोजपुरी ही बोलती हैं । इस सन्दर्भ में यहां एक उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है—

१. " एक ठे खरहा रहे, ऊं एक ठे बाघ रहे । त दुनउं जोरी मीत। त खरहा कहिस कि भाई महूं जाब बने ।"

—गोंड़ जाति की बोली-युवक नगिना
ग्राम-पनारी, चोपन से १० मील
दक्षिण पश्चिम ।

" एक खरगोश था और एक शेर । दोनों ने मित्रता जोड़ी । तो बाघ ने कहा कि भाई मैं भी वन को जाऊंगा ।"

२. जाति- मुसहर-युवक का नाम- रामदास, ग्रा०- पनारी

" कहाँ जाता रे ।" (कहां जाते हो।)

" बनेम जाता रे ।" (वन को जाता है)

" महूं बोलि लेहह" (मेरी भी प्रतिज्ञा कर लो)

" सुअर सामर बाड़ कहलन्हु डरदी" (सुअर सामर बोई डरदी जाते हैं)

३. खैरवार जाति-युवक-जिरपाल ग्रा०- सेमुरिया, विकासखण्ड चोपन-

" एक चिरई रहे, त खोंतो छावल रहे"

(एक चिड़िया थी, उसका घोंसला छाया हुआ था)

४. ब्राह्मण जाति-युवक-हरिप्रसाद, ग्रा०-सेमुरिया, विकासखण्ड चोपन-

" एक ठे चिरई रहलि, त ओकर खोंथा छावल रहल"

इन उदाहरणों को केवल इस उद्देश्य से प्रस्तुत किया गया है जिससे स्पष्ट हो सके कि सोनपारी क्षेत्र विशेषतया जो सोन की सीमा से लगा है, भाषीय भिन्नता किस रूप में रखता है । पहले उदाहरण के संख्यावाची विशेषण वे ही हैं जो भोजपुरी में प्रचलित हैं परन्तु क्रिया रूप भिन्न है । दूसरे उदाहरण में

`जाता` और `जाति` रूप स्पष्ट रीति से भोजपुरी के हैं किन्तु क्रिया सर्वनाम एवं क्रियाविशेषण स्वतंत्र हैं। तीसरे उदाहरण का `बिरहे` तथा `कावल`दोनों रूप भोजपुरी के हैं शेष बघेली के।

इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि जो जातियां जो सोनपारी क्षेत्र में तहसील राबर्टसगंज में निवास करती हैं वे पूर्णतया या अधिक रूप से भोजपुरी से प्रभावित हैं। इन गावों में रहने वाले ब्राह्मण भोजपुरी भाषा के उसी रूप का व्यवहार करते हैं जो क्षेत्र के उत्तर की भाषा है। किन्तु यहां की आदिवासी जातियां अपने सहज रूप में जिस भाषा को बोलती हैं उसमें भोजपुरी का पुट बिल्कुल नहीं रहता। शब्दों के उच्चारण में आरम्भ में आने वाले ।ह। ध्वनि के स्थान पर ।र्। का उच्चारण यहां की सहज प्रवृत्ति है।

ठीक इसी तरह बघेली भाषा विकास क्षेत्र दुद्धी के पश्चिम में भी भोजपुरी से प्रभावित है किन्तु यह प्रभाव सामान्य सा है। यदि सभी रूप से इसे हम स्पष्ट करना चाहें तो कह सकते हैं कि सोनपारी क्षेत्र में बघेली भाषा, विकास क्षेत्र बभनी ,म्योरपुर के दक्षिण भाग तथा पूर्ण शुद्ध रूप में रेंहू नदी के पश्चिमी भाग में बोली जाती है। विकास खण्ड बभनी के दक्षिणमें छत्तीसगढ़ की सीमा है।

जिले में बघेली की सीमा पश्चिम से भी स्पर्श करती है जहां से म०प्र०राज्य आरम्भ होता है। यह सीमा विंध्यश्रेणी के पहाड़ों तक ही है जो अधिक दूर पूर्व में नहीं जाती।

सामान्य रूप से प्रचलित धारणा है कि बघेली सोन पार क्षेत्र की ही भाषा है इस सम्बन्ध में थोड़ा और कहना है। बघेली भाषा सोन के दक्षिण में ही नहीं, उत्तर में भी बोली जाती है जब कि उसके चारों ओर भोजपुरी है। विकासखण्ड राबर्टस गंज में बैरवार,गोंड़,पहारी,धुरिया तथा विकासखण्डनगवा में ये ही जातियां जिसमें धरिया,चमार एवं अगरिया भी सम्मिलित हैं बघेली ही बोलती हैं। विकासखण्ड नगवा ,ग्राम- बिजारी एवं रामपुर में इस भाषा के प्रत्यक्ष उदाहरण देखे जा सकते हैं जिसके चारों ओर भोजपुरी भाषा है।

सूचक-रामधनी,जाति पहारी,ग्रा० रामपुर विकासखण्ड नगवां,तहसील राबर्टसगंज की बोली से यह बात पूर्ण स्पष्ट की जा सकती है —

" एक अदिमी के चारि लड़का रहलें । जब उ अदिमी मरे लागल त उ आपन चारों बेटवन के बुलाइ के कहलस कि जवन खेत के तुम्हर जोतत, ओह खेत में एक बहुत बड़ा रूपया क खंहा गाड़ल बा"

" एक आदमी को चार लड़के थे । जब वह आदमी मरने लगा तब उसने अपने चारों बेटों को बुला कर कहा कि जिस खेत को तुम जोतते बोते हो, उस खेत में रुपया का एक बहुत बड़ा खजाना है ।"

इस उदाहरण में 'गाड़ल' शब्द ही ऐसा शब्द है जो भोजपुरी का है अन्यथा समस्त रूप बघेली का ही है । जहां ये जातियां निवास करती हैं वह क्षेत्र सोनपार का नहीं है, अपितु सोन के उत्तर लगभग २० मील दूर है ।

इसी ढंग का उदाहरण चुनार तहसील की सक्तेशगढ़ की पहाड़ियों में भी मिल जाता है जहां ये जातियां फैल गई हैं । इसका कारण इतना ही- है कि इन जातियों के वैवाहिक सम्बन्ध सुदूर दक्षिण से उत्तर तक होते हैं और जाने वाली वधू अपने साथ अपनी भाषा भी ले जाती है । दूसरा कारण है कि ये जातियां अपनी जीविका की खोज मे इधर भी फैल गई हैं क्योंकि प्राय: ये भूमिहीन हैं । ये ही जातियां सोनपारी क्षेत्र में बड़े भूभाग की स्वामी हैं।

इन तथ्यों से यह निष्कर्ष स्पष्ट रूप से निकलता है कि बघेली मूल रूप में सोनपार की ही बोली है विशेषतया आदिवासी जातियों की । ये आदि-वासी जातियां सोन के उत्तर जहां भी जाकर बसी हैं वहीं अपने साथ बघेली भाषा ले गई हैं । रीवां की सीमा पर यह बोली सवर्ण, असवर्ण सबकी समान रूप से भावाभिव्यक्ति का माध्यम है ।

इसके पूर्व कि इन बोलियों के वितरण, उनकी भाषीय भिन्नता इत्यादि पर स्वतंत्र रीति से विचार किया जाय इन दो महत्वपूर्ण बोलियों की ओर और ध्यान आकर्षित करना अनिवार्य है जो इस वर्गीकरण में नहीं आतीं । वे बोलियां हैं -बांगरी और कोरवारी । कोरवारी को डा० ग्रियर्सन ने कोलाड़ियन शाखा की भाषा स्वीकार किया है । वस्तुस्थिति यह है कि यह भाषा कोरवा तथा कोल जाति की भाषा रही है पर यह जाति आज स्थानीय बघेली भाषा का प्रयोग करती है और अपनी भाषा भूल चुकी है ।

धांगरी भाषा धांगर जाति के लोगों की भाषा है । धांगर द्रविड़ जाति की एक शाखा है जो प्रान्त के पूर्वी जिलों में गोरखपुर तथा कहीं थोड़ी संख्या में मिर्जापुर के दक्षिणी भाग में पाई जाती है । कुलख तथा औरांव जाति जो छोटा नागपुर में पाई जाती हैं, हिन्दुस्तान के अधिकांश भाग में धांगर नाम से जानी जाती हैं[1]। धांगरी इसी जाति की बोली है । यह जाति अधिकांशतया अपनी मातृभाषा का ही प्रयोग करती है किन्तु कुछ लोग ऐसे भी हैं जो स्थानीय दूसरी बोली को भी काम में ले आते हैं[2]।

डा० उदयनारायण तिवारी धांगरी या 'कुंलख' भाषा को द्रविड़ परिवार की बोली मानते हैं[3]। इस भाषा के कुछ उदाहरण यहां प्रस्तुत किए जाते हैं —

आस अस्मा मोक्खादस ।	वह रोटी खाता है।
आस अस्मा माला मोखना।	उसने रोटी नहीं खाई।
निग्ना एड्पा एकद्या रह ?	तुम्हारा घर कहां है ?
श्रापुस बरादस ।	लड़का आता है।
मांया बरालगी ।	लड़की आती है ।

लड़की के लिए प्रचलित 'मांया' शब्द में भोजपुरी शब्द 'मइयां' का संकेत अवश्य मिलता है । किन्तु इसे निश्चितता के साथ नहीं कहा जा सकता कि यह भोजपुरी प्रभाव है । पुरुषवाची सर्वनामों में दो सर्वनाम विशेष उल्लेखनीय हैं—

आस = वह, जिसका प्रयोग केवल पुरुषों के लिए होता है।

आद् = वह, जिसका प्रयोग स्त्री तथा जानवरों के लिए होता है।

सर्वनामों की जो स्थिति यहां प्राप्त हुई है, वह निम्न है—

पुरुषवाची सर्वनाम-		ए.व.		बहुवचन	
	उत्तमपुरुष	ऐन	हम	ऐम	हम
	मध्यमपुरुष	नीन	तू	नीम	तुम
	अन्यपुरुष	आस	वह	आसम	वे

सर्वाधिक उल्लेखनीय भाषीय स्थिति पूर्णांक बोधक, तथा अपूर्णांक बोधक संख्यावाची विशेषणों की है । पूर्णांक बोधक विशेषणों में केवल ४ तक संख्याएं

प्राप्त हुई हैं —

औण्टा	-	१
एनटांड०	-	२
मुनटांड०	-	३
नाल गोटा	-	४
पंच	-	५
सोइए	-	६
औनकोवा	-	$\frac{1}{2}$
बौनटूका	-	$\frac{3}{4}$

बौनकोवा एवं औनटूका में औन १ का अर्थबोधक है। कोवा उसके अर्धांश तथा टूका चतुर्थांश का परिचायक है। इस भाषा के विषय में यदि अधिक कुछ न स्पष्ट किया जाय तो इतने से ही प्रगट है कि जनपद में बोली जाने वाली यह बोली न तो पूर्वी हिन्दी की ही कोई शाखा है और न पश्चिमी की ही। यह भाषा द्रविड़ परिवार की भाषा है जिसे धांगर जाति भोजपुरी एवं बघेली वातावरण के बीच भी जीवित रखे है।

इसके पूर्व कि कोई एक महत्वपूर्ण भाषा किसी क्षेत्र विशेष में अपना गौरवपूर्ण स्थान बना लेती है वे स्थानीय बोलियां जो कभी समान सामाजिक स्तर की रखती हैं जिसे सभी व्यक्ति बिना हिचकिचाहट के काम में ले आते हैं, अपना स्थान छोड़ने लगती है। यदि राजनैतिक या आर्थिक कारणों से किसी क्षेत्र विशेष की भाषा दूसरे क्षेत्र में अपना स्थान बना लेती है तो दूसरी भाषा बोलने वालों के मन में हीन ग्रन्थि बन जाती है जिससे उनमें अपनी मातृभाषा की ओर से अरुचि होने लगती है। इस परिस्थिति के आ जाने पर दो प्रवृत्तियां अधिक मुखरित हो जाती हैं —

टिप्पणी- (२) इस संदर्भ में मैं हरिवंश धांगर, ग्रा०विकास, सम्बीह-राबर्ट्सगंज का बहुत बहुत कृतज्ञ हूं जिनकी सहायता के बिना मुझे इस जाति की सामग्री मिलनी असंभव थी।

(३)

(क) शब्दों के उधार ग्रहण करने की प्रवृत्ति

(ख) क्रमशः मूल भाषा को भी भूल जाने की प्रवृत्ति

उधार ग्रहण करने की प्राकृतिक प्रवृत्ति न केवल एक बोली से दूसरे में, या एक बोली से मानक भाषा में ही पाई जाती है अपितु यह प्रवृत्ति उन दो बोलियों में भी होती है जो परस्पर सोकाम्य हो गई रहती हैं। भाषाओं में उधार ग्रहण की प्रवृत्ति सांस्कृतिक विकास पर निर्भर करती है।

मिर्जापुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर से स्पष्ट होता है कि जनपद में खैरवार जाति बड़ी ही महत्वपूर्ण तथा शासक जाति रही है। उसकी अपनी सांस्कृतिक निष्ठा तथा भावाभिव्यक्ति की माध्यम भाषा भी रही है, किन्तु जब से आर्य जाति द्वारा इसका पद्दलन हुआ है, यह तितर-बितर हो गई है। आज यद्यपि इस जाति में कुछ आचार-विचार पुराने शेष हैं किन्तु इनकी भाषा पूर्णतया लुप्त हो गई है और इसका स्थान भोजपुरी या बघेली ने ले लिया है।

धांगरी भाषा की भी यही स्थिति है। प्रत्यक्ष पूछने से जैसा उत्तर धांगरों द्वारा प्राप्त हुआ है, उससे यही विदित होता है कि यह जाति जीविका की खोज में यहां आई और जंगलों में बस गई। इसमें जिसका सम्पर्क पास के वातावरण से नहीं रहा, उसकी भाषा आज भी जीवित है और जिसने स्थानीय जमींदारों की मजदूरी कर ली, वह या तो दुभाषिया हो गई या अपनी भाषा भूल गई। धांगरी में भी शब्द उधार ग्रहण करने की प्रवृत्ति स्पष्ट है।

स्त्री के अर्थ में। कनियां। बूढ़े व्यक्ति के अर्थ में।बुढ़रा।,वस्त्रों में।मरखा। जो सम्भवतः।मरखा।(वह वस्त्र जो कुरते की तरह पहना जाता है)का ही रूप है।बांढ़ी। जो।बण्डी। का अपभ्रंश है,इस बात की ओर संकेत करता है कि इस भाषा ने न केवल भोजपुरी शब्द ही ग्रहण किए हैं अपितु उनका अर्थ भी लिया है।

इसके अतिरिक्त परिमाणवाची विशेषणों में इनके यहां पाव,आधा सेर, तिहाई इत्यादि के लिए शब्द नहीं परन्तु।पसेड़ी। =(५ सेर) शब्द प्रचलित है जो स्पष्ट रीति से। पसेरी। की अनुकृति है।।कूड़ी। परिमाणवाची विशेषण यहां अवश्य मिलता है जो एक निश्चित आकार के बर्तन भर देने से मात्राबोधक बनता है। और कोई दूसरा रूप अप्राप्य है।

इस तरह जहां एक ओर इस जाति में शब्द ग्रहण करने की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है, अपनी भाषा भूलने की भी स्थिति इनकी सुस्पष्ट है। ये न केवल भोजपुरी भाषा से प्रभावित हैं अपितु इन्होंने इसे प्रभावित भी किया है। समीपवर्ती भोजपुरी भाषा में ।कांड़ा। शब्द प्रचलित है जिसका अर्थ है भैंस का सद्यःजात बच्चा। यह शब्द धांगरी भाषा का अपना है, इस जाति में बहुलता से प्रयुक्त है, जब कि भोजपुरी भाषी क्षेत्र में अन्यत्र कहीं भी यह रूप उपलब्ध नहीं।

धांगर की ही तरह दूसरी आदिवासी जातियां जो जनपद में निवास करती हैं कभी अपनी जातीय भाषा का प्रयोग करती थीं किन्तु आज उसे भूल चुकी हैं और उनके स्थान में स्थानीय बोलियों का प्रयोग करने लगी हैं। इन परिवर्तनों के बावजूद कहीं इनकी जातीय प्रवृत्ति मुखर हो उठती है। खैरवार शब्द के आदि में आने वाले ।ल। के स्थान पर ।न। का प्रयोग करते हैं। उनकी यह प्रवृत्ति आज भी प्रत्यक्ष है।

।लमहा।	।नमहा।
।लोहरी।	।नोहरी।

अनुनासिकता की यह प्रवृत्ति स्वरों के उच्चारण में भी दिखाई पड़ती है। यह जाति निरनुनासिक स्वरों का उच्चारण प्रायः नहीं करती।

धांगरी एवं खैरवारी के अतिरिक्त एक और जातीय भाषा की ओर संकेत किया गया है। यह जातीय भाषा गोंड़ी है जो गोंड़ जाति की बोली है। जनपद में गोंड़ जाति अपनी कोई स्वतंत्र भाषा नहीं रखती। वितरण की दृष्टि से यह जाति अल्पसंख्यक रूप में राबर्ट्सगंज तथा बहुसंख्यक रूप में दुद्धी तहसील में निवास करती है। राबर्ट्सगंज में यह भोजपुरी तथा दुद्धी में बघेली बोलती है। इनकी भाषा में कुछ शब्द ऐसे अवश्य हैं जो बघेली में अन्यत्र नहीं बोले जाते।

हेका = बार (आवृत्तिवाची विशेषण) खोखोली = झोपड़ी

बग्गे। = स्त्री वाची सम्बोधन,

रंथी = अर्थी- वह चारपाई जिस पर व्यक्ति मर जाता है। दाह के लिए
यह जाति उसी चारपाई का प्रयोग करती है, दूसरी लकड़ी की नहीं।

हौका लरिका = लड़का, मबूर = मजूरी

हौकी लरिका = लड़की , फलया मबूर = मजूर

कैरिका = गड़ेरिया , टेंकुना = खटमल, बिहरा = गिलहरी, पंच

पंचवा = नेवला, मच्चा = फुफका, माटो = बड़ी बहन का पति,

पकवी = ककई, टीवा = रुपया, लोंपा = स्त्री की चोटी इत्यादि

शब्द ऐसे हैं जिनका व्यवहार अन्यत्र नहीं होता । लोंपा-(स्त्री केशपाश) शब्द का प्रयोग अपनी में सैरवार तथा तुरिया जाति भी करती है किन्तु जनपद में किसी भी सवर्ण जाति में अथवा अवधी, बघेली या भोजपुरी के भाषीय क्षेत्र में यह शब्द प्रचलित नहीं है । गोड़ जाति की भाषा में भिन्नता केवल शब्दावली की ही है । व्याकरणिक शरणियों में किसी तरह का अन्तर नहीं प्राप्त होता।

एक अर्थ के लिए विभिन्न शब्दों के प्रयोग तथा उनके असमान वितरण के सम्बन्ध में यदि हम सोचें तो हमें स्पष्ट हो जाता है पहाड़ी, तथा गोड़ जाति इस स्थिति में नहीं आ पाती । जनपद में कंघी के अर्थबोध के लिए पांच शब्द प्रचलित हैं -।चिरनी। ।बांगुर। ।पाप। ।ककही। तथा ।ककई। जो क्रमश: १०,२३, ११,३ तथा १ केन्द्रों में बोले जाते हैं । अंतिम दो शब्द निश्चित रूप से कंघी के अपभ्रंश हैं किन्तु शेष तीन के सम्बन्ध में अधिक नहीं कहा जा सकता । ।चिरनी। शब्द से कार्यव्यापार की प्रक्रिया अवश्य स्पष्ट होती है । इसी तरह खटमल के लिए प्रचलित तीन शब्द ।ढेकुना।खटगोड़ा। तथा ।खटकिरवा। में ।ढेकुना। सैरवार जाति का अपना शब्द है जिसका प्रयोग दूसरे नहीं करते । ग्रियर्सन साहब ने जिस कोरवारी का उल्लेख किया है उसमें अंत में आने वाली अल्पप्राण ध्वनियों के स्थान पर महाप्राण करने की प्रवृत्ति देखी जा सकती है । यथा- नाक नाख

जैसा पहले भी उल्लेख किया जा चुका है कि मिर्जापुर जनपद में प्रचलित भोजपुरी भाषा का एक ही रूप प्राप्त नहीं होता । जिले की पूर्वी दक्षिणी सीमा पर जहां भोजपुरी जनपद की सीमा में प्रवेश करती है वहां स्पष्ट ही पालामऊ जिले की भाषा अर्थात् दक्षिणी भोजपुरी का स्पष्ट प्रभाव है । आगे बढ़ कर यह प्रभाव लुप्त हो जाता है तथा पश्चिमी भोजपुरी के ही उदाहरण प्राप्त होते हैं। तत्कीर चुनार में इन रूपों में पुन: परिवर्तन होने लगते हैं जो बनारस की सीमा तक पहुंच कर पूर्णतया भिन्न हो जाते हैं । यदि वितरण

की दृष्टि से इस पर विचार करें तो निम्न तथ्य सामने आते हैं ।

संज्ञा रूपों में केन्द्रीय बोली में (बोली का वह रूप जो सोन के उत्तर से चुनार की सीमा तक बोला जाता है) अधिकांश संज्ञा प्रातिपदिक ह्रस्व इकारान्त हैं । यथा-

आँखि
नाकि
पाँखि
सींकि
रासि

किन्तु अन्यत्र ये रूप इकारान्त न होकर व्यंजनान्त रूप में पाए जाते हैं । केन्द्र सीउर,तम्कौल दुद्धी में केन्द्रीय बोली के उकारान्त संज्ञापद अर्द्धस्वर में समाप्त होते हैं ।

केन्द्रीय बोली	केन्द्र सं.२
गांउ	गांव
नाउं	नांव
गाइ	गाय

चुनार तथा बनारस की सीमा पर बोली जाने वाली भोजपुरी में वे ही रूप व्यवहृत होते हैं जो केन्द्र दो में हैं । इसके अतिरिक्त कन्यापुतरी (कठपुतली) कनियां (नवबधू) ढौकी(लड़की) पांड़ा (१ वर्ष तक भैंस का बच्चा) बेंगवा (कूट (चना)पेकची(ककई)इत्यादि कुछ संज्ञा पद ऐसे हैं जो केवल भोजपुरी के उसी रूप में प्रयोग में आते हैं जो पालामऊ तथा शाहाबाद की सीमा पर सोननदी के दक्षिण में बोला जाता है और इन रूपों के लिए अन्यत्र क्रमश: कठपुतरी, दुलही,लड़की, पड़वा,तथा ककई आदि रूप प्रचलित हैं ।

सर्वनाम :- मूल रूप में सर्वनाम का वितरण प्राय: समान है पर प्रत्यय विधान में परिवर्तन स्पष्ट देखा जा सकता है । केन्द्रीय बोली में उत्तम पुरुष सर्वनाम मूल रूप के बहुवचन निर्माण में या तो मूल रूप में - मन जोड़ देते हैं यथा- हम हमहनं । या केवल -न जोड़ते हैं और इस स्थिति में मूल रूप के अंतिम व्यंजन का द्वित्व हो जाता है- हम्मन ।

केन्द्र सं० २ में भी यही प्रवृत्ति मिलती है किन्तु केन्द्र ४,५,६ में केवल हमहने रूप प्रचलित है और कोई नहीं । इसी तरह म.पु.अ-का बहुवचन तोन्हन, अन्यपुरुष का ब०वचन ओन्हन के स्थान पर क्रमश: तुनह्ने, तथा उनह्ने रूप ही चुनार तहसील की, तथा बनारस की सीमा में बोली जाने वाली भोजपुरी में प्राप्त है ।

आदरार्थ सर्वनामों में भोजपुरी में केवल दो शब्द प्रचलित हैं । रउवां, तथा आप रउवां का प्रयोग केवल सोन के दक्षिण पूर्व में बोली जाने वाली भोजपुरी में तथा आप का कुछ शिक्षित लोगों द्वारा केन्द्रीय भोजपुरी में होता है । चुनार एवं बनारस की सीमा पर आदरार्थ सर्वनाम का रूप मिलता ही नहीं ।जहां केन्द्र सं० दो में रउरा या रउवां के बहुवचन निर्माण में बहुवचन बोधक प्रत्यय ऊ न जोड़ कर काम चल जाता है वहीं केन्द्रीय बोली में यह व्यवस्था सम्भव नहीं है । इस तरह सर्वनाम रूप तालिका में तीन श्रेणियां स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं जिनको सुविधा की दृष्टि से तीन क्षेत्रों में बांटा जा सकता है । (क) केन्द्रीय क्षेत्र- जो सोन के दक्षिणी किनारे से प्रारम्भ होकर लटलरिया केन्द्र तक जाता है।

(ख) उपरी क्षेत्र जो लटलरिया से चुनार तहसील की राजनैतिक सीमा के साथ पूर्व की ओर बढ़ता है तथा पश्चिम की ओर अपनी सीमा का स्पर्श सक्तेशगढ़ की पहाड़ियों में पाता है । इस रेखा के उत्तर का समस्त क्षेत्र भोजपुरी की उस बोली रूप का व्यवहार करता है जो बनारसी भोजपुरी की प्रतिनिधि है ।

(ग) दक्षिणी रूप सोननदी के दक्षिण विकास क्षेत्र दुद्धी,कनहर नदी के दोनों किनारे से पूर्व की ओर बढ़ता है । स्वरूप की दृष्टि से यह भोजपुरी पालामऊ तथा शाहाबाद की भोजपुरी का प्रतिनिधित्व करती है । इस सन्दर्भ में यह स्मरणीय है कि शाहाबाद राबर्ट्सगंज तहसील के ठीक पूर्व में है,अस्तु शाहाबाद की भोजपुरी का प्रभाव केन्द्रीय भोजपुरी में है,दक्षिण में नहीं, जैसा कि संज्ञा रूपों के विवेचन से स्पष्ट है ।

इन तीनों क्षेत्रों में सर्वनामों में प्राय: समानता दिखाई पड़ती है किन्तु विशेषण रूपतालिका में भिन्नता पुन: स्पष्ट होने लगती है । सबसे अधिक भिन्नता क्रिया रूपों में है । जहां तक सहायक क्रियाओं के वितरण का प्रश्न है

सहायक क्रिया ।है। के इन तीनों क्षेत्रों में एक से रूप नहीं प्राप्त होते ।

वर्तमान निश्चयार्थ सहायक क्रिया अन्यपुरुष,एकवचन का जो रूप केन्द्रीय बोली में प्राप्त होता है उससे उत्तरी तथा दक्षिणी रूप नितान्त भिन्न है ।

ऊ है	(वह है)	केन्द्रीय रूप
ऊ ग्वाइ	(वह है	
ऊ होवें	(वह है)	केन्द्र सं० २ दक्षिणी रूप
ऊ बहुद		केन्द्र सं० ५ उत्तरी रूप

वितरण की दृष्टि से होवें रूप की प्राप्ति दक्षिणी क्षेत्र के अतिरिक्त अन्यत्र असम्भव है । इसी दृष्टि से यदि `बाय` क्रिया रूप के वितरण को हम देखते हैं तो इसमें भी पारस्पर भिन्नता पर्याप्त मात्रा में दिखाई पड़ती है ।

केन्द्रीय रूप वर्तमानकाल - अन्यपुरुष एकवचन

ऊ	बाइ	(वह है)
म.पु.ए.व. तु बाय		(तुम हो)
उ.पु.ए.व. हम बाईं		

दक्षिणी रूप	अ.पु.ए.व. ऊ बहुम
	म. पु.,ए.व.- तु बहु
	उ.पु.ए. व.- हम बट्ठी, हम लिय
उत्तरी रूप	अ.पु.ए.व. - ऊ हव
	म.पु.ए.व.- तु हउव
	उ.पु. ए.व.- हम हईं .

मूलनिश्चयार्थ स्त्रीलिंग रूप को भी यदि सामने रखा जाय तो यह अन्तर उसी रूप में सामने दिखाई पड़ता है ।

केन्द्रीय बोली	ऊ रहलि	वह थी
दक्षिणी रूप केन्द्र सं०२	ऊ रहलिन	
उत्तरी रूप केन्द्र सं० ५	ऊ रहलि	
केन्द्र सं० ६	ऊ रहल	

इन रूपों को यहां प्रस्तुत करने का इतना ही अभिप्राय है कि जनपद में बोली जाने वाली भोजपुरी का एक ही रूप प्राप्त नहीं होता । इस सन्दर्भ में सबसे अधिक विभाजक उदाहरण भूतनिश्चयार्थ क्रिया रूप का है ।

केन्द्रीय बोली	ऊ गयल	वह गया
दक्षिणी बोली	ऊ गइल	
उत्तरी बोली	ऊ गइल	

यदि इसी रूप को आदर्शमान कर हम कुछ तथ्य निकालने का प्रयत्न करें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि जनपद में बोली जाने वाली केन्द्रीय बोली, अपने उत्तरी तथा दक्षिणी दोनों रूपों से भिन्नता रखती है किन्तु जैसा कि ऊपर ही स्पष्ट किया गया है, उत्तरी एवं दक्षिणी रूपों में क्रिया रूपों के अतिरिक्त शेष रचनाओं में समानता दिखाई पड़ती है । इन तीन स्थितियों के सम्बन्ध में इतना तो कहा ही जा सकता है कि मिर्जापुर जनपद भोजपुरी भाषा का सबसे पश्चिमी प्रतिनिधि है । इसके साथ ही इसके उत्तर बनारस में तथा दक्षिण पालामऊ में भोजपुरी के एक जैसे रूप प्राप्त नहीं होते । इसी कारण स्थानीय सम्पर्क के कारण दोनों जनपदों के प्रत्यक्ष प्रभाव उत्तरी एवं दक्षिणी रूपों में प्राप्त हो सकते हैं । दूसरा कारण यह भी है कि केन्द्रीय क्षेत्र अपने दोनों ओर दो भौगोलिक सीमाओं से अवरुद्ध है । केन्द्रीय क्षेत्र के उत्तर में शक्तेशगढ़ की पहाड़ियां और घना वन है तथा दक्षिण में सोन नदी, उसके पास फैली हुई पहाड़ियों और घने वन से इसके प्रभाव की स्थिति है । इस कारण केन्द्रीय बोली निश्चित रूप से अन्तःसम्बन्ध से दूर रही है और परस्पर भिन्नता आज भी विद्यमान दिखाई पड़ती है ।

मिर्जापुर जनपद में बोली जाने वाली अवधी भाषा की भी यही स्थिति है । जिसमें भिन्नताएं स्पष्ट रीति से दिखाई पड़ सकती हैं । अवधी भाषा पूर्व में भोजपुरी तथा दक्षिण में बघेली से घिरी हुई है । ये दोनों भाषाएं संक्रान्ति बिन्दु पर होने

के कारण काफी लम्बे क्षेत्र को अपनी परिधि में लपेट लेती हैं जहाँ भोजपुरी अवधी, तथा बघेली अवधी रूप समान रीति से व्यवहृत होते हैं । इस क्षेत्र में संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण रूप तालिका में पूर्ण समानता दिखाई पड़ती है किन्तु क्रिया रूप भिन्न होने लगते हैं । जनपद की दक्षिणी सीमा में बोली जाने वाली बघेली जनपद में लगभग ८ मील उपर की ओर आ जाती है जहाँ विंध्यपर्वत श्रेणियाँ फैली हुई हैं । एक सीमान्त उदाहरण द्वारा यह बात स्पष्ट हो सकती है ।

" एक मनइ के चारि लड़िका रहे । जब ऊ अदिमी मरै लाग तब ऊ अपने चारिउ लड़िकन के बलाइ कह कहिस ।"

इस उदाहरण से यह बात पूर्ण स्पष्ट हो जाती है कि बघेली का प्रभाव जनपद में काफी दूर तक दिखाई पड़ता है । इस तरह अवधी का शुद्ध रूप विंध्यपर्वत श्रेणियों के उत्तर अर्थात् दरामलगंज से प्रारम्भ होता है । यही स्थिति भोजपुरी सीमा में भी दिखाई पड़ती है ।

डा० बाबूराम सक्सेना ने स्वीकार किया है मिर्जापुर शहर से पश्चिम शुद्ध अवधी बोली जाती है । मिर्जापुर जनपद में अवधी पश्चिम उत्तर में इलाहाबाद की सीमा पर गंगा के उत्तरी मैदान में तथा मिर्जापुर शहर के पश्चिम से दक्षिण की ओर बेलन नदी के उपरी भाग में अपने विशुद्ध स्थिति में बोली जाती है । बेलन के दक्षिण का क्षेत्र जो इलाहाबाद की सीमा पर है अवधी के शुद्ध रूप का प्रयोग करता है किन्तु दरामलगंज से पूर्व में यह शुद्धता समाप्त होने लगती है । इस तरह जनपद में अवधी के भी कई रूप हो जाते हैं ।

(क) अवधी का वह रूप जो मिर्जापुर के पश्चिम गंगा के उत्तर में प्रचलित है।

(ख) अवधी का वह रूप जो गंगा के दक्षिण विंध्याचल के पास से होता हुआ दक्षिण बेलन नदी की सीमा तक चला जाता है ।

(ग) वह रूप जो विंध्याचल से पूर्व भोजपुरी सीमा तक व्यवहृत है ।

(घ) वह रूप जो बेलन के दक्षिण तथा पूर्व में बोला जाता है ।

इस सम्बन्ध में मूल निश्चयार्थ रूप से यह भेद स्पष्ट करने का प्रयत्न किया जा सकता है ।

अन्यपुरुष ए.व.	वह भवा	ऊ भवा	केन्द्र सं०७	गंगा का उत्तरीभाग
,, ब.व.	वो भयेन			

अन्यपुरुष	ए.व.	ऊ गएन	मिरजापुर - गंगा का दक्षिणी भाग
	ब.व.	ऊ सबै गएन	
	ए.व.	ऊ गा	केन्द्र सं० १५
		ऊ गै	केन्द्र सं० ६

इन उदाहरणों से यह भिन्नता स्पष्ट हो जाती है किन्तु भिन्नता कुछ व्याकरणिक रूपों में ही प्राप्त है। थोड़ा अन्तार्ध्वनि उच्चारण में भी प्राप्त होता है किन्तु इसका बोध सामान्य रीति से ग्राह्य नहीं हो पाता।

संज्ञा रूप तालिका पूरे अवधी क्षेत्र में समान है। अधिकांश संज्ञा प्रातिपदिक व्यंजनान्त है। स्वरान्त प्रातिपदिक इकारान्त, आकारान्त एवं एकारान्त हैं। सर्वनाम तालिका समान है किन्तु बहुवचन, तथा तिर्यक रूप निर्माण में थोड़ा अन्तर दिखाई पड़ता है।

केन्द्र सं० ७ अर्थात् गंगा के उत्तरी क्षेत्र में 'पचे' जोड़ कर बहुवचन बनाया जाता है— ऊ पचे (वे लोग)

तू पचे (तुम लोग)

तू पचे जात अहर् दक्षिणी रूप में क्रियारूप में व्यंजन विपर्यय हो जाता है और।ह्य। रूप बनता है।

मिर्जापुर शहर में।पचे। तथा।सबै। दोनों रूप प्रचलित हैं जिनके द्वारा बहुवचन रूपों का निर्माण किया जाता है। इसके अतिरिक्त ओनहन, हमन आदि रूप भी विरलता से दिखाई पड़ता है। मिर्जापुर शहर के पूर्व भैंगुरा तक यह प्रवृत्ति काम करती है, किन्तु इसके पूर्व में ओनहन्, हमन, तोहन, आदि रूप बहुलता से दिखाई पड़ते हैं। गंगा के दक्षिणी भाग में विंध्यपर्वत की तराई में पचे रूप ही प्रचलित है किन्तु दुरवनीपुर, दरामगंज के पास पुन: हमन, तोहन बहुवचन रूप दिखाई पड़ते हैं। राबर्टसगंज तहसील के चौराबल ब्लाक में जहां से अवधी भाषा की सीमा का प्रारम्भ होता है सर्वनामों में बहुवचनबोधक प्रत्यय भोजपुरी भाषा की ही तरह प्रयुक्त होते हैं।

संख्यावाची विशेषणों में गंगा के इधर चाव, तिहाई, चौथाई रूप प्रचलित हैं किन्तु विंध्याचल के ऊपर इलाहाबाद तथा मऊ की सीमा तक पाउ, तिहाउ, चउथ रूप बनता है।।बारह। एवं।बारह। के स्थान पर।बहुवह। एवं।बहुवह।

रूप अवधी भाषी क्षेत्र में सर्वत्र समान रूप से व्यवहृत है ।

इस विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि हम मिर्जापुर जनपद में बोली जाने वाली अवधी को ५ क्षेत्रों में विभक्त कर सकते हैं --

(१) इलाहाबाद के पश्चिम गंगा नदी के उत्तर का भाग जो भोजपुरी सीमा तक जाता है ।

(२) गंगा के दक्षिण का भाग जो मिर्जापुर शहर के पश्चिम में दक्षिण बेलन नदी तक फैला है ।

(३) मिर्जापुर शहर का पूर्वी भाग जो पूर्व में भोजपुरी सीमा से लगा है।

(४) बेलन नदी के दक्षिण का भाग जो बघेली सीमा का स्पर्श करता है ।

(५) ड्रामण्ड गंज के पूर्व का भाग जो राबर्ट्सगंज तहसील के घोरावल ब्लाक तक पहुंच जाता है ।

इन क्षेत्रों में प्रथम दो में अवधी का शुद्ध रूप तथा शेष में भोजपुरी मिश्रित रूप प्रचलित है ।

<u>बघेली</u> :- बघेली बघेलखण्ड की भाषा है जो मिर्जापुर जनपद में मध्यप्रदेश राज्य की सीमा पर ही शुद्ध रूप से व्यवहृत होती है । जनपद के पश्चिम दक्षिण में मंडोह पुलिस चौकी से पश्चिम तथा पूर्व में फैली हुई पहाड़ियों में तथा दक्षिण सिंगरौली में बघेली अपने शुद्ध रूप में प्राप्त होती है । इस भाषा में कुछ शब्द बहुलता से प्रचलित हैं । यदि किसी व्यक्ति से कोई बात कही जाय तो वह तुरत ।मरबी। अथवा ।हुहुम। शब्द बोलता है । यह प्रवृत्ति अवधी भोजपुरी भाषा में अप्राप्त है । इसी तरह ।लोहगा। रूप का जन साधारण के मुंह से सुना जा सकता है ।

` भाई ! तुम यह काम कर लेना ।` यदि किसी श्रोता से कहा जाय तो वह तुरत ।लोहगा। रूप बोलता है । अन्यत्र यह प्रवृत्ति नहीं । इसी तरह । क जानी। (क्या जाने) या ।लिलिर।।अपुना लिलिर।इसी तरह निजवाची सर्वनाम में ।अपुना। रूप बघेली की अपनी विशेषता है ।

बघेली की यह प्रवृत्ति अवधी क्षेत्र में आते ही समाप्त हो जाती है। इसी तरह सरगुजा की सीमा पर एवं उसके उत्तर सोननदी तक जहां भी बघेली प्रचलित है ये रूप क्रमश: उत्तर की ओर बढ़ते हुए लुप्त होने लगते हैं।

बघेली भाषा में बोलने वालों की दृष्टि से भी परिवर्तन परिलक्षित होता है। बघेली भाषा जहां एक ओर सवर्ण जाति की भाषा है, वहीं दूसरी ओर आदिवासी जातियों ने भी इसे समान भाव से स्वीकार कर लिया है। इसलिए बघेली आदिवासी लोगों के बीच में अपनी शुद्धता खो बैठी है। इस स्थिति में बघेली में अनेक आदिवासी शब्द आगए हैं। खैरवार एवं गोड़ जाति कीभाषा की चर्चा करते समय इस पर विवेचन हो चुका है।

इस विवरण के आधार पर इस निश्चय पर पहुंचा जा सकता है कि जनपद की अधिकांश लोगों की भाषा भोजपुरी है परन्तु अल्पसंख्यक रूप में अवधी, बघेली तथा बांगरी बोलने वाले भी मिल जाते हैं। अवधी एवं बघेली को डा० बाबूराम सक्सेना ने भाषावैज्ञानिक ढंग से भिन्न नहीं स्वीकार किया है। वस्तुत: बघेली अवधी की ही एक शाखा है। इस स्थिति में जनपद में भोजपुरी तथा अवधी बोलने वालों की संख्या समान है। अब तक जो भी निरूपण हुआ है वह बोली रूप का है। मिर्जापुर जनपद आज औद्योगिक केन्द्र बन गया है। इसलिए यहां प्रान्त तथा देश के विभिन्न भागों के लोग आकर बस गए हैं, इस कारण कई भाषाओं का संगम यहां हुआ है। इन भाषाओं में पंजाबी, मारवाड़ी तथा तमिल प्रधान हैं। समस्त शिक्षा संस्थाओं की भाषा खड़ी बोली हिन्दी है। थोड़ा भी शिक्षित व्यक्ति जनसम्पर्क में खड़ी बोली बोलने का प्रयत्न करता है। हिन्दी समझने की क्षमता सबमें है चाहे लिखने और पढ़ने की भले न हो। बाजार में सामान्य महोत्सव इत्यादि में तथा अन्य श्रेष्ठ सामाजिक संस्थाओं में खड़ीबोली हिन्दी ही काम काज की भाषा है, किन्तु घरों में हिन्दी की बोलियां ही अपने मूल स्तर पर व्यवहृत होती हैं जिनमें भोजपुरी एवं अवधी प्रमुख हैं।

****

अध्याय १

ध्वनि ग्रामिक अध्ययन

२.१ स्वर ध्वनिग्राम—

मिर्जापुर जनपद की बोलियों में १० स्वर तथा २७ व्यंजन ध्वनिग्राम हैं । ये ध्वनियां स्वल्पान्तर युग्म में आकर अर्थभेदक होती हैं अर्थात् समान ध्वन्यात्मक परिवेश में घटित होकर भी व्यतिरेकी रहती हैं । स्वरों में ।ई। ।इ। ।ए। ।अ। ।ऊ। ।उ। ।ओ। ।आ। ।ऐ। तथा ।औ। स्वरों का महत्वपूर्ण स्थान है । मानक स्वर मानचित्र में ये निम्नलिखित स्थान रखते हैं ।

मूल स्वर — ।अ। ।इ। ।ए। ।ई। ।उ। ।उ। ।ऊ। ।ए। ।ओ। ।औ।
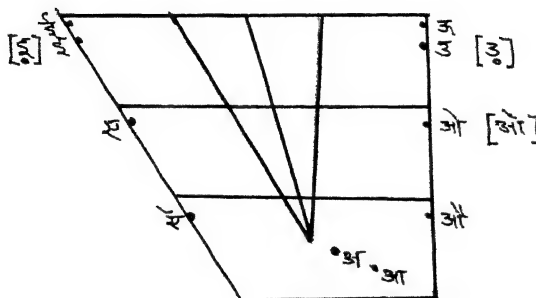
संयुक्तस्वर— ।ऐ। । अइ-अइ।

।औ। ।अउ।

।। के अन्तर्गत सहध्वनिग्राम अंकित किए गए हैं ।

२.१.१ स्वर ध्वनिग्रामों का वितरण तथा उनके सहस्वन —

(१) ।ई।

यह संवृत,अवृत्ताकार,दीर्घ,अग्रस्वर है । वितरण की दृष्टि से यह आदि , मध्य तथा अन्त्य तीनों स्थितियों में आता है ।

यथा— ईन्धन,ढीठ,गोभी

।ई१। यह प्रारम्भिक ।ई। की अपेक्षा शिथिल तथा ईषत्ह्रस्व है । इसका प्रयोग केन्द्रीय बोली में,तथा केन्द्र सं० १ में होता है। बनारस तथा मिर्जापुर की सीमा पर यह और शिथिल हो जाता है । इस स्थिति में यह केवल शब्द की अंतिम स्थिति में ही आता है । यथा- भाई[1] भाई[2]

(२) ।इ। यह संवृत, अवृत्ताकार अग्रस्वर है । इसके उच्चारण में जीभ ।ई। की तरह

नहीं उठती । वितरण की दृष्टि से यह शब्द की आदि, मध्य तथा अन्त्य तीनों स्थितियों में आता है । स्वरपश्चात् शब्द की मध्यस्थिति में यह आकार संध्यक्षर का रूप ग्रहण कर लेता है ।

गाइ, बइठा, इनारा

।इ̥। यह ।इ।का ही सहस्वन है । उच्चारण की दृष्टि से यह जपित स्वर की तरह है । गंगा के उत्तरी भाग में इसका उच्चारण फुसफुसाहट की ध्वनि की तरह होता है । वितरण की दृष्टि से यह केवल शब्दान्त में ही प्रयुक्त होता है । आगे आने वाले स्वर या व्यंजन के प्रभाव में इसका लोप भी हो जाया करता है ।

मागि   मागि - गवा   माग्गवा

(३) ।ए।

यह अर्द्ध संवृत अग्रस्वर है । केन्द्र सं० १ तथा केन्द्रीय बोली में इसका उच्चारण स्थान मूल या मानक स्वर ।ए। से कुछ नीचे है । यह शब्द की आदि, मध्य तथा अन्त्य तीनों स्थितियों में आता है ।

एक, सेमा, मारे

[ए̥]अर्द्धसंवृत ह्रस्व अग्रस्वर है । अवधीभाषी क्षेत्र में इसका उच्चारण नहीं किया जाता है । देखियां

(४) ।ऐ। यह अर्द्धविवृत अग्रस्वर है तथा शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है । केन्द्रीय बोली में यह संध्यक्षर का रूप धारण कर लेता है । पइसा, अइसन, किन्तु शेष क्षेत्र में यह पैसा रूप में ही उच्चरित होता है ।

(५) ।अ। यह अर्द्धविवृत पश्च स्वर है । शब्द की अंतिम में प्रायः इसका उच्चारण नहीं होता है । केन्द्र सं० १ में इसका उच्चारण वर्तुलाकार होता है । डा० मिश्र का कहना है" भोजपुरी में अ का उच्चारण यू०पी० की ही भांति होता है, पूरब के वर्तुलाकार उच्चारण की तरह नहीं ।" पश्चिमी हिन्दी तथा पूर्वी हिन्दी की बोली अवधी से ज्यों ज्यों हम पूरब की ओर बढ़ते जाते हैं[1], अ वर्तुल हुआ जाता है । चूंकि प्रस्तुत क्षेत्र पूर्वी हिन्दी तथा भोजपुरी की सीमा पर है, इसलिए इसमें वर्तुल होने की प्रवृत्ति नहीं के बराबर है किन्तु दीर्घरूप में इसका उच्चारण होता है तब यह विवृततर हो जाता है ।

१- स्टडी आफ मैथिली लिटरेचर, डा० जयकान्त मिश्र, पृ० ६३, थीसिस इलाहाबाद यूनिवर्सिटी ।

घा घां, बा बां

इस स्थिति में यह दीर्घता अननुनासिक भी हो जाती है । इसके दो सहस्वन हैं ।

अ- अन्हार

अ़- सुअ़रिया

यद्यपि शब्दान्त में अ का उच्चारण नहीं होता, फिर भी नकारात्मक अव्यय 'न' में तथा इसी प्रकार कतिपय आज्ञार्थक क्रिया रूपों के मध्यमपुरुष में शब्दान्त में अ उच्चरित होता है । जैसे- देखिह, करिह । ध्यान देने की बात यह है कि यह उच्चारण केन्द्र सं० १ तथा ६ में ही है अन्यत्र नहीं ।

(६) ।ऊ। यह संवृत पश्च वृत्ताकार स्वर है । इसके दो सहस्वन हैं ।

[ऊ] स्वर शब्द की आदि, मध्य तथा व्यंजन पश्चात् अंतिम स्थिति में आता है । ऊखि ऊख, सूप, घुरहू

[ऊ१] यह । ऊ । की अपेक्षा अधिक शिथिल तथा ह्रस्वयुक्त है । यह शब्द की अंतिम स्थिति में स्वर पश्चात् आता है। नाऊ १

(७) ।उ। यह ।ऊ। की अपेक्षा कम उच्चस्थानीय संवृ-तपश्च स्वर है । इसके भी दो सहस्वन हैं (ऊ। तथा । ड ।

[उ] उप्पा, उधार

[ड़] महुआ -केन्द्र ५-६ में यह कीवा रूप में ही उच्चरित होता है ।

(८) ।ओ। यह अर्द्धसंवृत पश्च स्वर है , तथा शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है ।

ओसार, घोड़ा, लकड़ी । इसका एक सहस्वन है ।ओ।

[ओ] इसका उच्चारण स्थान मूल स्वर से थोड़ा नीचे है । यह सहस्वन केवल केन्द्र सं० १ में ही प्राप्त होता है । ओसरा, ओलरा ।ओरंवा।

(९) ।औ। यह अर्द्धविवृत पश्चस्वर है तथा शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है ।

औरत, चौपाया, मारौ । ज्यों-ज्यों केन्द्रीय बोली की ओर बढ़ते जाते हैं यह संध्यक्षर का रूप धारण करने लगता है । औरत अउरत

(१०) ।आ। यह विवृतपश्च स्वर है तथा शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है।

आमी आम, आबादी, पैसा

केन्द्रीय बोली, केन्द्र सं० १ तथा १० में इसके उच्चारण में जीभ का मध्य भाग बहुत थोड़ा ऊपर उठता है। यहां यह केन्द्रीय स्वर की तरह प्रयुक्त होता है।

२.१.२ स्वल्पान्तर युग्म तथा उपस्वल्पान्तर युग्म(Minimal pairs and analogous pairs)

|इ| |ई| |मिल|
|मील|

|अ| |आ| |कम| |बर| (दूल्हा)
|काम| |बार| (बाल)

|आ| |ई| |घोड़ा|
|घोड़ी|

|अ||आ||ई||औ| |बल|
|बाल|
|बालि|
|बौल|
|बैल|
|बेल|

|ए||ऐ||ई| |मेल|
|मैल|
|मील|

इस तरह स्वरों के वितरण तथा उनके प्रयोग से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्रत्येक स्वर १ या एक से अधिक सहस्वन अवश्य रखते हैं। अनुनासिक तथा निरनुनासिक स्वरों की प्राप्ति सामान्य है। जनपद में निरनुनासिक स्वर को सवर्ण जाति के लोग शब्द में पूर्व या पश्चात् अनुनासिक ध्वनि होने के कारण अनुनासिक कर दिया करते हैं किन्तु आदिवासी जातियां तथा पिछड़ी जातियों की यह सामान्य प्रवृत्ति है कि वे निरनुनासिक स्वरों को अनुनासिक करके बोलती हैं।

स्वरों के उच्चारण के सम्बन्ध में भी जन पद में भेद देखा जा सकता है। अवधी मागधी क्षेत्र की अपेक्षा भोजपुरी क्षेत्र से स्वरों का उच्चारण कुछ अंशों में विलम्बित हो जाता है। प्रचलित लोकगीतों में यह उच्चारण और भी विलंबित हो जाता है। |ऐ| एवं |औ| स्वरों का उच्चारण वे ही लोग करते हैं जो शिक्षित हैं, तथा अवधी मागधी क्षेत्र के हैं। भोजपुरी क्षेत्र में पढ़े लिखे लोग भी इन स्वरों का उच्चारण नहीं करते।

२.१ व्यंजन ध्वनिग्राम-

भाषा के अन्तर्गत कुछ वर्गों की ध्वनियों में प्राणत्व तथा घोषत्व के आधार पर व्यतिरेक पाया जाता है । मिर्जापुर जनपद की बोलियों में भी यह व्यतिरेक प्रत्यक्ष है । प्राणत्व के आधार पर निम्न व्यंजन ध्वनियां यहां प्राप्त होती हैं ।

महाप्राण- फ् भ् थ् ठ् ढ् छ् झ् ख् घ्
अल्पप्राण- प् ब् त् द् ट् च् ज् क् ग्

सामान्य रीति से म्ह, न्ह, ल्ह ध्वनि को भी महाप्राण ध्वनि माना जाता है। /ह/ ध्वनिग्राम की स्थिति गुच्छ (cluster) के रूप में भी विद्वानों ने स्वीकार किया है । यहां की बोलियों में न्, म् तथा ल् के वातावरण में इनमें विषमय देखा जा सकता है ।

यथा- कान, कान्ह (अनाज रखने वाले मिट्टी के बर्तन की गर्दन)
कानि,कान्हि-(बैल की गर्दन)
इस स्थिति में ये ध्वनियां ध्वनिग्रामिक हैं ।

जिस प्रकार व्यंजन ध्वनियों में प्राणत्व के आधार पर व्यतिरेक पाया जाता है उसी प्रकार घोषत्व के आधार पर भी । घोषत्व के आधार पर व्यंजनों की निम्न सरणि बनती है ।

क् ख् च् छ् ट् ठ् त् थ् प् फ्
ग् घ् ज् झ् ड् ढ् द् ध् ब् भ्

इन व्यंजनों के अतिरिक्त कुछ व्यंजन ध्वनियां ऐसी हैं जो घोषत्व या प्राणत्व के आधार पर व्यतिरेक नहीं कर पातीं । इनमें प्रमुख हैं -

नासिक्य /म्/ /म्ह/ /न्/ /न्ह/ /ङ०/
पार्श्विक /ल्/ /ल्ह/
लुण्ठित /र/
अर्द्धस्वर /य/ /व/

उच्चारण स्थान तथा प्रयत्न की दृष्टि से-

	द्व्योष्ठ्य	दन्त्य	वर्त्स्य	मूर्धन्य	वर्त्स्य तालव्य	कंठ्य	काकल्य
स्पर्श	प् ब्		त् द्	ट् ड्		क् ग्	
	फ् भ्		थ् ध्	ठ् ढ्		ख् घ्	
स्पर्शसंघर्षी					च् ज्		
					छ् झ्		
नासिक्य	म्	ण्	न्			ङ्	
पार्श्विक			ल्				
लुण्ठित			र्	[ड़] [ढ़]			ह्
संघर्षी			स्				
अर्द्धस्वर	व्				य्		

हिन्दी की बोलियों के स्पर्श-संघर्षी व्यंजनों को स्पर्श वर्ग में ही रखने की धारणा डॉ॰ ग्लीसन महोदय ने अपनी पुस्तक (An Introduction to Descriptive linguistics) पृ० २४४ में व्यक्त की है । उनका कहना है ," अंग्रेजी भाषा के अन्तर्गत तो स्पर्श और स्पर्श संघर्षी व्यंजनों के वितरण में अनेक भिन्नताएं हैं किन्तु हिन्दी की बोलियों में ऐसा नहीं है । दो ध्वन्यात्मक ध्वनिरूपों का ढांचा बहुत सी दृष्टियों से एक है । इसलिए स्पर्श संघर्षी व्यंजनों को एक अलग वर्ग में न रख कर स्पर्श वर्ग की ही ध्वन्यात्मक शाखा मान लेना उचित है ।"
डा० ग्लीसन की मान्यता के अनुसार हम अलग वर्ग स्वीकार नहीं करते ।

2.2.9 व्यंजन ध्वनिग्रामों के वितरण तथा उनके सहस्वन-

(१) ।प्। यह अल्पप्राण, अघोष द्व्योष्ठ्य स्पर्श व्यंजन है, तथा शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है । पचास, कपार, बाप्

(२) ।फ्। यह महाप्राण, अघोष, द्व्योष्ठ्य स्पर्शव्यंजन है तथा शब्द की आदि , मध्य स्वर तथा व्यंजन के मध्य में आता है।

फर, फोरा, कफ्फन, फुफ्का फुफ्का

[फ़१] यह महाप्राण, अघोष, द्वयोष्ठ्य स्पर्श व्यंजन है, तथा प्रायः विदेशी शब्दों में प्रयुक्त होता है जो बोली रूप में मिल कर आवृत्त होने लगे हैं।

फसाद, अफ़सर, आफ़िस

(३) ।ब्। यह अल्पप्राण, घोष, द्वयोष्ठ्य स्पर्श व्यंजन है तथा शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है।

बदमाश, साबुन, कब

(४) ।भ्। यहमहाप्राण, घोष, द्वयोष्ठ्य स्पर्श व्यंजन है तथा शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है।

भारी, गाभिन, लाभ्,

(५) ।त्। यह अघोष, अल्पप्राण, स्पर्श व्यंजन है वितरण की दृष्टि से शब्द की प्रत्येक स्थिति में इसका प्रयोग होता है।

ताहा, हता, लात्

(६) ।थ्। इसका एक ही सहस्वन है जो अघोष महाप्राण, वर्त्स्य स्पर्श व्यंजन है।

थरिवा, माथा, हाथ्

(७) ।द्। यह घोष, अल्पप्राण, वर्त्स्य स्पर्श व्यंजन है। शब्द की प्रत्येक स्थिति में इसका प्रयोग होता है।

दाल, बादर बादल, उमीद्

(८) ।ध। इसका एक ही सहस्वन है जो घोष, महाप्राण, वर्त्स्य स्पर्श व्यंजन है। यह शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है।

धाद्, कन्धा, बांध्

(९) ।ट्। यह अल्पप्राण, अघोष, मूर्धन्य स्पर्श व्यंजन है। यह शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है।

टाट, खटिया, मोट्

(१०) ।ठ्। यह महाप्राण, अघोष, मूर्धन्य स्पर्श व्यंजन है। यह शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है।

ठोकर, ठठोर, काठी, काठ्

(११) ।ड्। यह अल्पप्राण,सघोष,मूर्धन्य स्पर्श व्यंजन है । इसके दो सहस्वन हैं ।

[ड] यह शब्द की आदि तथा मध्यस्थिति में आता है ।

डर, निडर

[ड़] यह अल्पप्राण,घोष,मूर्धन्य उत्क्षिप्त व्यंजन है । वितरण की दृष्टि से यह मध्य एवं शब्दान्त में आता है।

सड़क, पेड़,रेड़,लेंड़

(१२) ।ढ। इस ध्वनिग्राम के दो सहस्वन हैं ।

[ढ] यह महाप्राण,घोष,मूर्धन्यस्पर्श व्यंजन है । यह शब्द की आदि स्थिति में तथा व्यंजन गुच्छों में दूसरे सदस्य के रूप में आता है।

ढक्कन ढकना, बुड्ढा, ठण्ढक

[ढ़] यह महाप्राण,घोष,मूर्धन्य,उत्क्षिप्त व्यंजन है । ।ढ। के वितरण के अतिरिक्त यह अन्यत्र आता है ।

बाढ़, माढ़ । यह शब्द की आदि स्थिति में नहीं आता।

(१३) ।च। इस ध्वनिग्राम का एक ही सहस्वन है जो अल्पप्राण,अघोष,वर्त्स्य-तालव्य स्पर्शसंघर्षी व्यंजन है । यह शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है।

चाक, अंचार, साच

(१४) ।छ। यह महाप्राण,अघोष,वर्त्स्य-तालव्य स्पर्श संघर्षी व्यंजन है । यह शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है।

छल, कछनी,रीछ

(१५) ।ज। यह अल्पप्राण,घोष,वर्त्स्य तालव्य स्पर्श संघर्षी व्यंजन है । यह शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है ।

जाल, लजाउ, रोज, नाज

(१६) ।झ। यह घोष, वर्त्स्य तालव्य,स्पर्श संघर्षी ,महाप्राण व्यंजन है जो शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है ।

झरना, सुझाउ,बांझ

(१७) ।क। यह अघोष,अल्पप्राण,अघोष व्यंजन है।

कोल्हा, लकड़ी,सड़क

(१८) |ख| यह अघोष,महाप्राण,कण्ठ्यस्पर्शव्यंजन है जो शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है ।

सखिया, राखि, लेख । केन्द्र १,३ में यह अन्त में नहीं आता।

(१९)|ग| यह सघोष,अल्पप्राण,कंठ्यस्पर्श व्यंजन है जो शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है ।

गाइ, फगुई, लंगा,लग्

(२०) |घ| यह सघोष,महाप्राण,कण्ठ्य स्पर्श व्यंजन है । यह शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है।

घाम , घंरा, बाघ

(२१) |म| यह द्वयोष्ठ्य ,सघोष,अल्पप्राण,नासिक्य व्यंजन है, जो शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है ।

मनार, लमहा, बाम्

(२२) |न| यह वर्त्स्य,सघोष,अल्पप्राण,नासिक्य व्यंजन है ।वितरण की दृष्टि से यह सर्वत्र आता है ।इसके तीन सहस्वन हैं-

[ण्] यह मूर्धन्य,नासिक्य व्यंजन है । अपने वर्गीय ध्वनियों के ही साथ यह शब्द की माध्यमिक तथा अंतिम स्थिति में आता है।

बाण् बान्

[ञ्] यह वर्त्स्यतालव्य,नासिक्य व्यंजन है ।

ञ ञह

[न्] यह वर्त्स्य,नासिक्य व्यंजन है । यह ण के साथ मुक्त परिवर्तन में वितरित होता है।

ण न - प्राण प्रान्, बाण बान्

तालिका में इसे इस रूप में दिखाया जा सकता है:-

	आदि में	मध्य में	द्विस्वरान्तर्गत	अन्त में
ञ		वर्ग के पूर्व		
ण्			॥	
न्	॥	॥	॥	॥

(२३) ।ङ। यह कण्ठ्य नासिक्य व्यंजन है । यह शब्द के आदि में कभी नहीं आता है । मध्य में अपने वर्गीय व्यंजनों के साथ तथा अन्त में आता है ।

पङ्खा , रङ् लङ्

(२४) ।ल। यह वर्त्स्य ,पार्श्विक व्यंजन है ।

लोटा, बालक, बाल

(२५) ।र। यह वर्त्स्य लुण्ठित व्यंजन है ।

रास्ता, रोक, ऊपर

(२६) ।स। यह वर्त्स्य,अघोष,संघर्षी ,ऊष्म व्यंजन है ।

सास, मस्त, रस्सा

(२७) ।श। यह तालव्य,अघोष,संघर्षी व्यंजन है तथा शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है ।

शेला , शर ,मालीशा, रशिला, लाश

(२८) ।व। यह दन्त्योष्ठ्य सघोष,अर्द्धस्वर,व्यंजन है । वितरण की दृष्टि से यह शब्द के आदि में नहीं आता केवल मध्य तथा अन्त में आता है । विकल्प से केन्द्रीय बोली में उसके स्थान पर ।ब। का भी प्रयोग होता है । दुबार । । दुवार । उच्चारण में ओष्ठ थोड़ा नीचे रह जाने वहाँ उसके स्थान पर ।उ। उच्चरित होता है । ताव । ताउ

(२९) ।य। यह तालव्य,सघोष,अर्द्धस्वर व्यंजन है । केन्द्रीय बोली में उसके स्थान पर विकल्प से ।ज। का भी उच्चारण होता है।

यार, सियार, घरिया

जार, सिजार, घरिजा

2.2.2 व्यंजन स्वल्पान्तर तथा उपस्वल्पान्तर युग्म-

(१) स्पर्श (कंठ्यस्पर्श)

(अ)	।क।	।करी।	काई
	।ख।	खरी	खाई
	।ग।	गरी	गाई
	।घ।	घरी	

|आ| तालव्य स्पर्श- स्पर्श संघर्षी व्यंजन

|च्| व चालि

|छ्| छालि

|ज्| जालि

|झ्| झालि

|इ| मूर्धन्यस्पर्श व्यंजन

|ट्| |टाटि| लट्टू

|ठ्| |ठाटि|

|ड्| |डाटि| |डालि| लड्डू

|ढ्| |ढाटि| |ढागी|ढालि|

|ई| दन्त्य स्पर्श व्यंजन

|त्| |ताली| |तान|

|थ्| |थाली| |थान|

|द्| |दान|

|ध्| |धान|

|उ| द्वयोष्ठ्य स्पर्श व्यंजन

|प्| |पर| |पाप|

|फ्| |फर|

|ब्| |बर | |बाप|

|म्| |मर |

(२) |नासिक्य व्यंजन

|न्| |नानी| |कान| |मन|

|म्| |मामी| |काम| |रम्ह|

|सह०| (माथ) |रहळ|

(३) लुण्ठित, पार्श्विक, संघर्षी-

|र्| |तार|

|ल्| |ताल|

|ड़्| |बाड़|

|ढ़्| |ढाड़|

(४) अर्द्धस्वर

।ग्॒।	।गाग्॒।	(मित्र)
।ग्र्॒।	।ग्राग्॒।	(आक्रमण)

2.3 खण्डेतर ध्वनिग्राम (Supra segmental phoneme)

(१) अनुनासिकता- निरनुनासिक स्वरों को अनुनासिक कर देने से व्यतिरेक उत्पन्न हो जाता है। इसलिए भाषा के गठन में अनुनासिकता को ध्वनिग्रामिक स्वीकार किया जाता है।

। बाग ।	(गंध)
।बांस ।	(लकड़ी)
।सास।	(पत्नी की मां)
।सांस।	(सांस)
।नाउ।	(डालो)
।नाउं।	(नाम)
।गाज।	(फेन)
।गांज।	(डंठल का बोझ)
।गोड़।	(पैर)
।गोंड़।	(जाति)

अनुनासिक व्यंजनों की प्रवृत्ति सामान्य होती है इसे हम स्वत: अनुनासिकता कह सकते हैं -जैसे- तैलिनि। किन्तु ऐसे भी शब्द हैं जो मूल में तो अनुनासिक नहीं रहते किन्तु प्रयोग में अनुनासिक हो जाते हैं- जैसे- सांची, सिमाव

पालामऊ की सीमा पर भोजपुरी में यह अनुनासिकता अधिक है पर ज्यों-ज्यों सिंगरउली की ओर बढ़ते हैं क्रमश: इसमें कमी होती जाती है। इसी तरह आदिवासी जाति के लोगों में स्वरों को अनुनासिक कर देने की प्रवृत्ति काफी है। निरनुनासिक तथा अनुनासिक स्वरों में व्यतिरेक होने के कारण अनुनासिकता ध्वनिग्रामिक स्तर पर स्वीकृत की जा सकती है।

(२) दीर्घता (Length)

सामान्यत: यह धारणा प्रचलित रही है कि ।आ,ई,ऊ। रूप क्रमश:

।अ,इ,उ। के दीर्घरूप हैं । डा० उदयनारायण तिवारी इस बात को नहीं स्वीकार करते । वैज्ञानिक अध्ययन के पश्चात् यह सिद्ध हो चुका है कि इन स्वरों में केवल उच्चारण काल या मात्रा का ही अन्तर नहीं होता अपितु उच्चारण स्थान में भी अन्तर देखा जा सकता है । ऐसी स्थिति में ।आ। को ।अ। का दीर्घ रूप मानना भ्रम है ।

स्वरों के उच्चारण में वक्ता की परिस्थितियों का पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। इस वातावरण के कारण ही सुरलहर में कम्पन,आरोह-अवरोह तथा स्वरों के मात्रा काल में परिवर्तन होता रहता है । इसी कारण आदि स्वर अगले स्वरों से, अनुनासिक स्वर निरनुनासिक स्वरों से अधिक मुखर होते हैं ।

प्रस्तुत क्षेत्र की बोली में बर (पेड़) तथा ˈबर (दूल्हा) में जो व्यतिरेक है वह दीर्घता के कारण ही है । इसी प्रकार गरे(गले में) तथा गˈरे(गया रे) में जो व्यतिरेक है वह भी दीर्घता के ही कारण है । इसमें पहला उदाहरण केन्द्रीय बोली से तथा दूसरा गंगा के उत्तरी भाग अर्थात् अवधी क्षेत्र से है । इसके आधार पर हम कह सकते हैं कि इस क्षेत्र में दीर्घता ध्वनिग्रामिक है ।

(३) बलाघात- संसार की कोई भाषा आघात शून्य नहीं होती, किन्तु उच्चारों की श्रृंखला में आघातों में कमी हो जाती है । इस क्षेत्र की बोली में पद स्तर पर आघात ध्वनिग्रामिक नहीं है ।

२.६ स्वर संयोग

जब एकसाथ एक से अधिक स्वर मध्यान्तर्गत अल्पविवृति सहित एक साथ आते हैं तो उसे स्वरसंयोग कहा जाता है। मिर्जापुर जनपद की जनबोलियों में स्वरसंयोग शब्द की आदि, मध्य तथा अन्त तीनों स्थितियों में प्राप्त होते हैं।

दो स्वर संयोग-

इस जनपद की बोलियों में प्रारम्भिक स्थिति में निम्न दो स्वर संयोग प्राप्त होते हैं।

अ इ	अइसी	इधर से
	अइली	आया
	अइसन	
अ उ	अउर	और
	अंउस	
आइ	आइलि	आइं केन्द्रीय बोली में
	आइलि	केवल केन्द्र ४,५,६
ओइ	ओइसन	वैसा
आए	आएन	आए

माध्यमिक स्थिति-

अ इ	चिरई	चिड़िया
अ इ	मइल	मैला
इ अ	हरिअर	हरा
ई अ	पीअर	पीला
उ अ	[illegible]	काला
अ उ	मउसी	मौसी

अ ई	[illegible]	उल्टी
आ उ	बाउर	बावल
ऊ अ	सूअर	सूअर
उ आ	कुआर	क्वार

अंतिम स्थिति-

इ आ	पइआ	धान का कीड़ा
उआ	पउआ	प का $\frac{१}{४}$ भाग
आ ऊ	नाऊ	नाई
आ ई	माई	माता
ई आ	दीआ	दीपक
अ इ	दुइ	दो
ऊ ई	सूई	सूचिका
ओ इ	ओइ	स्वीकृतिसूचक शब्द
ओ आ	भोआ	एक भाग
ओ उ	कोउ	को
ओ इ	लोइ	लो

तीन स्वर संयोग-

तीन स्वर संयोग की प्रवृत्ति यहां की बोलियों में अधिकांशतया कम है फिर भी कुछ संयोग इस कोटि के मिल जाते हैं ।

अ उ अ	मउवति°	मृत्यु
अ उ आ	कउआ	कौवा
अ उ अ	बंउस	बाँस
इ आ उ	बनिआउर	
ओ इ आ	चोइयां	
अ इआ	अइया	

२.५ व्यंजन गुच्छ

भाषा के रूप गठन में जब दो या दो से अधिक व्यंजन एक साथ आते हैं तथा उनके बीच में कोई स्वरध्वनि नहीं आती तो उसे व्यंजनगुच्छ कहा जाता है। डा० ग्रियर्सन का कहना है कि यह गुच्छ अपने वर्ग की ध्वनियों को मिलाकर ही बनता है। जैसे-

स्पर्श + स्पर्श व्यंजन

या

नासिक्य + नासिक्य

या

ऊष्म + ऊष्म

इनके अतिरिक्त स्पर्श + नासिक्य ,स्पर्श + ऊष्म का भी संयोग हुआ करता है इन व्यंजनों को अर्द्धस्वरों के साथ संयोग अर्थात् स्पर्श + अर्द्धस्वर या ऊष्म + अर्द्ध-स्वर या नासिक्य + अर्द्धस्वर रूपों की प्राप्ति विमिश्रित अवस्था में ही होती है । अल्पप्राण तथा संघर्षी घोष एवं अघोष वर्ण अपने वर्ग के महाप्राण वर्ण अथवा अपने ही वर्ग के वर्णों से संयुक्त होते हैं ।

वितरण की दृष्टि से व्यंजन संयोग शब्द की आदि,मध्य तथा अन्त तीनों स्थितियों में आ सकता है पर आदि व्यंजन संयोग के उदाहरण नहीं पाए जाते । पढ़े लिखे लोग ।प्रेम। या अंग्रेजी के शब्द ।क्लाक। का भी उच्चारण करते हैं लेकिन सामान्यजन उच्चारण कठिनाई के कारण इनमें स्वरागम कर दिया करते हैं । यथा-

प्रेम   पेरम

क्लाक   कलाक

इस तरह व्यंजनगुच्छ द्विस्वरान्तर्गत (Intervocalic) ही आ पाते हैं । इनके अन्त में आने की संभावना इसलिए नहीं क्योंकि संयुक्त व्यंजनों का व्यंजनान्त उच्चारण सम्भव ही नहीं है ।

२.५.१ सवर्गीय व्यंजनगुच्छ

कंठ्यस्पर्श + कंठ्य स्पर्श   क्कका   केन्द्र ६,७,८ में ।क्का।

क्खका

सवर्गीय अल्पप्राण अघोष + सघोष ध्वनियां गुच्छ का निर्माण नहीं करतीं। इस स्थिति में अल्पप्राण अघोष ध्वनि भी सघोष हो जाती है।

लग्गा

बग्घा

स्पर्श संघर्षी + स्पर्श संघर्षी

बच्चा

लच्छा

बज्जी

गुज्झा

मूर्धन्य + मूर्धन्य

सट्टा

पट्ठा

लड्डू

बुड्ढा

वर्त्स्य स्पर्श + वर्त्स्य स्पर्श

लत्ता

हत्था

गद्दी

बद्धा

द्वयोष्ठ्यस्पर्श + द्वयोष्ठ्यस्पर्श

कुप्पा

फुप्फा

अब्बा

गब्भा

संघर्षी + संघर्षी

किस्सा

फिस्सा

पार्श्विक + पार्श्विक

गल्ला

हल्ला

लुण्ठित + लुण्ठित कर्रा

मर्रा

नासिक्य +नासिक्य नन्ना

चन्ना

लम्मा

यदि अघोष अल्पप्राण ध्वनि के पश्चात् ।ह। आता है तो सघोष ध्वनि अघोष हो जाया करती है ।अघोष वर्ण अपने वर्ग की महाप्राण तथा सघोष वर्ण अपने वर्ग की महाप्राण ध्वनि से ही संयुक्त होते हैं ।

.५.२ भिन्नवर्गीय व्यंजनगुच्छ-

चूंकि स्पर्श व्यंजन उच्चारण की दृष्टि से विभिन्न वर्गों का निर्माण करते हैं,साथ ही प्रत्येक के उच्चारण में आवयविक (Organic) अन्तर है इस कारण इनमें परस्पर संयोग की स्थितियां पाई जाती हैं ।इसका कारण उच्चारण की सरलता ही मानी जानी चाहिए ।भिन्न वर्गीय व्यंजनगुच्छ में स्पर्श + नासिक्य, स्पर्श + लुण्ठित ,संघर्षी + स्पर्श, संघर्षी + नासिक्य, स्पर्श + अर्द्धस्वर की स्थितियां ही पाई जाती हैं । वे शब्द जो खड़ी बोली में व्यंजनगुच्छ की तरह प्रयुक्त होते हैं, उनमें स्वरागम हो जाने के कारण उनका सरलीकरण हो जाता है । यथा-

कुर्सी कुरसी

तुर्पी तुरपी

बर्छा बरछा

स्पर्श + नासिक्य

नासिक्य ध्वनियों की यह सामान्य विशेषता है कि वे अपनी सवर्गीय ध्वनियों से ही मिलती हैं ।इनके अतिरिक्त भिन्नवर्गीय उदाहरण भी पाए जाते हैं ।

आत्मा

आम्कर

घन्टा

अम्हा

महन्थ

स्पर्श + लुण्ठित — पत्रा, वर्षा, गर्दा, मर्दी — केन्द्रीय बोली में ऐसे प्रत्येक गुच्छों में स्वरागम कर दिया जाता है।

संघर्षी + स्पर्श — कस्बा, नश्ता, पस्त, गुमश्ता, कष्ट, सुस्त — सुसुत

संघर्षी + नासिक्य — चश्मा, विस्नु

स्पर्श + अर्द्धस्वर य — व्याव, ग्यान, सत्यानाश, इक्यावन) निन्यानवे) ५, ६

स्पर्श + अर्द्धस्वर व

केन्द्रीय बोली में ऐसे गुच्छ नहीं पाए जाते। वितरण की दृष्टि से केन्द्र सं० ५,६,१२,१३ में यह प्रवृत्ति कुछ मिलती है। केन्द्रीय बोली तथा सीमपारी क्षेत्र की बोलियों में इस प्रवृत्ति का अभाव पाया जाता है। वितरण की दृष्टि से यदि हम इन गुच्छों को साफ तालिका में प्रस्तुत करना चाहें तो निम्नरूप से प्रस्तुत कर सकते हैं :-

क	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड	ढ	त	थ	द	ध	प	फ	ब	भ	न	म	स	ह	र	ल	य	व
ख	×	×																										
ग			×	×																								
घ																												
च					×	×																						
छ																												
ज							×	×																				
झ																												
ट									×	×																		
ठ																												
ड											×	×																
ढ																												
त													×	×														
थ																												
द															×	×												
ध																												
प																	×	×										
फ																												
ब																			×	×								
भ																												
न	×				×	×		×		×	×	×							×									
म																												
स	×									×			×	×				×		×	×			×				
ह																		×	×		×							
र	×													×	×	×					×							
ल	×																	×			×			×				
य	×	×																										
व																												

२.६ आक्षरिक रचना

ध्वनियों की सम्पूर्ण लघुतम ईकाई जिसका उच्चारण एक झटके में ही हो सकता है अक्षर कहलाती है । अक्षर की प्रतीति `मुखरता`(sonority) के आधार पर होती है । यह मुखरता सबसे अधिक स्वरों में, उससे कम अन्तस्थों में,फिर संघर्षी वर्णों में और सबसे कम स्पर्श वर्णों में होती है । डा० सक्सेना का मत है `दो अल्प स्वरत्व वाली ध्वनियों के बीच के ध्वनि समूह को अक्षर कहते हैं ।` आक्षरिक रचना में सर्वाधिक सहायता स्वरों से मिलती है ।यद्यपि संसार में ऐसी भी भाषाएं हैं जिनमें व्यंजन भी अक्षर निर्माण करते हैं पर हमारे यहां की बोलियों में ऐसी स्थिति नहीं मिलती ।

मीरजापुर की बोलियों में अ, इ,उ,आ,ई,ऊ,ए,ऐ,ओ,औ स्वर विभिन्न रूप में बोले जाते हैं लेकिन इन में से प्रत्येक स्वर अक्षर रचना नहीं करते । शब्दों की विभिन्न स्थितियों में `अ`उच्चरित नहीं होता । केन्द्रीय बोली में अकारान्त क्रियारूपों यथा- च ल (चलो) उ ठ (उठो) ब इ ठ (बैठो)के अतिरिक्त शब्दान्त में आने वाला ।अ। उच्चरित नहीं होता । इसलिए यह अक्षर रचना नहीं करता।

शब्द की मध्य तथा अन्त स्थिति में आने वाला संवृत,अग्रस्वर ।इ।अक्षर रचना नहीं कर पाता । यथा- गाइ । इसके पश्चात् जब कोई स्वर या व्यंजन आता है तो इसका लोप हो जाया करता है ।

अ अ अ क्रम में आने वाले शब्द जिनके प्रारम्भ में व्यंजन और अन्त में दीर्घ स्वर होता है किन्तु मध्य में यदि ।इ। या ।उ। स्वर आता है तो मध्य का ।उ। स्वर अक्षर रचना नहीं करता । यथा- कउआ

पउआ

इन स्वरों के अतिरिक्त यहां बोले जाने वाले प्रत्येक स्वर अक्षर रचना किया करते हैं ।अक्षर की सीमा का निर्धारण स्वयं में दुष्करकार्य हुआ करता है । फिर भी मुखरता (sonority) एवं चरमसीमा(Peak) के आधार पर यह निर्धारण सम्भव हो पाता है ।जिन अक्षरों में केवल स्वर ही होते हैं,उन्हें स्वराक्षर कहा जाता है । स्वर और व्यंजनों का मेल तीन रूपों में होसकता है। या तो स्वर के पूर्व व्यंजन या संयुक्त व्यंजन आयें, या स्वर के पश्चात् इनका मेल हो या दोनों ओर इन्हें देखा जा सके ।

एक स्वर ध्वनिग्राम से एक अक्षर का निर्माण हो पाता है। अक्षर निर्धारण का यह एक रूप होता है जिसमें व्यंजन या संयुक्त व्यंजन नहीं पाया जाता।

आ- उ

औ-ह

आ-ई

आ-ए

आक्षरिक रचना में इस वर्ग को रखा जा सकता है जिसमें स्वर के पूर्व या पश्चात् व्यंजन आते हैं।

का-ल

सा-म

मा-टी

यौगिक शब्द रचना में अक्षर विधान में परिवर्तन हो जाता है। यदि व्यंजन द्वित्व दो स्वरों के मध्य में आता है तो प्रथम व्यंजन प्रथम स्वर के साथ तथा दूसरा द्वितीय स्वर के साथ बोला जाता है।

लम्मा लम्-मा

प्रत्येक स्वर शब्द की आदि, मध्य तथा अन्त अवस्था में आकर अक्षर रचना कर सकता है।

आदिमी

सापट

कुदारी

यदि शब्द में स्वरसंयोग की स्थिति प्राप्त होती है तो अक्षर विभाजन निम्न प्रकार से होता है।

कउवा कउ-वा

न उ वा नउ-वा

मोइठा मोइ-ठा

जब संयुक्त व्यंजन शब्द के आदि में आते हैं तो अपने बाद वाले स्वर से मिल कर ही अक्षर रचना कर पाते हैं।

स्वामी स्वा-मी

माध्यमिक स्थिति में जब दो व्यंजन साथ साथ आते हैं तो व्यंजनान्त रूप पूर्व स्वर के साथ संयुक्त होता है।

लम्बा	लम्-बा
अच्छा	अच्-छा
सक्ती	सक्-ती
सल्लुक	सल्-लुक

यदि व्यंजन या व्यंजन गुच्छ शब्दान्त में पाया जाता है तो वह अपने पूर्ववर्ती स्वर से मिल कर अक्षर रचना करता है।

लगान	लग्-आन

यदि दो व्यंजन दो स्वरों के बीच आते हैं तो पहला व्यंजन पूर्ववर्ती स्वर तथा दूसरा परवर्ती स्वर से मिल कर अक्षर रचना करता है।

लल्ला	लल्-ला
गल्ला	गल्-ला

दो स्वरों के बीच दो व्यंजनों से अधिक रूप वाले शब्दों की प्राप्ति रमनी की बोलियों में नहीं होती।

शब्द रूपों में प्रत्यय लगाने से अपवाद हो जाया करते हैं।

कुक	१
कुकक्कड़	

अक्षरों की आदि स्थिति-

अक्षरों के आदि में कोई भी स्वर और वितरण की दृष्टि से कुछ व्यंजनों को छोड़ कर शेष व्यंजन आ सकते हैं।

स = स्वर

व = व्यंजन

एकाक्षर रूप-		आ
	स	ऊ
	वस	काम
		ऊंट
	वव	कछ
		फर

व स	के
व स	ज
व स स	लाइ
व स व	चाम
व स व	छाम

छ्यदार रूप

	-बा	ई
स-व स	-आ-वा	वा- री
स-व स	आ-वा	वा-ई
स-व स व	वां-गन	व
	व-ही	- ई
	व- चेत	- ए
स-वस	आ-न्वी	
	रू वै	
स-व स व	ईन्तव	

अक्षरों के इन रूपों के साथ संगम के कारण कदाचित् परिवर्तन भी हो जाते हैं पर इस तरह के उदाहरण कभी कभी ही मिल पाते हैं। यथा-

खावा = खाद्य पदार्थ
खां-वा = तुम लोग खावो

इसी तरह जब नकारात्मक अव्यय साथ में होता है तो भी आकारिक परिवर्तन देखा जाता है।

नाई- एक जाति
न-आई वह नहीं जाएगा

ऐसे रूपों की प्राप्ति कदाचित् ही होती है।

2.6 संधिविचार (Morphophonemics)

जब दो भिन्न पद एक ही अनुक्रम में आते हैं तो अग्रगामी पद की अंतिम ध्वनि तथा अनुगामी पद की प्रारम्भिक ध्वनि में जो परिवर्तन होता है उसे संधि प्रक्रिया कहते हैं ।

व्युत्पादक प्रत्ययों के कारण ध्वनि परिवर्तन

-उ पूर्व प्रत्यय के योग से उर क्रिया में प्रथम व्यंजन का द्वित्व हो जाता है।

दुडुर

व्युत्पादक या प्रत्ययों के कारण ध्वनिग्रामिक परिवर्तन बहुलता से देखे जाते हैं। क अ क क्रम में आने वाले शब्दों में -आह प्रत्यय के संयोग से मध्य में आने वाला दीर्घस्वर ह्रस्व हो जाता है ।

मूत + आह = मुताह

नून + आह = नुनाह नुनहा

क अ क क्रम में आने वाले शब्दों में -आरी प्रत्यय संयोग के कारण पूर्व पद में मध्य में आने वाला दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है ।

पूजा + आरी = पुजारी

जूआ + आरी = जुआरी

दूध + आरी = दुधारि

क अ क अ क्रम मे आने वाले शब्दों में -आउर प्रत्यय के योग के कारण पूर्वपद का दीर्घस्वर लुप्त हो जाता है तथा द्वितीय दीर्घस्वर ह्रस्व हो जाता है।

नानी + आउर = ननिआउर

मामी + आउर = ममिआउर

काकी + आउर = कक्आिउर

क अ क क्रम में आने वाले संज्ञा शब्दों में जब -अड़ती एवं - अड़ी या प्रत्ययों का संयोग होता है तो प्रथम पद का दीर्घस्वर या तो लुप्त हो जाता है या ह्रस्व हो जाया करता है।

बाप + अड़ती = बपड़ती

माप + अड़ती = मपड़ती

[illegible] + अड़ी = [illegible]

[illegible] + [illegible] = [illegible]

क ब क ब क्रम में आने वाले संज्ञा शब्दों के अंतिम दीर्घस्वर में मात्रात्मक रूप निर्माण के लिए -ई परप्रत्यय विधान में परिवर्तन हो जाता है।

आ	अ	लहना- इ	= लहनई
		बादा-ई	= बादई

संज्ञापदों में -हड़ा पर प्रत्यय के योग कारण निम्न ध्वन्यात्मक परिवर्तन होते हैं।

ऊ	उ	नून-हड़ा	= नुनहड़ा
ई	ई	पीउ-हड़ा	= पिवहड़ा
उ	व		

धातु में -उ परप्रत्यय के योग से जब विशेषण रूपों का निर्माण किया जाता है तो प्रथम पद का अंतिम व्यंजन का द्वित्व हो जाता है।

माग- ऊ	=	मग्गू
खाब- ,,	=	खब्बू
पैट - ,,	=	पैट्टू

संज्ञा एवं धातु में -हत प्रत्यय के संयोग करने पर क ब कब क्रम में आने वाले प्रथम पद में निम्न परिवर्तन होते हैं।

प्रथमदीर्घस्वर	ह्रस्वस्वर
अन्तिम दीर्घस्वर	लुप्त

चढ़ - हत	=	चढ़हत
बोका-हत	=	बोकाइहत
लाठी- हत	=	लठहत

क ब क एवं क ब क ब क्रम में आने वाले पूर्व पद में जब कोई परप्रत्यय जुड़ता है तो प्रथम दीर्घस्वर ह्रस्व हो जाया करता है।

मूल पद में -ठा पर प्रत्यय के संयोग से अंतिम महाप्राणध्वनि अल्पप्राण हो जाती है एवं अनुनासिकता का आगम हो जाता है।

मूछ + ठा	=	मुछंठा

पर्ण संख्यावाची विशेषण में आवृत्ति मूलक विशेषणपदग्राम का निर्माण करने के लिए -सरा अथवा -हरा का प्रत्यय विधान करने पर प्रथम पद के अन्तिम स्वर या व्यंजन का लोप हो जाता है तथा मध्यम रूप में निम्न परिवर्तन होते हैं।

उ ओ	दुइ - सरा	=	दुसरा
ई इ	दुइ - हरा	=	दोहरा
ई ए	तीनि-सरा	=	तिसरा
	तीनि- हरा	=	तेहरा

अकर्मक मूलधातु से सकर्मक बनाने में विवर्तितमूलक का प्रत्यय लगाने से पूर्व धातुओं की परिवर्तन हो जाते हैं।

अ आ	कट	काट
	मर	मार
इ ए	बह	बाह
उ ओ	कढ़	काढ़
	मिट	मेट
	फिर	फेर
	टूट	तोर
	छूट	छोड़

संज्ञारूपों के मध्यम एवं दीर्घ रूपों के निर्माण में क व क व क क्रम में आने वाले शब्दों में - अ प्रत्यय के योग के कारण द्वितीय दीर्घ व्यंजन परिवर्तित हो जाता है।

चमार- वा	चमरा
लोहार-वा	लोहरा
बिहार-वा	बिहरा
सोनार-वा	सोनरा

इन रूपों में - वा प्रत्यय जोड़ कर दीर्घ रूपों की प्राप्ति होती है।

दीर्घ रूप संज्ञा प्रातिपदिक का अन्तिम दीर्घ स्वर बहुवचन निर्माण में ह्रस्व हो जाता है।

घोड़वा घोड़वन

बछवा बछवन

आकारान्त प्रातिपदिक स्त्रीलिंग बोधक -ई या प्रत्यय के संयोग व्यंजनान्त हो जाते हैं।

घोड़ + ई घोड़ी

गदह + ई गदही

लड़क + ई लड़की

क ख क ख क क्रम में आने वाले प्रथम पद में यदि अन्तिम शब्द ।र। होता है तो स्त्रीलिंग बोधक या प्रत्यय के योग के कारण अंतिम र लुप्त हो जाया करता है।

लोहार - इन लोहाइन

चमार - इन चमाइन

लेकिन इस रूप के अपवाद भी हैं।

भिखार भिखारिन

सोनार सोनारिन

यदि प्रथम पद का अंतिम वर्ण अल्पप्राण होता है और आगे वाले पद का प्रथम वर्ण महाप्राण तो प्रथम पद का अंतिम वर्ण भी महाप्राण हो जाता है।

बात - हई बाथई

लात - हई लाथई

बाप के -होई बाप होई

ध्यान देने योग्य है कि यह परिवर्तन व्यंजनों के कारण ही प्रतिबंधित है।प्रथम पद का अंतिम स्वर संधि रचना में कोई व्यवधान या परिवर्तन नहीं उपस्थित करता बल्कि उसका लोप हो जाता है।

यदि शब्दान्त में जपित स्वर इ आता है और उसके पूर्व अवर्गीय घोषा ध्वनि है तथा दूसरे पद की प्रथम ध्वनि भी स्वर्गीय घोषा है तो जपित स्वर लुप्त हो जाता है तथा स्वरान्त रूप व्यंजनान्त हो जाता है।

माग्गि - गवा : माग्गवा

हग्गि - गगल : हग्गगल

अब जब आदि रूपों के पश्चात् जब -इ पाप्रत्य जुड़ता है तो प्रथमपद के मध्य व्यंजन का द्वित्व हो जाता है।

अब-इ अव्वइ

जब-इ जव्वइ

कब-इ कव्वइ

क अ क अ क्रम में आने वाले पद के पश्चात् यदि -एड़ी प्रत्यय आता है तो निम्न परिवर्तन होता है।

इ ए माहि एड़ी महेoड़ी

शब्द के मध्य में आने वाला व्यंजन द्वित्व विकारी रूप में आने पर एक ही रह जाता है।

दुब्बा दुबो है

जब्बर जबो है

अब्बर अबो है

पूर्णांक संख्यावाची विशेषण में जब -ब प्रत्यय जुड़ता है तो अंतिम अनुनासिक ध्वनि लुप्त हो जाती है।

तीन + ब तीब

अध्याय-३

प्रत्यय विचार

प्रत्यय विचार

शब्द के जिस अंश में स्वतंत्रअर्थद्योतन की क्षमता नहीं होती तथा जो मूल प्रकृति,व्युत्पन्न प्रकृति तथा पदप्रकृति के आश्रय से उसके पूर्व या पश्चात् आकर अर्थवान होता है,उसे प्रत्यय कहते हैं।[1] के.एल.पाइक ने प्रत्यय की निम्न परिभाषा दी है--

" प्रत्यय वह पदग्राम है जो ध्वन्यात्मक एवं व्याकरणिक रूप से उस पदग्राम पर निर्भर करता है, जिसमें वह जुड़ता है। सामान्यत: इनमें प्रत्ययों का अर्थ बहुत मूर्त नहीं होता है। वह पदग्राम तथा पदग्रामों के समूह,जिस पर आश्रित रहता है,के प्रकार्य को परिवर्तित करता है।[2]

प्रत्यय की कार्यक्षमता के आधार पर इन्हें दो वर्गों में विभाजित किया जाता है।

(१) व्युत्पादक प्रत्यय और (२) व्याकरणिक प्रत्यय

व्युत्पादक प्रत्यय प्रातिपदिक या धातु के पूर्व या पश्चात् जुड़ कर व्युत्पन्न प्रकृति का निर्माण करते हैं। व्याकरणिक प्रत्यय धातु एवं प्रातिपदिक को पश्चात् आकर उसे व्याकरणिक अर्थ प्रदान करते हैं।व्युत्पादक प्रत्ययों में संश्लेषण की दृष्टि से १- पूर्व प्रत्यय एवं २- परप्रत्यय दो रूप होते हैं। पूर्व प्रत्यय सामान्यतया व्युत्पादक ही होते हैं।

व्याकरणिक प्रत्ययों में एक वर्ग ऐसा है जो धातु या प्रातिपदिक के बाद आकर पदों का निर्माण करता है। इस वर्ग को विभक्ति प्रत्यय कहा जाता है।[3] दूसरा वर्ग जिन पदों के बाद आकर उस पद का अन्य पदों से व्याकरणिक

१- बाबूराम सक्सेना- सामान्य भाषा विज्ञान,पृ० ८६।६०

२- पाइक- फोनेमिक्स, पृ० २३३

३-आउट लाइन्स आफ लिंग्विस्टिक एनालिसिस- पृ० ५५

अर्थ व्यक्त करता है । इसवर्ग को परसर्ग के नाम से अभिहित किया जाता है । धातु या प्रातिपदिक एवं विभक्ति प्रत्यय के मध्य युक्त संक्रमण होता है जब कि प्रातिपदिक और धातु तथा परसर्ग के मध्य मुक्त संक्रमण । व्याकरणिक प्रत्ययों में एक वर्ग ऐसा भी है जो आबद्ध रूप तो है पर वह किसी तरह के व्याकरणिक अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं करता वरन् वाक्यात्मक विधि या व्याकरणिक वृत्ति की ओर निर्देश करता है । इससे व्याकरणिक अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता वरन् अवधारण सूचित होता है । इस प्रत्यय को निपात कहा जाता है ।

विभक्ति प्रत्ययों के प्रयोग से एक साथ कई व्याकरणिक कोटियों की सूचना मिलती है किन्तु व्युत्पादक प्रत्ययों से सामासिक अर्थ अभिव्यक्त नहीं होते। व्युत्पादक प्रत्ययों का योग विभक्ति के पश्चात् नहीं होता । इस सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि व्युत्पादक रचना में विभक्तियों का लोप हो जाता है ।जब भी उसके पूर्व विभक्ति नहीं रह सकती ।

विभक्ति एवं परसर्ग में सामान्य भेद इतना ही है कि दोनों धातु तथा प्रातिपदिकों के पश्चात् ही आती हैं पर विभक्ति से पद प्रकृति[1] का निर्माण किया जाता है,किन्तु परसर्ग का प्रयोग पद के बाद ही होता है[2]।

प्रस्तुत पृष्ठभूमि में जब इस क्षेत्र की बोलियों पर सम्यक् विचार किया जाय तो प्रतीत होता है कि इस क्षेत्र में प्रकृति और प्रत्यय रूपों की व्यवस्था और उनका वितरण अवस्था भेद पर निर्भर है । कदाचित् किसी शिक्षित युवक के मुख से ऐसे भी शब्द सुनने को मिल जाते हैं जिनकी प्रकृति संस्कृत तत्सम है और प्रत्यय भी तत्सम है ।

१- डा० मु० ब्रप्रेति- हिन्दी प्रत्यय विचार-पृ० २४

२- ,, ,, ,, पृ० २५

इसी क्रम में तद्भव प्रकृति और तद्भव प्रत्यय के भी रूप देखने को मिलते हैं।

	त. प्र.	
हा	नि	निहा
लोह-	-आर	लोहार
उपज	-आउ	उपजाऊ

चूंकि बोलियों में संस्कृत तत्सम शब्दों का प्रयोग कम होता है इसलिए तत्सम प्रकृति और तत्सम प्रत्यय कम मिलते हैं : यथा-

दशा	दुर	दुरदशा
गति	,,	दुरगति

इसी तरह विदेशी प्रकृति विदेशी प्रत्यय या विदेशी प्रकृति,देशी प्रत्यय,अथवा देशी प्रकृति और विदेशी प्रत्यय एक साथ तात्र पदों का निर्माण करते हैं।

विदेशी प्रकृति	वि०प्र०	रूप
गरज	अल	अलगरज

प्रकृति	प्रत्यय	मिश्रित रूप
पण्डित(तत)	- आऊ	पंडिताऊ
फल ,,	- दार(फा.)	फलदार
रस ,,	- दार(,,)	रसदार
पंच ,,	- सर-	सरपंच

६.१ प्रत्यय संबंधी दृष्टिकोण-

<u>व्युत्पादक प्रत्यय-</u> व्युत्पादक प्रत्यय वे पदग्रामिक रूप हैं जो धातु या प्रातिपदिक के पूर्व या पश्चात् संयुक्त होकर नई धातु या प्रातिपदिक की रचना करते हैं। रूपविधान की दृष्टि से या तो ये धातु या प्रातिपदिक के पूर्व आते हैं या पश्चात्। इस दृष्टि से पूर्व आने वाले रूपों को पूर्व प्रत्यय और बाद वाले रूपों को पर - प्रत्यय कहा जाता है।

९.१.१ व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय -

इस क्षेत्र की बोलियों में अ-, अन-, अव-, उ-, दु- नि-, सु-, बे-, फिर-, दर-, भर-, दु-, ला- १५ व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय उपलब्ध हैं। इनमें वे प्रत्यय भी हैं जो संस्कृत तत्सम हैं। इन पूर्व प्रत्ययों का व्यवहार संज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण प्रातिपदिकों तथा धातुओं के पूर्व होता है। इनके प्रयोग से मूल प्रकृति के अर्थ में परिवर्तन भी हो जाया करता है।

(१) अ- यह हीनता एवं अभाव द्योतक पूर्व प्रत्यय है। संज्ञा के पूर्व आकर इससे संज्ञापद तथा विशेषण और क्रिया से क्रियाविशेषण के रूप तैयार होते हैं।

संज्ञा- -काल, -काज अकाल, अकाज

सं० विशेषण- अ- चेत, कूत- अचेत, अकूत

विशेषण विशेषण- अ- कलंकी अकलंकी

क्रि० विशेषण- अ- जान अजान

(२) अन-

संज्ञा विशेषण तथा क्रिया विशेषण के पूर्व इस पूर्व प्रत्यय का प्रयोग अभाव और निषेध के अर्थ में होता है।

संज्ञा संज्ञा अन- मेल अनमेल

क्रिया सं० अनमन

अन + संज्ञा अनहोनी, अनमेल

अन + क्रि० अनपढ़, अनगढ़

(३) अव- यह संज्ञा तथा विशेषण के पूर्व आता है। वितरण की दृष्टि से यह दक्षिणी बोलियों में नहीं प्राप्त होता।

पूर्व प्रत्यय + क्रि०वि० अवनारी

(४) -उ

इस पूर्व प्रत्यय का प्रयोग दिशानिर्देश तथा स्थिति-सूचना के लिए किया जाता है ।

उतरि (गढ़ल) उपरि (गढ़ल) , उतार

२- समास के अर्थ में भी इसका प्रयोग होता है -

उदंत (वह पशु जिसे दांत न जमा हो)

(५) औन-

पूर्ण संख्यावाची विशेषण से पूर्व- एक कम की अर्थाभिव्यक्ति के लिए इसका प्रयोग होता है ।

वैानदस, औनतिस केन्द्र सं० ६ उनदस

(६) कु - क

संज्ञा ,विशेषण और क्रियाओं के पूर्व हीनता के अर्थ में इसका प्रयोग किया जाता है । संज्ञा के योग से संज्ञा तथा विशेषण तथा विशेषण और क्रियाओं के योग से विशेषण बनते हैं ।

कु + संज्ञा - कुचाल

कु०-वि० - कुराली

क संपरिवर्तक प्रतिबंधित रूप में भी आता है - कपूत

(७) नि-निर

संज्ञा तथा क्रियारूपों के पूर्व इसका प्रयोग संज्ञा तथा विशेषण रूप तैयार करने के लिए किया जाता है । इससे नकारात्मक अर्थ की अभिव्यक्ति होती है ।

नि० + सं० नि रोग

निर+ संज्ञा निरबंस

,,+कि० वि० निरदयी

(८) सु~स

इस पूर्व प्रत्यय का प्रयोग श्रेष्ठता के अर्थ में संज्ञा तथा विशेषणों के के पूर्व होता है ।

सु + सं० सुकाल , सुफल

स + सं० सपूत

(९) बे-

संज्ञा तथा क्रियारूपों के पूर्व अभाव अर्थ में इस पूर्व प्रत्यय का प्रयोग होता है-

बे + सं० सं० बेकार, बेदम, बेइमान

(१०) ह- क्रिया में इसका प्रयोग करके विशेषण पद बनाया जाता है

हुइहर

इन पूर्व प्रत्ययों के अतिरिक्त कुछ विदेशी पूर्व प्रत्यय भी हैं जो तद्भव प्रकृति या देशज प्रकृति के पूर्व आते हैं ।

(११) सर- संज्ञा के पूर्व आकर ये विशेषण पदों का निर्माण करते हैं।

सरनाम, सरपंच

(१२) फिल- संज्ञा के पूर्व आकर ये संज्ञापदों का निर्माण तात्कालिकता के अर्थ में करते हैं ।

फिलहाल

(१३) दर- संज्ञा और विशेषणों के पूर्व आकर ये संज्ञापदों के या विशेषण पदों का निर्माण करते हैं ।

दरबार, दरअसल

(१४) ला- संज्ञा या विशेषण पदों के पूर्व आकर ये हीनता अर्थद्योतक संज्ञारूपों या विशेषणपदों का निर्माण करते हैं ।

लावारिस, लाइलाज

हिन्दी के परम्परागत व्याकरण ।अब-,ऐन,कम-,खुश,गैर-ना-,फी-,बद-बिन, बिला-,भर-,लाम-,हैड-,फी-।आदि को पूर्व प्रत्यय स्वीकार करते हैं पर ये सभी रूप स्वतंत्र अर्थवान इकाइयां हैं और आबद्ध अंश नहीं ।यद्यपि ये पूर्व प्रत्ययों की तरह प्रयुक्त अवश्य होते हैं ।

क.१२ व्युत्पादक परप्रत्यय-

व्युत्पादक परप्रत्यय धातु तथा प्रातिपदिक के पश्चात् लगकर व्युत्पन्न प्रकृति का निर्माण किया करते हैं। इस क्षेत्र की बोलियों में इन रचनात्मक प्रत्ययों का प्रयोग नवीन प्रातिपदिक रचना के लिए किया जाता है। ये प्रत्यय मूल प्रातिपदिक के अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं। इन प्रत्ययों में कुछ तो स्थानीय हैं और कुछ विदेशी हैं।

क.१२१ संज्ञा रूप बनाने वाले परप्रत्यय-

१- -वाह धातु में प्रयुक्त होकर यह संज्ञापद बनाता है।

चरवाह, हरवाह

२- -आउ अउवा

धातु में इस संयुक्तक: कार्य का द्योतन होता है

बनाउ, पढ़ाउ

३- -अका

इसके संयोग से संज्ञापद बनता है।

बइठका

४- -अक

धातु में इसके संयोग से संज्ञापद बनते हैं।

फाटक, बइठक

५- -आह

संज्ञापदों के पश्चात् लग कर संज्ञापद बनाता है। प्रारम्भिक संज्ञापद में आने वाला दीर्घस्वर प्रत्यय लगने के बाद ह्रस्व हो जाता है।

पूत -आह- पुताह

६- ई-

-वाह तथा -आह प्रत्यय से बने व्युत्पन्न रूप के पश्चात् यह प्रयुक्त होकर इस व्यापार का बोध कराता है। चूंकि यह स्त्रीलिंग प्रत्यय भी है इसलिए इससे इस लिंग का भी बोध होता है।

चरवाही- पुताहि

बिमार - बिमारी

७- - वार

संज्ञा में इस शब्द के प्रयोग से नए संज्ञा रूप का निर्माण होता है।

लोहार - लोहा

चमार - चाम

संज्ञा में इसके प्रयोग से विशेषण पद भी बनते हैं।

दूध - दुधार

८- -आरी

संज्ञा पदों में इनके संयोग से करने वाले का बोध होता है। प्रत्यय विधान के साथ ही मूल संज्ञा पद में आने वाला दीर्घस्वर ह्रस्व हो जाता है।

पूजा- पुजारी

दूध- दुधारि

जूआ- जुआरी

९- - वाठ

संज्ञा में इनके संयोग से संज्ञा रूपों का ही निर्माण होता है और मूल संज्ञापद का प्रथम दीर्घ स्वर लुप्त एवं द्वितीय दीर्घस्वर ह्रस्व हो जाता है -

नानी- नमिवाठर

मामी- मम्मिवाठर

काकी- कक्किवाठर

१०- - आड़ी

इसका संयोग धातु,संज्ञा तथा विशेषण रूपों में किया जाता है। इस स्थिति में एकारान्त प्रातिपादिक व्यंजनान्त हो जाता है।

तेल- तेलाड़ी

बाने- बनाड़ी

पाखे - पखाड़ी

११- -अउती

संज्ञा में इसका प्रयोग करके भाववाचक संज्ञा बनती है । प्रत्यय विधान में प्रथम दीर्घस्वर लुप्त हो जाता है।

बाप- बपउती बपौती

मान- मनउती-ब्रजी क्षेत्र में मनौती

१२. -अउड़ी

संज्ञा शब्दों के साथ इसका प्रयोग होता है । प्रत्यय विधान में प्रथम दीर्घस्वर ह्रस्व हो जाता है ।

हाथ- हथउड़ी

पाड़- पकडंडी

- अउड़ा संपरिवर्तक दीर्घता बोधक रूप की अभिव्यक्ति करता है।

१३- -वाला

संज्ञा शब्दों में इसका संयोग करके नवीन संज्ञा रूप बनाए जाते हैं।

गाड़ीवाला

फूलवाला

१४- - अउटी

संज्ञा शब्दों में संकुचन का अल्प शब्दों का निर्माण किया जाता है। प्रत्यय विधान में प्रारम्भिक दीर्घस्वर ह्रस्व हो जाते हैं।

चूना- चुनउटी

लाठ- लठउटी

१५- - अई

गांव - गंवई

मांड़ - मंड़ई

१६- -आई

संज्ञा में इसके प्रयोग से नवीन संज्ञा रूपों का निर्माण होता है ।

कुड़- कुड़ाई

लड़का- लड़काई

१७- -ई धातु में इसके संयोग से संज्ञापद बनते हैं ।

बहु- बहुरी , चढ़- चढ़ती

१८- -आन

विशेषण में इसे संयुक्त करके संज्ञापद बनते हैं। पर केन्द्रीय बोली में इस प्रकार के प्रयोग नहीं मिलते। ये प्रयोग केवल अवधी क्षेत्र के हैं।

गरम- गरमान

शरम- शरमान

बहु - बहुतान रूप सर्वत्र मिलता है।

१९- -अइला

संज्ञा में इसे संयुक्तकर विशेषण रूप प्राप्त होते हैं।

बनइला, घाइला

२०- आस धातु तथा संज्ञा एवं विशेषण पदों में संयुक्तकर संज्ञा रूप प्राप्त होते हैं।

मीठ- मिठासि

पीव- पिआसि

खा- खासि

२१- -इया विशेषण तथा संज्ञा पदों में इसके प्रयोग से नवीन संज्ञापद बनते हैं।

मुख- मुखिया

काम- कमियां

२२- -वान वानी

संज्ञा शब्दों में इसे संयुक्तकर अन्य संज्ञा शब्द बनते हैं।

गाड़ी- गाड़ीवान गाड़ीवानी

इक्कावान एक्कावानी

वानी संपरिवर्तक से व्यापार का बोध होता है।

२३- -हार

संज्ञा शब्दों में इसके प्रयोग से नवीन संज्ञापदों का निर्माण होता है।

घोड़ा- घोड़हार

२४- -वइया

धातु में इसका प्रयोग करके संज्ञापद बनता है।

मूत- मुतवइया

२५- वइया ~ वक्कड़ ~ ऊ

प्रत्यय धातु के पश्चात् लगकर विशेषण पदों का निर्माण करते हैं। यदि ध्यान से देखा जाए तो √मल, √पी, √मूत, √मुत, √घुम धातु भी अपने बाद- अक्कड़ प्रत्यय ग्रहण करती हैं। √खा धातु के साथ तीनों संपरिवर्तक प्रयुक्त होते हैं -

खवक्कड़

खवइया

खऊ

लेकिन रोवक्कड़ रूप प्राप्त नहीं होता, वहाँ रोवना प्रयुक्त होता है।

२६-ंहा

संज्ञा पदों में संयुक्तकर संज्ञा शब्द भी बनाए जाते हैं।

तुम- तुमंहा

पीउ- पिवंहा

ऊ > उ

ई > इ

उ > व इस प्रकार के ध्वन्यात्मक परिवर्तन भी हो जाते हैं।

२७- -स इस पर प्रत्यय के संयोग से संज्ञा पद की प्राप्ति होती है।

उमस

२८- - कर

संज्ञा में प्रयोग कर संज्ञा पद बनते हैं।

मुड़- मुड़कर

गोड़- गोड़कर

कम्मा- कमकर

२६- पन्

विशेषणों प्रयुक्त कर भाववाचक संज्ञा रूप बनते हैं

बड़- बड़प्पन

३०- इयल

क्रिया एवं संज्ञा में जुड़ता है।

मरियल, अड़ियल

३१- संज्ञा के साथ जुड़ कर संज्ञा शब्द का निर्माण करता है।

मांड़ मंडुआ
रांड़ रंडुआ

३२- ही

संज्ञा में इसके प्रयोग से संज्ञा तथा विशेषण पदों का निर्माण होताहै। प्रत्यय विधान में निम्न ध्वनिग्रामिक परिवर्तन होते हैं।

ऊ > ह टूटा + ही = टुटही
आ > ऊ धान + ही = धनही
 गुन + ही = गुनही

इन प्रत्ययों के अतिरिक्त कुछ विदेशी प्रत्यय भी हैं जो प्रचलित हो रहे हैं पर इनके प्रयोग शिक्षित लोग ही कर पाते हैं।

३२- खाना-

संज्ञा में प्रयुक्त होकर नए संज्ञा रूप का निर्माण करता है।

दवाखाना - डाकखाना

३३- बाज

धातु में इसके प्रयोग से संज्ञा रूप बनते हैं।

चालबाज

धोखेबाज

३४- -आर

इससे व्यवसायबोधक रूप निर्मित होते हैं।

चाम- -आर चमार
लोहा- ,, लोहार
सोना- ,, सोनार

८.१.२.२ विशेषणवाची पर प्रत्यय-

३४- -ऊ

धातु में इसे संयुक्त कर विशेषण बनते हैं। प्रत्यय विधान के साथ ही धातु रूप के अंतिम व्यंजन का द्वित्व हो जाता है।

भग्गु , लब्बु , पेट्टु

३५- -इत

धातु में प्रयुक्त कर कर्ता के अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। प्रत्यय विधान में निम्न ध्वन्यात्मक परिवर्तन हो जाते हैं।

प्रथम दीर्घस्वर ह्रस्वस्वर
अंतिम दीर्घस्वर लुप्त

चढ़ चढ़इत
बोझा बोझइत
काठी कठइत

३६- इक
धातु में इसके प्रयोग से विशेषण बनते हैं।

रीझ - रीझिक

३७- -ला

संज्ञा में संयुक्तकर विशेषण रूप बनता है ।

गांठि - गंठिला

-हा प्रत्यय दिशावाची भी है -

दक्खिनहा, पुरुबहा

इसी में - ई स्त्री प्रत्यय संयुक्त कर दक्खिनही, पुरुबही जैसे स्त्रीवाची रूपों का निर्माण होता है ।

३८- ऐही-

संज्ञा में संयुक्त कर विशेषण पद बनते हैं ।

गांजा- गंजेड़ी

मांड़ि० - मंड़ेड़ी

३९- -आउत भी

-अउत से सम्बन्ध की अभिव्यक्ति होती है ।

मामी- ममिआउत (बहिन)

फफा-

ऐसी संपरिवर्तक केवल शिक्षित लोगों में प्रयुक्त होता है ।

४०- -अड़

संज्ञा पदों में इसके प्रयोग से विशेषण बनता है ।

आड राति - रतअड़

मांख मंखड़

पाड़ पखड़

४१- -अंड़

संज्ञा में प्रयुक्तकर विशेषण पद बनाते हैं।

तेल- तेलअंड़

४२- -ठा

विशेषण रूप में संयुक्त हो कर विशेषण पद का निर्माण करता है। तथा मूल प्रकृति की अंतिम महाप्राण ध्वनि अल्पप्राण हो जाती है। और उस पर अनुनासिकता का आगम भी जाता है।

सूख- ठा सुकंटा

-टा में -ई स्त्री प्रत्यय जोड़ कर स्त्रीवाची विशेषण का निर्माण होता है।

सूख + टी - सुकंटी

४३- -था

यह प्रत्यय का प्रयोग क्रमवाची संख्यावाची विशेषणों के निर्माण के लिए किया जाता है।

चार- चउथा

४४- -सर

दो तथा तीन पूर्ण संख्यावाची विशेषणों के पश्चात् इस पर प्रत्यय का प्रयोग क्रमवाची विशेषण के निर्माण के लिए होता है।

दुइ- दुसर) केन्द्र ११,१२, में दुसरा तिसरा
)
तीन- तीसर)

४५- -वां

पांच पूर्ण संख्यावाची विशेषण के पश्चात् क्रमवाची विशेषण बनाने के लिए सभी पूर्ण संख्याओं में इस पर प्रत्यय को प्रयोग होता है। प्रत्यय विधान में प्रथम व्यंजन के बाद आने वाला दीर्घस्वर ह्रस्व हो जाता है।

पांच- पंचवां

सात - सतवां

केन्द्र सं० १०,११,१२ में पंचवां तथा इसके आगे की क्रमवाची संख्याओं के लिए पांच के आगे, सात के आगे रूप प्रयुक्त होता है।

४६- -हरा सरा बाल

पूर्ण संख्यावाची विशेषणों के पश्चात् इस प्रत्यय का प्रयोग का आवृत्ति वाची विशेषणपदों का निर्माण होता है । प्रत्यय विधान में निम्न ध्वन्यात्मक परिवर्तन भी जाते हैं।

ए > ए एक- एकहरा
उ > ओ दु - दोहरा
ई > ए तीन- तेहरा

-सरा संपरिवर्तक केन्द्र सं० १०,११,१२ मेंप्रयुक्त होता है ।

एकसरा, दुसरा

-हरा सरा में -ई स्त्रीवाची प्रत्यय जोड़ कर
एकहरी एकसरी आदि रूपों का निर्माण होता है ।

बाल संपरिवर्तक केन्द्र सं० १० में प्राप्त होता है ।

दोबाल, तेबाल

४७- -आर

संज्ञा शब्दों में इसके प्रयोग से विशेषण पदों का निर्माण होता है ।

दीर्घस्वर ह्रस्व
राखि- रखिआर
बांस- बंसिआर

-०-

- अन

इसके योग से भाववाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं।

वि.	प्र.	व्यु.प.
लूट	-अन	लूटन
भाड़	,,	भाड़न

- अस एं अ ट म-ई

इससे विधिवाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं।

वि.		
तेर	-अस	तेरस
चउद	-अस	चउदस

ए संख्यावर्तक पांच, छ, एवं सात के पश्चात्, -ट -छ के पश्चात् -अ दो और तीन के पश्चात् तथा -मी नौ और दस के पश्चात् वाचक संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों का निर्माण करते हैं। छ- के पश्चात् दो प्रत्यय लग जाते हैं।

पांच	-एं	पचएं
छ	-एं	छटएं
सात	-एं	सतएं
दुइ	-	दुइन
तीन	-	तीन
नउ	-मी	नउमी
दस	-मी	दसमी

-आई

इस प्रत्यय के योग से भाववाची एवं वस्तुवाची संज्ञा प्रातिपदिकों का निर्माण होता है।

सच	-आई	सच्चाई
झूठ	-आई	झुठाई
चिकन	-आई	चिकनाई
मोर	-आई	मोराई

एक	-आई	एकाई
दस	-आई	दसाई

-आइन

इसके योग से संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं।

वि.	प्र.	व्यु.प.
खा	-आइन	खाइन
कच्चा	,,	कचाइन
फीका	,,	फीकाइन

यह प्रत्यय संज्ञा प्रातिपदिकों में जुड़ कर विशेषण रूप बनाता है।

दूध	-आइन	दुधाइन
म्हा	-आइन	म्हाइन
मछरी	-आइन	मंछरिआइन

-आई

इससे भाववाचक संज्ञा रूप निर्मित होते हैं।

वि.	प्र.	व्यु. रू.
मोट	-आई	मोटाई
गोर	-आई	गोराई
करिया	-आई	करिअई
पीयर	- आई	पियराई

- अउती

इससे संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है।

बूढ़	-अउती	बुढ़उती

-एर

प्रत्यय योग से संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है।

आन्ह	-एर	अन्हेर

- कड़ा

पूर्णसंख्यावाची विशेषण में इसे संयुक्तकर समूहवाची रूप का निर्माण होता है ।

सौ - कड़ा सैकड़ा

लघुता बोधक-

-इया

पाई -इया पइया
बहिनि - बहिनियां
मेहरि मेहरिया

-ई

फरसा -ई फरसी

-ऊ

लड़का -ऊ लड़कू

५.२ व्याकारणिक प्रत्यय -

संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण रूपतात्त्विक अपने विकारी रूप में विभक्तियों का संयोग करती है। इन विभक्तियों से सम्मिलित अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। संज्ञा प्रातिपदिक के पश्चात् संयुक्त होने वाली विभक्ति से कारक, लिंग, एवं वचन की सम्मिलित त्रिधा अभिव्यक्ति होती है एवं धातुओं के पश्चात् संयुक्त होने से लिंग, वचन, वाच्य, काल एवं रीति की। इन विभक्ति प्रत्ययों का निरूपण संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया विशेषणों के प्रसंग में होगा। विभक्ति प्रत्ययों में एक ऐसा भी वर्ग है जो त्रिपदों के पश्चात् संयुक्त होता है। यत्संज्ञा शब्दरूप है जिसके प्रयोग से पद के मूल अर्थ में बल अथवा अवधारण का भाव सन्निहित हो जाता है। इन शब्द रूपों का प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण क्रियाविशेषण पदों के पश्चात् होता है।

इस क्षेत्र की बोलियों में ।तक। ।त। ।न। ।भर। ।भी। ।ही। ।इ। ।ठ। ।टै। ।गो। प्रत्ययों का प्रयोग मिलता है।

१- ।तक।

सं० चिट्ठी तक

सर्व. सभी तक

क्रि.वि. यहां तक केन्द्र २ यहां तक

(क चिट्ठी तक नाहीं लिखइ)

२- ।त। इससे निश्चय एवं आग्रह व्यक्त होता है।

संज्ञा- नाकि त बकि गइहि

केन्द्र २ नाकि त बकि गइल

केन्द्र ७,८ नाक त बकि गइ।

सर्व. हम त (न जाब)

क्रि.वि. भेयर त (लागी)

क्रियापद आयड त।

।ह। संपरिवर्तक हलन्तान्त पदों के बाद भी आता है।

मेहरिह के (मारी)

मेहरिह क (लोचार)

७- ।ही। इसका प्रयोग क्रियाविशेषणों के बाद होता है।

अखनीं

८- टे गो

संख्यावाची विशेषणों के पश्चात् इनका प्रयोग होता है।

एकटे , दुइ टे

केन्द्र २,१०,११ में टे के स्थान पर इसका प्रयोग होता है।

संयुक्त रूप-

वितरण की दृष्टि से दो या प्रत्यय कभी दो भी साथ साथ आते हैं।

बुद ह न

कुच्छ ठ त

राति ठ भर

अबह हं

सुतलेह पर

अपनेह तक

तोहरेह में

भर क

में से

में क

(कालिह) तक क , तक न , तकलेहं पर , भर तक (कालिहयह) भर न ,हीं से,

(रूप) हीं मा (तोमो) ह मा, हल्हन,

यदि इन रूपों पर ध्यान से विचार किया जाय तो स्पष्ट होता है ये एक श्रेणी क्रम में अपना रूप नहीं निर्धारित करते । कहीं निपात + निपात कहीं परसर्ग निपात कहीं-कहीं निपात + परसर्ग की संगति दिखाई पड़ती है । कहीं-कहीं तीन तीन रूप एक साथ आ जाते हैं -जैसे-

घर-ह तक न , महुइ ह पर त , हान्हिक पा न ।

केन्द्र सं० १०,११,१२,१३ में इस तरह के प्रयोग नहीं मिलते । वितरण की दृष्टि से सभी रूप किसी न किसी रूप में एक दूसरे से प्रभावित हैं ।

अध्याय-४

संज्ञा

संज्ञा

संज्ञा रूपतालिका अपने व्याकरणिक अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए प्राति-पदिकों के पश्चात् विभक्तियाँ ग्रहण करती हैं। मूलप्रातिपदिकों से केवल वस्तु के सत्व का बोध होता है जब कि विभक्तियाँ प्रातिपदिक के पश्चात् संयुक्त होकर प्रातिपदिक को वाक्य प्रयोग पूर्ण शक्ति प्रदान करती हैं तथा स्वयं उसके लिंग, वचन तथा कारक का स्पष्टीकरण करती हैं। कभी कभी मूल व रूप में लिंग निर्धारक किसी भी प्रत्यय का प्रयोग नहीं होता। ऐसी स्थिति में लिंग निर्णय वाक्यात्मक स्तर पर सन्दर्भमात्र से ही हो पाता है। इस दृष्टि से संज्ञा प्राति-पदिकों को दो वर्गों में रखा जा सकता है।

क१- मूल संज्ञा प्रातिपादिक - इन रूपों में लिंग एवं वचन बोधक प्रत्यय नहीं जुड़ता है। जैसे-

काम्
नाम्
बाम्
पाप्
हाए्

क२- व्युत्पन्न प्रातिपदिक-

इनमें एक या अधिक व्युत्पादक प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

आदि

संज्ञा प्रातिपदिक स्वरान्त भी होते हैं और व्यंजनान्त भी प्रस्तुत जनपद की चारों बोलियों में खड़ी बोली की तरह।अ। शब्दान्त में तभी आता है जब वह संयुक्त व्यंजन के पश्चात् आता है। स्वरान्त में प्रयुक्त स्वर ध्वनिग्रामों की दृष्टि से यहाँ की बोली में निम्न स्वरों में अन्त होने वाले प्रातिपदिक मिलते हैं।

- अ

नाम्ह
बाम्ह
[illegible]

-ठ ड़

मूर्धन्य स्पर्श,अल्पप्राण,अघोष ट शब्दांत में कहीं भी प्रयुक्त नहीं होता है ।ठ। के स्थान पर इसका सहस्वन ।ड़। प्रयुक्त होता है ।

मूल	विकृत	
राड़	राड़ि	केन्द्र ५,६,७,८,९ में राड़ ,लांड़
लांड़	लांड़ि	
पेड़		
लेंड़		
रेंड़		

-द

मूल	नाद्
	पाद्
विकृत	नादि
	नाद-अ

-ब गरीब्

-ब मतीब्

अनाब्

महाप्राण-अघोष व्यञ्जनान्त प्रातिपदिक-

- ख मूल

पाख्

लाख्

ठाख्

विकृत-

आंखि	आंख-अ	केन्द्र ५,६,७,८,९,१४,१५ आंख,राख,कांख
राखि	राख-अ	
कांखि	कांख-अ	

- ट्   मूल

  काट्

  लाट्

विकृत-

  सौंटि   सौट-ए

-थ्   नाथ्

  हाथ्

  माथ्

  लाथ्

- फ्   गाँफ्

  माफ्

  साफ्

  सराफ्

-छ   काछ

  रिच्छ

महाप्राण घोष व्यंजनान्त प्रातिपदिक-

- घ्   बाघ्

  घाघ्

  नाघ्

-ढ   ढ़

मूर्धन्य घोष महाप्राण ।ढ। वितरण की दृष्टि से अंत में कहीं नहीं आता। इसके स्थान पर ।ढ़। उपस्वन का प्रयोग होता है।

  गाढ़

-ध   बाध्

  बराध्

  मुआध्

अल्पप्राण पार्श्विक-

ढेल्

तेल्

मेल्

लुण्ठित व्यंजनान्त-

घर्

बर्

फर्

कपार्

बोसार्

अर्द्धस्वर-

य-

केन्द्रीय बोली में ।य। ।व। में अन्त होने वाले प्रातिपदिक नहीं मिलते। उनके स्थान पर क्रमश: ।इ। ।उ। का प्रयोग होता है ।

गाइ	गाय	केन्द्र ३ गइवा	केन्द्र ७,८	गाय
नांउ	नावं			

ख. प्रातिपदिकों के रूप-

इस क्षेत्र की बोलियों में लघु,मध्यम एवं दीर्घ ये तीन रूप तक प्राप्त होते हैं किन्तु यह निश्चित नहीं है कि प्रत्येक रूपों के उदाहरण प्राप्त हों। कभी किसी रूप का लघु और दीर्घ रूप तो मिलता है पर मध्यम रूप नहीं प्राप्त होता । अधिकांशत: लघु,मध्यम एवं दीर्घ रूप ही प्राप्त होते हैं।

चमार	चमरा	चमरवा	
बेटा	+	बेटवा	बेटवना
घोड़ा	+	घोड़वा	+

लुण्ठित व्यंजनान्त (२) व्यंजनान्त प्रातिपदिक मध्यम रूप भी रखते हैं । रूप विधान में क क वा क क्रम में दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है तथा व्यंजनान्त प्रातिपदिक स्वरान्त हो जाता है।

लोहार लोहरा

सिआर सिअरा

सोनार सोनरा

अकारान्त,आकारान्त एवं व्यंजनान्त प्रातिपदिकों के लघु रूप दीर्घरूपों के निर्माण में आकारान्त हो जाते हैं । दीर्घस्वरान्त प्रातिपदिक का दीर्घस्वर लुप्त हो जाता है ।

र वा धा- धरवा

फा- फरवा

फारसा- फारसवा

लापा - लापवा

लपड़ा - लपड़वा

इकारान्त प्रातिपदिकों के लघु रूप आकारान्त होकर दीर्घ रूपों का निर्माण करते हैं । क वा इ क्रम में मध्य स्वर का दीर्घ रूप ह्रस्व हो जाता है ।

भाइ - भइवा

गारि - गरिवा

उकारान्त तथा ऊकारान्त रूप भी अपने दीर्घ रूप में आकारान्त होते हैं लेकिन यदि वे मूल रूप में स्त्रीलिंग वाची होते हैं तो ।आ।के पूर्व स्त्रीलिंग बोधक प्रत्यय ।इ। भी संयुक्त हो जाता है । मूल या लघु रूप का अंतिम दीर्घस्वर ह्रस्व हो जाता है ।

बाहु - बहुवा

क वा क ऊ क्रम में मध्यवर्ती दीर्घस्वर भी ह्रस्व हो जाता है ।

साहु - सहुवा

बाहु - बहुवा

सभी व्यंजनान्त एकाक्षर शब्द जिनकी रचना क आ क प्रणाली पर होती है-
दीर्घ रूप रखते हैं ।

काम - कमवां

चाम - चमवां

मध्यम रूप की प्राप्ति मूल प्रातिपदिक में -आ संयुक्तकर तथा दीर्घ रूप की
प्राप्ति -अवा संयुक्त कर की जाती है । सामान्यत: दीर्घ रूप मूल या लघु
एवं दीर्घ रूपों से भी निर्मित होते हैं । दीर्घ रूप -अवा -इया -आ,
-वा संयुक्त कर निर्मित होते हैं ।

संज्ञा मूल प्रातिपदिकों में कुछ ऐसा वर्ग भी है जो लिंग द्योतन के लिए
अपने बाद कोई प्रत्यय नहीं ग्रहण करता, वरन् सन्दर्भ से या वाक्य प्रयोग से
अपना लिंग स्पष्ट कर देता है ।

पु० बरदा स्त्री गाइ

किन्तु अधिकांश तथा लिंग प्रतीति के लिए संज्ञा रूप अपने बादप्रत्यय ग्रहण किया
करते हैं । ये प्रत्यय स्वरान्त भी होते हैं एवं व्यंजनान्त भी ।

२६.१ स्वरान्त पुलिंग प्रातिपदिक-

-अ	गिद	
	सिद	
-आ	बरदा	केन्द्र ३ बरधु १० बाघु बरद्
	घोड़ा	
	बछवा	केन्द्र १४,१५ बाछा
-इ	?	
-ई	पानी	
-उ	घाउ	केन्द्र ७,८ पिरकी -घाव
	साउ	
-ऊ	काऊ	
	बाबू	
-ए	दूबे	
-ओ	कोदो	

१५.३ स्वरान्त स्त्रीलिंग प्रातिपदिक-

-अ		
-आ	अक्किआ	केन्द्र १४,१५ आखी
	नदिआ	
	मरिआ	
-इ	गाइ	
-इ	नाकि	केन्द्र २ नैकुा, केन्द्र ४,५ नाक
	आंखि	
-ई	ओसारी	
	पनीरी	
	लकड़ी	
-उ	सासु	केन्द्र ४,५ ,७,८,१४,१५ माए
	मासु	
-ऊ	आलू	

१५.४ व्यंजनान्त स्त्रीलिंग प्रातिपदिक-

केन्द्रीय बोली में व्यंजनान्त स्त्रीलिंग,प्रातिपदिक प्राय: नहीं मिलते किन्तु कुछ केन्द्रों में व्यंजनान्त रूप भी प्राप्त होते हैं ।

केन्द्र ७,८,६,१०,११,१४,१५

-क्	नाक्	
-ह्	पांह्	
-ग्	आग्	१५ आगि
-घ		
-च्	आंच्	
-छ्	कांछ्	
-ज्		
-झ्	झांझ्	
-ट्	टाट्	
-ठ्	कंराठ	

-ड -ड़	गाड़, राड़
-प्	कांप्
-फ्	झींफ्
-ह्	पीह्
-म्	नाम्
-त्	पात्
-थ्	साथ्
-द्	नाद्
-ध्	साध्
-न्	हान्
-म्	नीम्
-र्	थार्
-ल्	झील्
-य्	पाय्
-व्	नाव्

इन मूल प्रातिपदिकों में स्वत: लिंग द्योतक शक्ति होती है । इनके अतिरिक्त प्राति-पदिकों का वह वर्ग है जो लिंग द्योतक प्रत्यय ग्रहण करता है । यथा निम्न स्त्रीलिंग प्रत्यय प्राप्त होते हैं ।

मूल प्रातिपदिक	प्रत्यय	व्युत्पन्न प्रातिपदिक
घोड़ +	ई	घोड़ी
मदद +	ई	मदमी

विचारणीय बात यह है कि ये प्रत्यय मूल रूप में ही संयुक्त होते हैं ।

प्रत्यय	मूल प्रातिपदिक	व्युत्पन्नप्रातिपदिक
- इ	भैंड़ा	भैंड़ि
	पिशाच्	पिशाचि
	बांह्	बांहि
	नाह्	नाहि

-उ कपास कपासु

गास् सासु

पिवाज् पियाजु

ये दोनों स्त्रीवाची प्रत्यय प्रमुखत: केन्द्रीय बोली में प्रयुक्त होते हैं। तथा कदाचित् केन्द्र सं० २,३,४,५ में।

-इ बामन् बामनि

-रूप सर्वत्र मिलता है।

-इनी इनि लरिक् लरिकिनी

दुलह् दुलहिनी

इनि दुलह दुलहिनि

सांप् सांपिनि

-इनी प्रत्यय ७,८,९ में प्रयुक्त होता है -इनि रूप केन्द्रीय बोली में। केन्द्र १०,११तथा १२ में -इन् प्रत्यय भी प्रयुक्त होता है।

सांप् सांपिन

-आइनि आइन पण्डित् पण्डिताइनि

नउवा नउवाइनि

लोहार लोहाइन

-रा बेह बेहरा

रचनात्मक संगठन को ध्यान में रख कर यदि देखा जाय तो स्त्रीलिंग निर्माण में कुछ रूप स्वच्छन्दता का पालन करते हैं।

गदहा- ई गदही

घोड़ा-ई घोड़ी

बरधा-ई गाइ

भय्या भाभी

मम्मा मामी

बब्बा दीदी

आ. वचन

संज्ञा मूल रूप से भी वचन की अभिव्यक्ति हो जाती है किन्तु यह वाक्य स्तर पर ही सम्भव हो पाता है। प्रातिपदिक में वचन घोतक प्रत्यय भी जोड़ा जाता है किन्तु अधिकांशतया यह स्थिति विकृत रूप में ही सम्भव हो पाती है। पुलिंग व्यंजनान्त प्रातिपदिक अपने मूल रूप में अपने पश्चात् -० प्रत्यय ग्रहण कर बहुवचन की अभिव्यक्ति करते हैं किन्तु इसकी प्रतीति क्रिया रूपों से तथा कदाचित् विशेषणों से भी हो जाया करती है।

१- प्रत्यय -० लड़का

गाइ

घा

व्यंजनान्त स्त्रीवाची प्रातिपदिकों को बहुवचन में प्रयोग करने के पहले समूहवाची या संख्यावाची विशेषणों का प्रयोग होता है।

एक रात् ,दुइ रात् ,ढेरह रात्

विकृत रूप-

मूल रूप में निम्न प्रत्ययों को जोड़ कर विकृत रूप बहुवचन की रचना होती है। मूल रूप में -न प्रत्यय जोड़ कर बहुवचन की रचना की जाती है।

	ए.व.	ब.व.
प्रत्यय -न	कुकुर	कुकुरन
	हाथी	हाथिन
	बरधा	बरधन

मूल संज्ञा प्रातिपदिकों के दीर्घ आकारान्त रूपों में -वन के योग से तथा स्त्रीलिंग आकारान्त रूपों के पश्चात् -वन प्रत्यय के संयोग से विकृत रूप बहुवचन का निर्माण होता है।

प्रत्यय	मूलप्रातिपदिकदीर्घ रूप	व्युत्पन्न रूप ब. व.
-वन	बछना	बछनन
	घोड़वा	घोड़वन
	नधवा	नधवन

बन्	बछिया	बछियन
	गइया	गइयन
	बछियवा	बछियवन

घ. कारक रचना

संज्ञा का मूल रूप (सर्वनाम एवं विशेषण भी) वाक्य में अन्य पदों से सम्बन्धाभिव्यक्ति में जो रूप ग्रहण करता है उसे कारक कहा जाता है । रूप-रचना में संज्ञा या तो मूल रूप में ही प्रयुक्त होती है या पीछे आने वाले प्रत्यय के प्रभाव से ध्वन्यात्मक परिवर्तन करती है । इन दोनों रूपों को क्रमशः मूल तथा विकारी रूप कहा जाता है ।

मूल- इसके पश्चात् -0 विभक्ति का ही प्रयोग होता है और यह रूप कर्ताकारक में प्रयुक्त होता है ।

विकारी- मूल रूप में विभक्ति का योग किया जाता है ।

यहाँ की बोली में कारकीय रचना में संज्ञाप्रातिपदिक के मूल, मध्यम एवं दीर्घ तीनों रूपों का प्रयोग मूल कारक में होता है ।

बेटा ह ।
बेटवा ह।
बेटवना ह।

घ.१ मूल कारक

संज्ञा के मूल,लघु,मध्यम एवं दीर्घ तीनों रूप इस कारक में -ø विभक्ति के साथ प्रयुक्त होते हैं ।

घ.२ विकारी रूप- एकवचन

अधिकांशत: मूल रूप में -0 विभक्ति लगा कर की जाती है ।

घा -0

काट-0

हाट-0

हाथी-0

बुआ-0

कारकीय रचना में ह्रस्व स्वरान्त प्रातिपदिकों को दीर्घ स्वरान्त तथा व्यंजनान्त प्रातिपदिकों को -ए कारान्त कर दिया जाता है ।

मालू क पाँखि

गाई क दूध

घरे से भगाय

सापे के बच्चा

आकारान्त प्रातिपदिकों में विभक्तिरचना से कोई ध्वन्यात्मक परिवर्तन नहीं होता।

बाबा क मरिवा

पुलिंग एवं स्त्रीलिंग १

मूल ए.व.	मूल ब.व.	विकारी ए.व.	विकारी ब.व.
-आ	-आ	-आ	-अन

इस वर्ग के अन्तर्गत ।बाबू। ।बछिया। ।फगुए। आदि संज्ञा प्रातिपदिक हैं।

पुलिंग २

मूल ए.व.	मूल ब.व.	विकारी ए.व.	विकारी ब.व.
-0	-0	-ऐ	-एन

इस वर्ग के अन्तर्गत ।गिद। की तरह व्यंजनद्वित्व के कारण आकारान्त तथा ।बापु।गांपु। आदि व्यंजनान्त प्रातिपदिक हैं।

गिद्ध गिद्ध गिद्द गिद्दे(के) गिद्दन (के)
बापु बापु बाप बापे (से) बापेन(से)

पुलिंग -३ स्त्रीलिंग-२

मूल ए.व.	मूल ब.व.	विकारी ए.व.	विकारी ब.व.	सम्बोधन
-ई	-ई	-ई	-अन	-आ

इस वर्ग के अन्तर्गत ईकारान्त पुलिंग प्रातिपदिक है। ।धोबी। ।माली।इत्यादि।

धोबी धोबी धोबी धोबिअन धोबिआ

पुलिंग ४ स्त्रीलिंग ४

मूल ए.व.	मूल ब.व.	विकारी ए.व.	विकारी ब.व.	सम्बोधन
-ऊ	-ऊ	-ऊ	-ऊन	-आ

इस वर्ग में ।नाऊ। बाबू। आदि पुलिंग प्रातिपदिक हैं।

ये विभक्तियां संयोगात्मक स्थिति में होती हैं, तात्पर्य यह है कि मूलप्राति-पदिक तथा विभक्ति में युक्त संक्रमण होता है । इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे व्याकरणिक रूप भी प्रयुक्त होते हैं जो व्याकरणिक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं। इन्हें कारक परसर्ग कहा जाता है । ये विभक्तियों की कोटि में नहीं रखे जा सकते क्योंकि विभक्तियां पदों का निर्माण करती हैं पर परसर्ग में यह शक्ति नहीं होती । विभक्ति और प्रातिपदिक में युक्त संक्रमण होता है जब कि प्रातिपदिक और परसर्ग में मुक्त संक्रमण । परसर्ग पदों के बाद प्रयुक्त होकर मिश्रपद का दूसरे पद से सम्बन्ध व्यक्त करते हैं जब कि विभक्तियां मूल प्राति-पदिक में ही जुड़ती हैं ।

इस क्षेत्र की बोलियों में ।कै~रै~नै । ।के । ।का। ।तक। ।पा। ।पर। ।में। ।बाहू। ।से। परसर्ग उपलब्ध हैं । इनसे व्याकरणिक या वाक्यात्मक सम्बन्ध की अभिव्यक्ति होती है ।

(१) कै~रै~नै

यह परसर्ग संज्ञा व सर्वनामों के पश्चात् आता है ।

संज्ञा पद- आदिमी परसर्ग - कै आदिमी कै

रै~नै इसके संपरिवर्तक हैं जिसमें पहले का प्रयोग सर्वनाम, पुरुषवाचक उत्तमपुरुष एक वचन के विकृत रूप में तथा दूसरे का निजवाचक सर्वनाम के विकृत रूप में होता है ।

सर्वनाम- हम परसर्ग - रै हमरै
आप -नै अपनै

(२) ।तक। संज्ञा पदों के पश्चात् इसका प्रयोग होता है । विकृत रूप के निर्माण में अकारान्त एवं आकारान्त संज्ञापद एकारान्त हो जाते हैं ।

घरे तक
भाएं तक
नदी तक

(३) - पा

इसका व्यवहार संज्ञा (सर्वनाम तथा क्रियाविशेषण) पदों के पश्चात होता है।

संज्ञा - घो पा , क्षान्मी पा

(सर्वनाम - हमो पा, तोमो पा।

क्रि०विशे० - गहले पा, बदले पा।)

(४) भर

इसका प्रयोग संज्ञापदों के पश्चात् होता है तथा इनसे विशेषण तथा क्रियाविशेषण वाक्यांश बनते हैं।

गज भर , पाठ भर, मुट्ठी भर, दिन भर

(५) में ~ म ~ नै

संज्ञा पदों के बाद आकर अधिकरण,काल,अवस्था आदि व्यक्त करता है।

म- केन्द्र सं० १०,११ में प्राप्त होता है।

बीह म घुसल।

नै- अहीर जाति के कुछ अशिक्षित लोग इसका प्रयोग करते हैं।

घरे नै

(६) ।से।

इसका प्रयोग संज्ञा(सर्वनाम,विशेषण तथा क्रियाविशेषण)पदों के पश्चात् होता है।

घो से, नाकी से, बाहू से

(७) ।क।

यह परसर्ग संज्ञापदों (क्रियार्थक संज्ञाओं में भी) के पश्चात् होता है।

सोना क सुनरी, लड़का का कुत्ता

(८) ।बदे।   लड़का बदे , तोहरे बदे

५.१ पारसर्गों के संयुक्त प्रयोग-

संज्ञापदों के पश्चात् व्याकरणिक सम्बन्धाभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त होने वाले ये पारसर्ग कभी संयुक्त रूप में भी प्रयुक्त होते देखे जाते हैं।

पा से-	गुटिला पा से गिरल
पा में-	मेरे पा में एक हंगाक
में से	ऐ मेंसे क्वन चाहीं

इन पारसर्गोंके अतिरिक्त कुछ ऐसे भी हैं जो व्याकरणिक एवं वाक्यात्मक स्तर पर भिन्न स्थिति भी रखते हैं किन्तु कदाचित् पारसर्ग की तरह प्रयुक्त होते हैं।

१-	-आगे	बौनके आगे
२-	और	घरे और
३-	कारन-	तोको कारन
४-	नियर	हमरो नियर
५-	पाछे-	घरे के पाछे
६-	बदे	तोहरो बदे, हमरो बदे
७-	बिना-	हमरे बिना, तोहरे बिना
८-	संघे-	बोको संघे, लड़का संघे।

अध्याय-५

सर्वनाम

सर्वनाम

सर्वनाम संज्ञा के प्रतिनिधि वर्ग हुआ करते हैं । जिस तरह संज्ञा प्रातिपदिकों का एक वर्ग ऐसा भी होता है जिसका लिंग निर्णय संदर्भ या वाक्यात्मक स्तर पर ही सम्भव हो पाता है, उसी तरह सर्वनाम का लिंग निर्णय सन्दर्भ या वाक्यात्मक स्तर पर ही सम्भव हो पाता है । इनमें कारक एवं वचन की दृष्टि से परिवर्तन होते हैं । सार्वनामिक पदरचना में लिंग की दृष्टि से दो (पुलिंग,स्त्रीलिंग) लिंग दो(एकवचन,बहुवचन) वचन तथा दो (प्रत्यक्ष तथाविकारी) कारक प्राप्त होते हैं ।

रूप ,अर्थ एवं प्रयोग की दृष्टि से सर्वनामों के निम्न भेद प्राप्त हैं-

१- पुरुषवाची (आदरवाची)
२- निश्चयवाची
३- सम्बन्धवाची
४- प्रश्नवाची
५- अनिश्चयवाची
६- निजवाची
७- सार्वनामिक विशेषण

सर्वनाम १

पुरुषवाची

११. उत्तम पुरुष

	एकवचन	बहुवचन
	हम	हम्मन
केन्द्र२,३	हम	हमन
,,४,५,६	हम	हमनने
,, १०	म मा	हमन, हमरे
,, ११	मंइ	हमी
,, १२	महूं	हमरन्, हमरने

सार्वनामिक पदरचनाओं में |- 0| विभक्ति मानी जाती है । इस विभक्ति के पूर्व प्रातिपदिक में परिवर्तन हुआ करते हैं जिन्हें इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है ।

सर्वनाम प्रातिपदिक	ए.व. प्रत्यक्ष	ए.व. तिर्यक	ब.व. प्रत्यक्ष	ब.व. तिर्यक
१- उत्तमपुरुष	हम	हम	हम-न	हम-न
		हमा-		हम-न

ये परिवर्तन ३,१०,११ में नहीं प्राप्त होते ।

म	म		
	मो-		
मंय	मंय	हमो लोगन	
	म्वा-		

१.२- मध्यमपुरुष -

मध्यमपुरुष में अर्थ की दृष्टि से आदरार्थ एकवचन तथा आदरार्थ बहुवचन एवं निरादरार्थ एकवचन तथा निरादरार्थ बहुवचन भी प्राप्त होता है ।

निरादरार्थ-	ए.व. प्रत्यक्ष ।	ब.व.
	तोंहें	तोहन,तोन्हन
केन्द्र सं० ४	तैं	तू लोग
,, १०	तूं	तोहन
,, ११	तंय	तुहरे
,, १२	तैं,तहूं	तुहरने
,, १४	तू	तू सबे

आदरार्थ मूल-

	ए.व.	ब.व.
	तुं	तुं लोग, लोग +न
केन्द्र सं० २	तुं	तुं समे
,, ४	तुं	लोग
,, ५	तुं	तुमहने
,, ७-८	तुं	तुं पचे
,, १०	तं	तोहनी
,, ११	तंग	तुम्ही
,, १२	तंग	तहरू

मध्यम पुरुष की सार्वनामिक रचना में विभक्ति लगाने के पूर्व निम्न परिवर्तन हुआ करते हैं।

सर्वनाम प्रातिपदिक	ए.व.		ब.व.	
निरादरार्थ	प्रत्यक्ष	विकारी	प्रत्यक्ष	विकारी
तुं	तुं	तुं	तुं लोग	तं लोग
		तोह-		
		तोह-(आर)		
केन्द्र ११,१२		तह		तुह-
		त्वा-		

१.३ अन्यपुरुष।निश्चयवाचक (मूल) रूप की दृष्टि से अन्यपुरुष के रूप निश्चयवाची सर्वनाम के समान हैं।

१.३१- निकटवर्ती

सर्वनाम की इस कोटि में भी दो रूप प्राप्त होते हैं।ई। ।एन। ।ई। का प्रयोग स्त्रियों के लिए विशेषतया होता है। तथा निम्नश्रेणी के व्यक्तियों के लिए निरादर के रूप में। ।एन। का प्रयोग ।ई। की अभिव्यक्ति करने वाले पुरुष की अपेक्षा कुछ ऊंचा स्तर रखता है।

एकवचन	बहुवचन
निरादरार्थ ई मूल	ए-न-इन
एवं स्त्रीवाची मई	ै-न-न्न
आदरार्थ तथा एन पुरुषवाची विकारी	एन-इन-लोगन
केन्द्र सं० १०,११ ई	एइन

यह भेद केन्द्र ४,५,६,७,८ में कहीं प्राप्त नहीं होता है। विभक्ति रचना से पूर्व मूल रूप में निम्न परिवर्तन परिलक्षित होते हैं।

एकवचन	बहुवचन
निरादरार्थ मूल । ई विकारी	एन्हन
ई । ए-	

आदरार्थ रूप में कोई ध्वन्यात्मक परिवर्तन नहीं होते।

९.२. (२)दूरवर्ती-

निकटवर्ती रूपों की तरह इस बोली में स्त्रीवाची + निरादरार्थ एकवचन तथा बहुवचन एवं पुरुषवाची + आदरार्थ एकवचन व बहुवचन रूप प्राप्त होते हैं।

स्त्रीवाची	एकवचन	प्रत्यक्ष रूप	बहुवचन
निरादरार्थ	ऊ		ओमहन, ओन्हन
	व्हू		होन्हन
केन्द्र सं० २	ऊ		उनहन
,,४,५	,,		उनहने
,, ७	,,		वो
,, १०	,,		उन्हे, होकने
,, ११	वह		ओइन

केन्द्र सं० १३ में एक और विशेषता प्राप्त होती है । अन्य पुरुषवाचक के इस रूप में ।आर। एवं ।आद। दो रूप प्राप्त होते हैं । आर का प्रयोग केवल स्त्रियों तथा जानवरों के लिए होता है जब कि आद पुरुषों के लिए । इस स्थान पर हम कह सकते हैं कि केन्द्रीय बोली में सर्वनाम अन्यपुरुष के प्रयोग के आधार पर ही लिंग के बारे में अनुमान कर सकते हैं, वाक्यात्मक सन्दर्भ से निश्चय हो जाता है कि सर्वनाम स्त्रीवाची है या निरादरार्थ पुरुषवाची । इसी तरह केन्द्र सं०१३ में ।आर। के प्रयोग से ही व्यक्त हो जाता है कि यह स्त्रीवाची है या जानवरों के लिए।

केन्द्र सं० १३	आर	आरन
	आद	आदन

निम्नांकित प्रक्रिया में मूल रूपों में निम्न ध्वन्यात्मक परिवर्तन होते हैं ।

	ए.व.		ब.व.	
सर्वनाम	मूल	विकारी	मूल	विकारी
प्रातिपदिक	ऊ	ऊ	ओन	ओन-
		ओ-		

केन्द्र ४,५,६,७,८,१०,११,१२ में परिवर्तन नहीं होते ।

दूरवर्ती-	ए. व.	ब. व.
पुरुषवाची एवं आदरार्थी	ओन	ओन लोगन
		ओन्हन लोगन

अन्य स्थानों पर इस तरह का भेद नहीं प्राप्त होता है ।

२. अन्यपुरुष सम्बन्धवाचक-

	ए.व.	ब.व.
	जे	जेन-
	जवन	जे लोग
		जवनन
केन्द्र १३	जन	जम

विभक्तिप्रक्रिया में मूल रूपों निम्नलक्षणात्मक परिवर्तन होते हैं।

प्रातिपदिक	ए.व.		ब.व.	
	प्रत्यक्ष	विकारी	प्रत्यक्ष	विकारी
जे	जे +	जे जे-	जेन-	जेन-

३ प्रश्नवाचक सर्वनाम

३.१- विशेषकर मनुष्यों के लिए

	ए.व.	ब.व.
आदरार्थी	के	केन
अनादरार्थी	कवन	कवन

विकारी रूप-

प्रातिपदिक	ए.व.		ब.व.	
	प्रत्यक्ष	विकारी	प्रत्यक्ष	विकारी
के	के	के के-	केन	केन-

३.२- पदार्थों के लिए-

	ए.व.	ब.व.
	का	+
विकारी रूप-	कवन कथु	+
केन्द्र २	केथुआ	
केन्द्र ४,५	केथू	

. संगतिमूलक मूलक-

एकवचन	बहुवचन
तैन	तैनन्न
तवन	तवनन

तैन की अपेक्षा तवन रूप अधिक व्यवहृत होता है।

विभक्ति प्रक्रिया में निम्न ध्वन्यात्मक परिवर्तन हो जाते हैं।

प्रातिपदिक	एकवचन		बहुवचन	
	प्रत्यक्ष।	विकारी	प्रत्यक्ष।	विकारी
तैन	तैन	तैन-	तैन-	तैन-
तवन	तवन	तवन		
	।	तवने		

४ निजवाचक-

	एकवचन	बहुवचन
	आपन	अपनन
केन्द्र सं० २	अपुना	
,, ४,५,६	अपुआ	
,, ७,८	आपुह	
,, ११	निजेह	

विकारी रूप-	एकवचन		बहुवचन	
	प्रत्यक्ष।	विकारी	प्रत्यक्ष।	विकारी
मूल- आपन	आपन	आपन	अपनन	
		अपने-	अपनैन	अपनन-

आदरसूचक- (मध्यमपुरुष)

	एकवचन	बहुवचन
	आप	
केन्द्र सं०२	राउर रउवां	
,,४,५,६	रउरे	
,, १०	राउत	

अन्यत्र आदरार्थक सर्वनाम नहीं प्राप्त होते ।

५. अनिश्चयवाची मूल

५.१- पुरुषवाची

	एकवचन	बहुवचन
	केहू	कौनो
केन्द्र सं०७,८	केहु	कवनो

५.२- वस्तुवाची-

कुछ

इस विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि मूल सर्वनाम में किसी प्रकार का भी परिवर्तन नहीं हुआ जाता है परन्तु विकारी सर्वनामों में । क्या, कुछ । को छोड़ कर सब में परिवर्तन दिखाई पड़ते हैं ।

६. तिर्यक संपरिवर्तक-

यहां की बोलियों में प्रत्यक्ष रचना में संपरिवर्तकों का प्रयोग नहीं मिलता किन्तु तिर्यक रूप संपरिवर्तक ग्रहण किया जाते हैं । ये संपरिवर्तक आगे आने वाले परसर्ग से प्रतिबंधित होते हैं । इन परसर्गों में कुछ ऐसे हैं, जिनमें सर्वनामरूप तथा परसर्ग में मुक्त संक्रमण की स्थिति है ।

जैसे- हमार किताबि बाटी। कुछ ऐसे हैं जिनके बीच मुक्त संक्रमण है ।

हमके । यहां हम तिर्यक संपरिवर्तकों, इन परसर्गों तथा व्युत्पन्न रूपों की तालिका प्रस्तुत करते हैं ।

सर्वनाम पुरुषवाची-

		तिर्यक रूप	परसर्ग	ए.व. व्युत्पन्न रूप
उत्तमपुरुष-	हम			
		-हम	-इ	हमई
		-हमा	-र रे	हमार
				हमो
		-हम	के	हमके
			से	हमसे
केन्द्र सं० १०,११				
सर्वनाम - म		मो-	-र रे	मोर मोरे
			के	मोके
			से	मोसे
		त्वा-	र रे	त्वार- त्वारे
मध्यमपुरुष -तोहं		तो-	र रे	तोर तोरे
			के	तोके
			से	तोसे
			पा	तोपा
,, - हु		तोह-	र रे	तोहार-तोहरे
			के	तोहके
			से	तोहसे
केन्द्र, १०,११		तुह-	र रे	तुहरा तोहरे
		त्वा-	र	त्वार
अन्यपुरुष।निश्चयवाची	ए-		के	एके
			से	एसे
			क-र	एकर्
			में	एमें
			पर्	एपर्

दूरवर्ती - रू	ओ-	के	ओके
		से	ओसे
		क-र	ओकर
		में	ओमें
		पर	ओपर

सम्बन्धवाची सर्वनाम-

-जे	जे-	के	जेके
		से	जेसे
		पर	जेपर
		क-र	जेकर

प्रश्नवाची सर्वनाम

के	के-	के	केके
		से	केसे
		पर	के पर
		में	के में
		क-र	के कर

संगतिमूलक सर्वनाम	तिर्यक रूप	परसर्ग	व्युत्पन्न रूप ए.व.
ते	ते-	क-र	तेकर
		से	से
		के	तेके
		पर	तेपर

व्युत्पन्न बहुवचन रूपों की प्राप्ति के लिए तिर्यक संपरिवर्तक के बाद बहुवचन बोधक पर प्रत्यय -न संयुक्त करने के पश्चात् परसर्ग का प्रयोग करते हैं। इस तरह बहुवचन रूप में तिर्यक रूप + बहुवचन बोधक पर प्रत्यय+ परसर्ग का क्रम रहता है। यथा-

	तिर्यक रूप	बहुवचनबोधक प्रत्यय	परसर्ग	व्युत्पन्न रूप ब.व.
के	के-	न	से	केन से
			क - र	केन कर

६ सार्वनामिक विशेषण

सर्वनाम पदों के ऐसे रूप भी प्राप्त होते हैं जो विशेषणों में पूर्व आकर विशेषण कोटि का निर्माण करते हैं। इन्हें दो वर्गों में रखा जा सकता है। सर्वनाम मूल रूप में संज्ञा के पूर्व आता है और विशेषण कोटि का निर्माण करता है। दूसरा वर्ग वह है जिसमें सर्वनाम पदग्रामों में प्रत्यय लगा कर विशेषण पदों का निर्माण किया जाता है।

प्रणालीबोधक सार्वनामिक विशेषण-	विशेषण	
सर्वनाम - ई-	अइसन	
	अइसे	
	अस	केन्द्र सं० ७,८,१५
ऊ	वोइसन	
	वोइस	,, १०,११
	वोइसे	
के	कइसन	
	कस	
	कइसे	
तै-	तइसन	
	तस	१०,११
	तइसे	

परिमाणबोधक-सार्वनामिक विशेषण-

इ	इतना
ऊ	वोतना
के	केतना
ते	तेतना
	हेतना

सार्वनामिक क्रियाविशेषण

सर्वनाम पदों का दूसरा वर्ग वह है जो अपने पश्चात् प्रत्यय जोड़ कर कालवाची, स्थानवाची ,रीतिवाची,क्रियाविशेषण पदों की रचना करता है ।

रीतिवाची क्रियाविशेषण

वइसे

जेइसे

एइसे

ओइसे

कइसे

कालवाची क्रियाविशेषण-

एक बेला

तेह उनी

ओह बेला

ओह घुनी

स्थानवाची क्रियाविशेषण-

कब बेकहं

इतां

तियां

उतां

उथां

जतां

ततां

कतां

इती

ओती

कहं ए

रेहिया केन्द्र सं० २,३

ओहिया ओर्मि

ए दिन

ओ दिन

दिशावाची क्रियाविशेषण-

एहर

वोहर

केहर

ऊपेक केन्द्र सं० ११,१२

कहेल ११,२२

तेहर

अध्याय- ६

विशेषण

अध्याय-७

विशेषण

विशेषण रूप तालिका संज्ञा रूपों की तरह अपने लघु एवं गुरु रूप रखती है।

यथा- बड़ बड़का

गुरु रूप का निर्माण मूल रूप में -अका प्रत्यय का संयोग करके किया जाता है। लिंग एवं वचन की दृष्टि से भी केन्द्रीय बोली में परिवर्तन हुआ करता है।

यथा- पुरान कपड़ा पु०

पुरानि धोती इ- स्त्री लिंग द्योतक प्रत्यय। आकारान्त रूप संज्ञा पदों की ही तरह लिंग परिवर्तन में प्रत्यय विधान किया करते हैं। विशेषणों के कुछ रूप विकारी एवं अविकारी दोनों रूपों में प्राप्त होते हैं।

उज्जा कपड़ा में

उजरे कपड़ा में

१- सार्वनामिक विशेषण-

पुरुषवाची एवं निजवाची सर्वनामों के अतिरिक्त शेष सर्वनाम संज्ञापदों के पूर्व आकर सार्वनामिक विशेषण का निर्माण करते हैं।

२- गुणवाची ~~सर्वनाम~~- विशेषण-

सुविधा की दृष्टि से हम ~~सर्वनामों~~ विशेषण को उनके गुणों के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में रखा जा सकता है।

गुण-

नीक, बेवर, अच्छा, साच, झूट, पापी, सोझ, टेढ़, बांगुर, कुचला

रंग- लाल, पीअर, हरिअर, उज्जर, करिआ, चितकबरा, धूमिल, मटमइल

स्थान- लम्बा, चाकर, ऊंच, लाल, सोझ, गहिर, साकर, टेढ़, भितरी, बहरी, इत्यादि।

केन्द्र १२- कुबरा, केन्द्र १२- उबरा टेढ़ा

आकार- गोल्हर, चाकर, लोहर, चौड़

दशा- दुब्बर, पातर, मोट, मक, गाढ़, गील, [illegible] इत्यादि।

संख्यावाची विशेषण-

इस जिले की बोलियों में संख्यावाची विशेषण कई श्रेणियों में प्रयुक्त होते हैं।

निश्चित संख्यावाची- गणनात्मक पूर्ण

१- एक केन्द्र १३- ओण्टा

२- दुइ इनटांग केन्द्र १० दु

३- तीनि मुनटांग

४- चारि नालगोटा

५- पांच पंचे

६- छै सोइस केन्द्र १०, छव

७- सात्

८- आठ

९- नउ केन्द्र १०, नव

१०- दस

११- इग्यारह इग्यार केन्द्र ११-इगारह

१२- बारह बार

१३- तेरह

१४- चउद

१५- पनर

१६- सोर

१७- सतर

१८- अठार

१९- ओनइस

२०- बीस

२१- एकइस

२२- बाइस

२३- तेइस

२४- चउबिस

२५- पचीस

२६- छब्बिस

२७- सताइस

२८- अट्ठाइस

२९- औनतिस

३०- तीस

३१- एकतिस
३२- बतिस

३३- तैंतिस

३४- चौंतिस

३५- पैंतिस

३६- छतिस

३७- सैंतिस

३८- अंठुतिस

३९- औनतालिस कैन्द्र १०,११ उनतालिस

४०- चालिस

४१- एक्तालिस

४२- बयालिस

४३- तैंतालिस

४४- चउआलिस

४५- पैंतालिस

४६- छियालिस

४७- सैंतालिस

४८- अंठुतालिस

४९- औनचास कैन्द्र १०,११ उनचास

५०- पचास

५१- एक्कावन

५२- बावन

५३- तिरपन्

५४- चउवन

५५- पचपन

५६- छप्पन

५७- सतावन

५८- अट्ठावन

५९- औनसठि केन्द्र ४,५,६,७,८,९ औनसट

६०- साठि साट

६१- एकसठि एक्सट

६२- बासठि

६३- तिरसठि

६४- चौंसठि

६५- पैंसठि

६६- छाछठि केन्द्र ३,४,५,६,७ छासट

६७- सरसठि सड़सट

६८- अरसठि अड़सट

६९- औनहत्तरि

७०- सत्तरि

७१- एकहत्तरि

७२- बहत्तरि

७३- तिहत्तरि

७४- चौहत्तरि

७५- पचहत्तरि

७६- छिहत्तरि

७७- सतहत्तरि

७८- अठहत्तरि

७९- औन्यासी

८०- असी

८१- एक्यासी

८२- ब्यासी

८३- तिरासी

८४- चौरासी

८५- पचासी

८६- छियासी

८७- सतासी

८८- अठासी

८९- नवासी

९०- नब्बे

९१- एक्कानवे

९२- बानवे

९३- तिरानवे

९४- चौरानवे

९५- पंचानवे

९६- छानवे

९७- सत्तानवे

९८- अट्ठानवे

९९- निन्नानवे   केन्द्र ३,४ निन्यानवे

१००- सउ   सै, केन्द्र ७, सौ

१०००- ब हजार

१००००- लाख

काड़

संख्यावाची रूप जो १०० से अधिक होते हैं वे छोटी संख्याओं के सम्योग से व्यवहृत होते हैं। जैसे अशिक्षित लोग बीस या पच्चीस तक ही संख्या बोल पाते हैं और आगे   बीस व पांच = २५

बीस ,, दस = तीस   इस तरह बोलते हैं।

गणनावाचक -अपूर्ण-

पाव $-\frac{१}{४}$

आधा $-\frac{१}{२}$

पवन -३/४ केन्द्र १० टीन टुका, केन्द्र १२ में तिहाई चौथाई के लिए कोई रूप नहीं मिलता।

सवाई १ १/४

डेढ़ १ १/२

अढ़ाई २-१/२

साढ़े तीन ३-१/२

समूह बोधक

विशेषण के इस वर्ग से पूर्णांकबोधक संख्या के समुदाय का बोध होता है।

१-	अकेलइ		
२-	दुन्नउ	केन्द्र ७,८,६	दूनउं
३-	तीनिउं		तीनउं
४-	चारिउ		चारउ
२	जोड़ा		
५-	गाही		
५-	गंडा		

क्रमवाची विशेषण-

पहिल

दूसर केन्द्र ३,४ दो बारा, केन्द्र सं० १२ दुइ ठेला

तीसर ,, तीनि ठेला

चउथ

पांचवं पंचवां केन्द्र १०- पांचु

छठवं छठवां

दो एवं तीन पूर्णांक संख्यावाची में -सर, पांच के बाद की संख्या में -वां या ई जोड़ कर इन रूपों का निर्माण किया जाता है। प्रयोग की दृष्टि से इनके लघु एवं दीर्घ दो रूप प्राप्त होते हैं। एक से चार तक की संख्याओं में लघु रूप में -आ जोड़ कर तथा ५ से अधिक की संख्याओं में लघु रूप में - वां या -ई को जोड़ कर इन रूपों की प्राप्ति की जाती है। तिथियों के नामकरण में इस नियम का पालन नहीं होता।

एकम		
दुइजि	केन्द्र ७,८,९,१०	दुइज
तीजि		तीज
चउथि		चउग
पंचिमी		
छट्ठि		
सत्तिमी		
अस्टिमी		
नउमी		
दसिमी		
एकादसी		
दुवासि		
तेरसि		
चतुरदसी		
पुन्वासी	केन्द्र ६	पुनंमासी

<u>गुणात्मक संख्यावाची-</u>

एक एवं दूना (दो गुना) को छोड़ कर पूर्णांक बोधक संख्यावाची सर्वनामों के आगे -गुना लगा देने से इस रूप की प्राप्ति होती है। यदि कुछ परिवर्तन भी होता है तो ध्वन्यात्मक।

दून	केन्द्र सं० ३	दुगुना
तिगुन		
चउगुन		
पचगुन		

परत या आवृत्ति का बोधन करने के लिए पूर्णांकबोधक संख्यावाची शब्दों में -हरा जोड़ दिया जाता है।

एकहरा — केन्द्र सं० १० एकहरा
दोहरा
तिहरा

पहाड़े में एकाई रूप भी मिलता है।

	एका	एकक्रम		
एक एकाई एक	१	१ = १	केन्द्र ७,८,६,१४	एक के एक
दुइ दुनी चार	२	२ = ४		
तीनि तिाके नउ	३	३ = ६		तीन तिक्के नउ

इसी तरह चउके, पंजे, छक्के, सते, अट्ठे, नवाई, दहाई रूपों की प्राप्ति होती है। विशेषणों के इन संख्यावाची रूपों के अतिरिक्त ऐसे भी रूप मिलते हैं जिन्हें ऋणात्मक कहा जा सकता है। यथा- दुइ कम सात = ५

ठे एवं गो परिसंवर्तक -

केन्द्रीय बोली में पूर्णांक संख्यावाची गणनात्मक विशेषणों के आगे ठे का प्रयोग होता है। गो इसी का संपरिवर्तक रूप है। यह केन्द्र संख्या २ में व्यवहृत होता है।

रूपान्तरसहित विशेषण-

रूपान्तरसहित है सर्वनामों का वह वर्ग है जो अपने रूप विस्तार के लिए या वाक्य में प्रयोग हेतु ।-ए ।-ओ ।-आ। प्रत्यय ग्रहण किया करता है।

पुलिंग प्रणालीवाचक विशेषण-

इस रूप का निर्माण मूल पदग्राम ।अइस। में ।-ए। एवं ।-अन। प्रत्यय के संयोग से होता है।

अइस- अइसन - अइसे

अनुरूपक प्रातिपदिक अइसन में -इ स्त्रीवाची प्रत्यय जोड़ कर स्त्रीलिंग वाची विशेषण पदग्राम बनाया जाता है। अवधारण सूचित करने के लिए कारकीय

रचना में व्युत्पन्न प्रातिपदिक में -ए-एन प्रत्यय जोड़ कर क्रमश: एकवचन या बहुवचन रूप का निर्माण किया जाता है।

अइसी लइका के

अइसने लइका के ए. व.

अइसनेन लइकन के ब.व.

वचन द्योतक प्रत्यय लगाने के बाद लिंगबोधक प्रत्यय का विधान नहीं होता।

अइसने मेहरारू के

पुलिंग परिमाणवाची विशेषण-

इसका निर्माण मूल परिमाणवाची विशेषण में - तन प्रत्यय जोड़ कर किया जाता है ।

इ- तन

व्युत्पन्न प्रातिपदिक में -ई प्रत्यय जोड़ कर स्त्रीलिंग ,-ए जोड़ कर विकारी कारकीय रूप तथा -अन प्रत्यय जोड़ कर बहुवचन रूप का निर्माण होता है।

	स्त्री लिंग	ब.व.	वि.का.ए.व.	वि.का.ब.व.
एतना-	एतनी	एतनन	एतने	एतनेन
ओतना	ओतनी	ओतनन	ओतने	ओतनेन

निश्चित संख्यावाची विशेषण- क्रमबोधक-
------------------------ ------

पूर्णांक गणनात्मक संख्यावाची विशेषण में, क्रमबोधक वा प्रत्यय का योग कर मूल रूप तथा वाप्रत्यय पुन: जोड़ कर विकारी रूप की रचना होती है ।

एक- ल पहिल लघुरूप

दुइ- -सर दूसर

एक+ल+आ पहिला दीर्घरूप

एक+ल+ए पहिले विकारी रूप

व्युत्पन्न मूल लघु रूप में स्त्री प्रत्यय -ई जोड़ कर स्त्रीलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिक का निर्माण होता है । एक को छोड़ कर शेष पूर्णांक बोधक संख्यावाचियों में बहुवचन वा प्रत्यय का भी विधान होता है।

एक+ल+इ	पल्ली		स्त्री लि
दुइ+सर+अन	दुसरन	अविकारी	बहुवचन रूप
दुइ+सर+ए	दुसरे		विकारी एकवचन
दुइ+सर+एन	दुसरेन		विकारी ब.वचन

अनिश्चित संख्यावाची विशेषण-

इस वर्ग में विशेषणों का वह रूप आता है जिससे संख्या में किसी प्रकार की निश्चितता नहीं व्यक्त होती ।

अउर

दूसर

सब

कुल्ह कुलि

ढेर

जादा

कम

तनिक्क केन्द्र १२ रिडक

थुरिक्क दमकनी (कुछ)

बीसन

तीसन

अन्दाजन

पुल्लिंग गणानात्मक निश्चित संख्यावाची विशेषण-

इस रूप तालिका में विशेषण के लघु एवं दीर्घ दोनों रूप प्राप्त होते हैं। एक से दस तक की संख्या में गुणात्मक पर प्रत्यय -गुन के योग से व्युत्पन्न प्रातिपदिक के लघुरूप का निर्माण, -आ जोड़ कर दीर्घ रूप का निर्माण होता है ।

दुइ-गुन दुगुन
तीन-गुन तीगुन
दुइ-गुन-आ दुगुना दुना

इस रूप में स्त्रीलिंग परप्रत्यय तथा बहुवचनबोधक परप्रत्यय नहीं जुड़ते ।

अध्याय-७

क्रिया

अन्यपुरुष-

	पु० एकवचन	पु० बहुवचन
	ह	हवं
स्त्री	ह	हईं

इसी तरह बा सत्तात्मक क्रिया का भी प्रयोग होता है ।

उत्तमपुरुष	एकवचन	बहुवचन
पु० एवं स्त्री ०	बाईं	बाईं
केन्द्र २	बाटी	बाटी

केन्द्र २ को छोड़ कर बाटी रूप अन्यत्र नहीं मिलता ।

मध्यमपुरुष	ए. व.	ब. व.
आदरार्थ	बाय	बाय
स्त्रीवाची एवं निरादरार्थ-	बाए	बाए
केन्द्र २ पु०	बाड़	बाड़
,, स्त्री	बाड़ू	बाड़ू

केन्द्र सं० २ के अतिरिक्त बाड़ रूप प्राप्त नहीं होता है ।

अन्यपुरुष-

पु०	बा	बायँ
स्त्री	बाइ	बाईं

√बा एवं √ह रूप की भूतकाल में √रह रूप में परिवर्तित होकर निम्नांकित संयुक्त रूप में व्यवहृत होता है ।

७.१ ख भूतनिश्चयार्थ

अन्यपुरुष	ए. व. पुलिंग		ब. व.
	रहल	(केन्द्रीय बोली तथा ३,४,५,६में)	रहल
	रहलन	(केन्द्र सं० २)	रहलन
	रहा	,,७,८,९	रहिन
	रहे	,, १०	रहें
	रहैं	,,१२ (ओकर)	रहैं
	रहा	,, १४	रहिन

७.१ घ भविष्य निश्चयार्थ ए.व. ब.व.

	ए.व.		ब.व.
अन्यपुरुष	होई	केन्द्रीय बोली में २,३,४,६	होइहं
	होई	५	होइहेन
	होमीं	१०,११	होमीं
	होई	१४	होइमीं
मध्यमपुरुष पु०	होव्या	केन्द्रीय बोली में	होव्या
	होइब	२	होइब
	होव्यां	४,६,७,८,६	होव्यां
	होबु	५	होब
	रमत	१०,११	रमत
	होब	१४	होब
,, स्त्री	होबे	१	होव्या
	होइबु	२	होइबु
	होबु	४,६,८,६	होबु
	होबी	५	होबी

केन्द्र १०,११ में भी रूप व्यवहृत होते हैं जो पुलिंग में।

उत्तमपुरुष	होबु	२,३,५,६,१४	होबु
	रम्बु	४	रम्बु
	होइबु	७,८,६	होइबु
	रहुं	१०	रहुं
	हों	११	हों

नियमित तथा साधारण क्रिया के रूप में √रह अतीत काल के साधारण एवं भविष्य के साधारण रूप में भी व्यवहृत होती है। सहायक मूलनिश्चयार्थ प्रकरण में √रह की व्याख्या हो चुकी है। भविष्य निश्चयार्थ में √रह में -ब जोड़ कर हेक रूपों का निर्माण किया जाता है।

उत्तमपुरुष-

	एकवचन	केन्द्रीय बोली	बहुवचन
	रहू		रहू

मध्यमपुरुष

	एकवचन	केन्द्रीय बोली	बहुवचन
स्त्रीवाची एवं			
निरादरार्थी	रहबे	अन्यत्र ये रूप अप्राप्त	रहब्या
आदरार्थी	रहब्या		रहब्या
	रहबें	केन्द्र २	रहबें

अन्यपुरुष	रही	केन्द्रीय बोली में (लोन्कन)	रहिं
	रहती	२	रहतीं

बा रूप का प्रयोग वर्तमान के अतिरिक्त अन्यत्र नहीं होता है।

धातु	प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप	केन्द्रसं० ६,७,८,९
मर्		मरल	मरा
जर्		जरल	जरा
सूत्		सूतल	सूता
बइठ्		बइठल	बइठा
देख्		देखल	देखा
सुन्		सुनल	सुना
ली-		मयल	मया~मा

ये समस्त कृदन्तीय रूप स्त्रीलिंग में भी प्रयुक्त होते हैं और इस स्थिति में इनके पश्चात् स्त्रीवाची प्रत्यय -इ जुड़ जाता है। शब्द के मध्य में आने वाले य का रूप परिपरिवर्तन इ रूप में तथा कृदन्तीय रूप इकारान्त हो जाते हैं।

वर्तमानकालिक स्त्री कृदन्त	करति
	हेराति
भूतकालिक स्त्री लिंग कृदन्त	कहलि
	गइलि
	सूतलि

७.२ ख ३ क्रियार्थक संज्ञा

मूलधातु में -ब प्रत्यय का संयोग कर इस रूप का निर्माण किया जाता है

धातु	प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
√कर्	-ब	करब
√मर्		मरब
√उठ्		उठब
√बइठ्		बइठब
√सूत्		सूतब
√चल्		चलब
√खंड्		खंडब

√मार		मारब
	-बि	
√रो		रोइबि रोअब
√ढो		ढोइबि ढोअब
√पो		पोइबि पोअब
√मो		मोइबि मोअब

ये वैकल्पिक रूप केवल ओकारान्त धातुओं में प्रत्यय विधान के कारण प्राप्त होते हैं।

√दे	देब
√ले	लेब
√कह	कहब
√सुन	सुनब

केन्द्रीय बोली में मूलधातु में -अन प्रत्यय को संयुक्त कर क्रियार्थक संज्ञा का रूप बनता है।

√रो	-अन	रोवन
√पीट		पीटन
√माग्		मांगन

क्रियार्थक संज्ञा के ये रूप समस्त केन्द्रीय बोली केन्द्र ४,५,६,७,८,६ एवं १४,१५ में समान रूप से प्राप्त होते हैं।

७.२.४ कर्तृवाचक कृदन्त-

केन्द्रीय बोली में इस रूप का निर्माण मूल धातु रूप में - वैया प्रत्यय के योग से होता है।

कर	-वैया	करवैया
उठ		उठवैया
ले		लेवइया
मर		मरवैया
सुन		सुनवैया
गा		गवइया
खा		खवइया

इन रूपों का प्रयोग संज्ञा या विशेषण की तरह होता है।

७.२ ख ५ पूर्वकालिक कृदन्त-

धातु मूल	ø	उदाहरण
		खाइ
		पीइ
		सुति
		उठि
		फारि
		पढ़ि
		गुनि
		लिखि
		हंसि
		फकि
		फाटि
		मारि
		काटि
		नाचि
		कूदि

पूर्वकालिक कृदन्त-

धातु + प्रत्यय व्युत्पन्न रूप - इस रूप में केवल-क प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

खाइ क

मुोरि क

नाइ क

काटि क

नोचि क

गांधि क

प्रयोग के इस रूप से मुख्यक्रिया के होने वाले व्यापार की समाप्ति का बोध होता है। इसके अतिरिक्त मारकाण,रीति एवं विरोध आदि अर्थों की अभिव्यक्ति भी इनसे हुआ करती है।

७.२ ख ६ भूतक्रियाद्योतक कृदन्त-

भूतकालिक कृदन्त व्युत्पन्न रूप में -ए प्रत्यय को संयुक्त कर इस रूप का निर्माण किया जाता है।

धातु	प्रत्यय - अल	व्युत्पन्न रूप	प्रत्यय -ए	भूतक्रियाद्योतकव्युत्पन्नरू
मर		मरल्		मरले
मार		मारल		मारले
जर		जरल		जरले
सूत		सूतल		सुतले
सुन		सुनल		सुनले
हो		भयल		होइले भइले
चु		चुअल		चुअले

भूतक्रियाद्योतक कृदन्तों के ये रूप केन्द्रीय बोली तथा केन्द्र २,३,४,५,६ में प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त केन्द्र ७,८,९ में व्युत्पन्न भूतकालिक कृदन्त में -ए प्रत्यय संयुक्त कर इस रूप की प्राप्ति होती है।

भूतकालिक कृदन्त	प्रत्यय -ए	व्युत्पन्न भूतिक्रियाद्योतककृदन्त विकृतरूप
उठा		उठे
बोला		बोले
बइठा		बइठे
पका		पके
गिरा		गिरे
भया		भए

अन्तर केवल इतना ही है कि केन्द्रीय बोली में -ल या ल रूप आ जाते हैं जबकि पर इस क्षेत्र में ये रूप नहीं आते।

तात्कालिक कृदन्त-

वर्तमानकालिक कृदन्त व्युत्पन्न रूप में -इ प्रत्यय का प्रयोग करके इस रूप का निर्माण होता है। वर्तमानकालिक कृदन्त व्युत्पन्न रूप और प्रत्यय के मध्य मुक्त संक्रमण होता है तथा केवल अवधारण का ही स्पष्ट होता है। इससे व्याकरणिक कोटि में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता।

वर्तमानकालिक कृदन्त	व्युत्पन्न रूप
- इ प्रत्यय	
आवत	अवतइ
जात	जातइ
उठत	उठतइ
बइठत	बइठतइ
जरत	जातइ
हेरात	हेरातइ
गिरत	गिरतइ
मकरात	मकरातइ

७.३.१ काल रचना - साधारण या मूलकाल

इसमें वे काल आते हैं जिनमें सहायक क्रिया नहीं आती । इनका निर्माण या तो धातुओं में विभक्ति लगा कर किया जाता है या धातु में कृदन्तीय विभक्ति लगा कर । वर्तमान निश्चयार्थ पूर्ण या अपूर्ण दोनों रूपों का निर्माण कृदन्तीयरूप के साथ सहायक क्रिया साथ लेकर किया जाता है । यदि सहायक क्रियाएं समापिका क्रिया बन कर इनके साथ संयुक्त होती हैं तो ये मूल काल के रूप में व्यवहृत होते हैं ।

वर्तमान सामान्य-	ए.व.	ब.व.
उत्तमपुरुष	हई	हई
मध्यमपुरुष	हव	हव
अन्यपुरुष	ह	हवं

यही स्थिति भूत सामान्य की भी है । भविष्य,संभावनार्थ ,भविष्य सामान्य, तथा भविष्य विध्यार्थ में मूल काल का रूप दिखाई पड़ता है।

वर्तमान निश्चयार्थ-

इस वर्ग में मूल काल में उत्तमपुरुष एव मध्यम पुरुष के उदाहरण नहीं प्राप्त होते । अन्य पुरुष में निषेधात्मक रूप में मूलकाल के रूप मिल जाया करते हैं । धातु में -ह विभक्ति जोड़ कर इस रूप का निर्माण किया जाता है ।

लेखह
मानह
देखह
करह
रहह
परह
सुनह
उठह
पीवह यह रूप केवल केन्द्रीय बोली में प्राप्त होता है अन्यत्र नहीं।

वर्तमान आज्ञार्थ-

उत्तमपुरुष एकवचन -ईं केन्द्र ७,८,९ १४

चलीं

खाईं

सुतीं

रोईं

बहुवचन

चलीं चली जा

खाईं खाईं जा

सुतीं सुतीं जा

रोईं रोईं जा

हंसीं हंसी जा

मध्यमपुरुष एकवचन निरादरार्थ अकारान्त धातु में उकारान्त एवं आकारान्त ओकारान्त कर दी जाती है।

चलु	चलं
खो	खा
सुतु	सुतं
जो	जा

मध्यमपुरुष एकवचन सामान्य	बहुवचन
चलो	चलं
सुन	सुनं
उठ	उठं
खा	खा

मध्यमपुरुष ए. व. आदरार्थ

(आप)	चली	(आप लोग)	चली
	खाई		खाई
	करी		करी
	उठी		उठी
केन्द्र २(रउवां)	उठूं		उठुन
	चलूं		चलुन
	करूं		करुन
	खाऊं		खाऊंनु

केन्द्र ११,१२ में आदरार्थ रूप अप्राप्त ।

केन्द्र ७,८,६,१४

(आप)	चल	चल
	खा	खा
	कर	कुर

अन्यपुरुष एकवचन ।उ।	बहुवचन -।उं।
चलउ	चलउं
खाउ	खाउं
सूतउ	सूतउं
करउ	करउं

<u>मूलनिश्चयार्थ-</u>

उत्तमपुरुष

केन्द्रीयबोली एवं

२,२,५	गइली	गइली
	खइली	खइली
४,७,८,६,१४	गए	गए
११,१२	गा रहीं	रहीं

मध्यमपुरुष	एकवचन	निश्चयार्थ	बहुवचन
केवल केन्द्रीय में	गइले		गाइल
		सामान्य	
	गयल्		गयल
केन्द्र २,४,५	गइल्		गइल
७,८,६	गय		गय
१०,११	गए		गए
१४			

अन्यपुरुष		
	गयल्	गयन
केन्द्र २,४,५	गइल्	गइन
७,८,६	गया गा	गइन
१०,११	गइस्	गइन्

भूतनिश्चयार्थ में केन्द्रीय बोली में -एसि प्रत्यय भी जुड़ता है लेकिन यह रूप केवल सकर्मक क्रिया रूपों में आता है।

खइलेसि	खइलेनि
पिअलेसि	पिअलेनि
कइलेसि	कइलेनि
छुअलेसि	छुअलेनि

सकर्मक क्रियाओं में यह प्रत्यय केन्द्र ७,८,६ ,१४ में भी जुड़ता है पर अन्तर इतना ही है कि यहां मध्य में आनेवाला ।ला रूप नहीं मिलता।

खाएसि	खाएन
पिएसि	पिएन
छुएसि	छुएन

इस तरह हम देखते हैं कि मूल धातु में निम्नविभक्तियां को जोड़ कर भूतनिश्चयार्थ रूप की प्राप्ति की जाती है।

अन्य पुरुष	एकवचन	बहुवचन
केन्द्रीयबोली में तथा ३, ४,५,६	- अत्	-अन्
केन्द्र ७,८,९,१४	- बा आ	- एन्
१०,११	- इस	-इन

मध्यमपुरुष		
केन्द्रीय बोली में तथा		
३,४,५,६ में	-यस	-यस
७,८,९,१४	-य	-य
१०,११	-ए	-ए

उत्तमपुरुष		
केन्द्रीय बोली तथा		
२,३,४,५,६	-ली	-ली
७,८,९,१४	-बा	-इए
१०,११	-रहाँ	-रहिन

इन विभक्तियों से बोलीगत् अन्तर (dialectical variation) समझने में बड़ी सरलता होती है।

<u>भूतसंभावनार्थ-</u>

भूतसंभावनार्थ रूप वर्तमानकालिक कृदन्त के रूप हैं। वाक्य रचना में ये भूतसंभावनार्थ का कार्य करते हैं फिर भी इनमें क्रिया रचना के समान परिवर्तन हो पाया करते हैं।

उत्तमपुरुष	एकवचन	ब.व.
केन्द्रीय बोली में	देखित	देखित
केन्द्र २	देखती	देखतीं
३,५,६	देखित्	देखतीं

केन्द्र ७,८,६,१४	देखित्		देखित्
१०,११	देखीं		देखत्

मध्यमपुरुष-

केन्द्रीय बोली में	देखते		देखते
		नि०स्त्रीवाची	
	देखती		देखती
केन्द्र २,४,५,६	देखतु		देखतु
केन्द्रीय बोली तथा			
२,३,५,६	देखती	सामान्य	देखतीं
४	देखत्थे		देखत्थीं
१०,११	देखे		देखा

अन्यपुरुष

केन्द्रीय बोली में तथा		
३,४,५,६	देखत्	देखतुं
२,४,७,८,६	देखतु	देखतेन्
१०,११	देखतिस	देखतिस

हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि भूतसंभावनार्थ के निर्माण में मूल धातु में निम्न पर प्रत्ययों को जोड़ कर इन रूपों का निर्माण होता है ।

उत्तमपुरुष-

केन्द्रीय	-अति	-अति
केन्द्र २	-अती	-अतीं
४,५,६	-अत	-अती
१०,११	-औं	-अतु

मध्यमपुरुष निरादरार्थ-

	-अते	-अते
स्त्रीवाची	-अते	-अते
केन्द्र २	-अत्	-अत्
सामान्य	-अत्	-अतं
केन्द्र ४	-त्यां	-त्यां
१०,११	-ए	-आ

अन्यपुरुष

केन्द्रीय बोली में	-अत्	-अतं
२,४,७,८,६	-अत्	-तेन्
१०,११	-तिस	-तिन्

भविष्यनिश्चयार्थ-

उत्तमपुरुष

केन्द्रीय बोली,३,४,५,६ ७,८,६,१४	-आव		जाव्
केन्द्र २	जाइब्		जाइब्
१०,११	जाब्येउं		जाब्येउं

मध्यमपुरुष निरादरार्थ-

केवल केन्द्रीय में	जावे		जाव्या
	जावें	स्त्रीवाची	जाव्या
केन्द्र २,४,५,६,७ ८,६,१४	जाबु		जाबु
केन्द्र ५	जावी		जावी

सामान्य

केन्द्रीय बोली	जाव्या	जावे
केन्द्र २	जइब	जइबं
केन्द्र ४,६,७,८,६	जाव्ये	जाव्य
१०।११	जाते	जाता

भविष्यनिश्चयार्थ रूप के निर्माण में मूल धातु में निम्न पाप्रत्ययों के संयोग से इस रूप की प्राप्ति की जाती है।

		एकवचन	बहुवचन
केन्द्रीय बोली	उ०	-ब्	-ब
	म० निरादरार्थ	-बे	-व्या
	म० स्त्री०	-बें	-व्या
	म०सामान्य	-व्या	-बे
	अन्य	-ई	-इहं
केन्द्र २	उ०	-इब्	-इब्
	म०स्त्री०	-इब्	-इब्
	म०सा०	-इब	-इब
	अन्य	-ई	-इहीं
केन्द्र ४,६,७,८,९,१४		-ब्	-ब्
	म०स्त्री	-बू	-बू
	म०सा०	-ब्यां	-ब्यां
	अन्य	-ए	-इहैं
केन्द्र १०,११	उ०	-स्यिउं	-स्यिउं
	म०	-सै	-सा
	अ०	-इहै	-इहैं

७.३.२ संयुक्त काल

संयुक्त काल में एक प्रधान कृदन्तीय क्रिया और सहायक क्रिया एक साथ आती है । प्रयोग की दृष्टि से या तो वर्तमानकालिक कृदन्त तथा सहायक क्रिया साथ आती है या भूतकालिक कृदन्त एवं सहायक क्रिया ।

(१) अपूर्ण वर्तमाननिश्चयार्थ-

	एकवचन पु०	ब०व०पु०	ए.व.स्त्री०	ब.व.स्त्री
अन्यपुरुष	खात छ	खात छंव	खाति छ	खाति छई
	रैंगल जात छ	रैंगल जात छंव	रंगति जाति छई	रैंगति जाति छई
	बट्ठत छ	बट्टत छवं	बट्टतिछ	बट्टति छई
	उठत छ	उठत् छवं	उठति छ	उठति छई
	सूतत छ	सूतत छवं	सूतति छ	सूतति छई
	करत छ	करत छवं	करति छ	करति छई

		एकवचन		बहुवचन
पु०	खा	त् ०	खा	त् ०
स्त्री०	खा	त्-इ		त-इ

संयुक्त काल के निर्माण में वर्तमान कालिक कृदन्त में मूल धातु के बाद लगा प्रत्यय -त अपूर्ण काल का प्रतीक है । इसके साथ ही कृदन्तीय रूप लिंगविधान में एक और प्रत्यय ग्रहण करता है । केन्द्रीय बोली में मौलिक विशेषता यह है कि सहायक क्रिया में भी लिंगबोधक एवं वचन बोधक प्रत्यय लग जाया करते हैं ।

मध्यमपुरुष	पुं०	एकवचन	केन्द्रीय बोली में	ब. व.
		खात्य(खात-इए)		खात्य (खात- व)
		खात बछ	केन्द्र २	बछ
	खाच्य(खात्)च्य		५,६,७,८,९,१४	च्यॅ
	खाच्छ(खात्)च्छ		१०	च्छ
	खाचौस(खात)चौस		११	चौस

भूतकालिक कृदन्त +वर्तमानकालिक क्रिया के योग से पूर्ण वर्तमान निश्चयार्थ का बोध किया जाता है।

भूतनिश्चयार्थ-

		एकवचन		बहुवचन
अन्यपुरुष-	पु०	आयल रहल	केन्द्रीय	आयल रहन
		आवा रहै	५,६,७,८,९	आवा रहै
	स्त्री०	आयल-इ रहल इ		
		आवा रहिउ	६,७,८,९	,, रहइ
मध्यमपुरुष	पु०	आयल रहलै		आयल रहल
	स्त्री०	,, रहले		,, रहलिउ
उ०पु०		,,रहली		,, रहली

विभक्ति रचना की दृष्टि से हम इसे इस तालिका द्वारा प्रस्तुत कर सकते हैं।

	ए.व.	ब. व.	
पु०	-०	-०	केवल केन्द्रीय बोली में
स्त्री	य इ,-इ	-इ	

शेष केन्द्रों में कृदन्तीय रूपों में परिवर्तन नहीं होते ।

स्त्री०	एकवचन		बहुवचन
	मारति रहउ	केन्द्रीय में	मारति रहउ
	मारत रहूं	२	रहूं
	माराऊ	४	माराऊ
	मारऊ	५	मारऊ
	मारू	७,८,६	मारू

केन्द्र १०,११ के रूप पुलिंग की तरह ।

उत्तमपुरुष

मारयहं(मारत रहं)	केन्द्र में,४,५,६,७	मारयहं
मारिय(मारत-रिय)	२	मारिय
मारत ही(मारत अही)	७,८,६	मारतही
मार्यों(मारत-रों)	१०,११	मार्यों

इस तरह संयुक्त कालरचना में मध्यमपुरुष स्त्रीलिंग रूप को छोड़ कर शेष अन्य रूप में वर्तमानकालिक कृदन्त में कोई परिवर्तन नहीं होता है । सहायक क्रिया रूपों में अवश्य परिवर्तन होते हैं ।वर्तमानकालिक कृदन्त में स्त्रीलिंग प्रत्यय का योग मध्यमपुरुष में केवल केन्द्रीय बोली में ही होता है,अन्यत्र नहीं।

भूतकालिक कृदन्त+सहायक क्रिया

उत्तमपुरुष	एकवचन	केन्द्रीय	बहुवचन
	मारल् ह		मारल् हवं
	पारल् ह		पारल् हवं
	सूतल् ह		सूतल् हवं
म०पु०	,, हव		,, हव
स्त्री	,, हउ		,, हउ
उ०पु०	,,हईं		हईं

संयुक्त काल

भूतकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया

भूतनिश्चयार्थ- पूर्ण

उत्तमपुरुष	एकवचन	बहुवचन
केन्द्रीय बोली में	गयल रह्ली	गयल रह्ली
केन्द्र २,४,५	गइल रह्ली	गइल रह्ली
केन्द्र ७,८,९	गया गा रहे	गा रहे
१०,११	गयल रहेउ	गयल रहेन
मध्यमपुरुष पु०	रहल	रहल
केन्द्र ७,८,९,१४	गा रह्य	गा रह्या
१०,११	गा रहा	गा रहेन
मध्यमपुरुष स्त्री०		
	गइलि रहलि	गइलि रहलि
केन्द्र २,४,६	गइल रहू	गइल रहू
७,८,९	गा रह्यू	गा रह्यू
अन्यपुरुष पु०		
	गयल रहल	गयल रहन्
केन्द्र ७,८,९,१४	गया रहा	गया रहैन
१०,११	गयल रहा	गयल रहैन
अन्यपुरुष स्त्री०	गइलि रहलि	गइलि रहलि
७,८,९,१४	गइ रही	गइ रहिन
१०,११	रहा	रहैन

इस तरह भूतनिश्चयार्थ संयुक्त काल में पूर्वकालिक कृदन्त में कोई परिवर्तन नहीं होता किन्तु सहायक क्रियाएं वे विभक्तियां ग्रहण करती हैं जो मूलकाल भूतनिश्चयार्थ की हैं।

वर्तमान निश्चयार्थ पूर्ण-

	एकवचन		बहुवचन
उत्तमपुरुष			
	गयल हईं		गयल हईं
केन्द्र ७,८,९	गवा हईं		गवा हईं
१०,११	गयल हौं		गयल हौं
मध्यमपुरुष	गयल हए	स्त्री	गयल हउ
७,८,९	गइ हऊ		गइ हऊ
साधारण	गयल हव		गयल हवं
७,८,९,१४	गा हव		गा हव
अन्य पु० पु०	गयल ह		गयल हवं
७,८,९	गवा ह		ह गवा हैन

भविष्य निश्चयार्थ-

भूतकालिक कृदन्त के साथ सहायक क्रिया जोड़ कर उसमें भूतनिश्चयार्थ की विभक्तियाँ को जोड़ कर इस रूप की प्राप्ति की जाती है ।

वर्तमानकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया

भूतनिश्चयार्थ- अपूर्ण-

वर्तमानकालिक कृदन्त एवं सहायक क्रिया को साथ लाकर उसमें भूतनिश्चयार्थ विभक्तियों को जोड़ कर इस रूप की प्राप्ति होती है ।

वर्तमान निश्चयार्थ- अपूर्ण-

वर्तमानकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया में वर्तमान निश्चयार्थ विभक्तियों को जोड़ कर इसरूप की प्राप्ति की जाती है ।

उत्तमपुरुष	एकवचन	बहुवचन
	जात हईं	जाणईं
केन्द्र ७	जात हनी	जात हनी
१०,११	जाणाँ	जाणाँ
मध्यमपुरुष	जाणन	जाणव
केन्द्र ७,८,६,१४	जाण्य	जाणय
१०,११	जाणीस	जाणीस
अन्यपुरुष	जाण	जाणव
७,८,६,१४	जाय	जाणन
१०,११	जाणस्	जाणनं

भविष्यनिश्चयार्थ-

वर्तमानकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया के भविष्यनिश्चयार्थ रूपों के योग से इस रूप का निर्माण होता है । कृदन्त में किसी प्रकार के परिवर्तन नहीं होते किन्तु सहायक क्रिया में निश्चयार्थक विभक्तियां लगती हैं ।

वर्तमान अपूर्ण काल में कृदन्त क्रियाओं के साथ √ह धातु के विभिन्न रूपान्तरित सामान्य काल की तरह व्यवहृत होते हैं ।

भविष्यकालिक कृदन्त तथा सहायक क्रिया-

भविष्यकालिक कृदन्तों सहकारी क्रियारूपों के साथ आकर भविष्य संभावनार्थ, आदि रूपों का निर्माण करते हैं । इनमें धातु के पश्चात् लगी -ए विभक्ति भविष्यकाल की प्रतीक है । इस रूप में लिंग तथा वचन के कारण परिवर्तन नहीं होता है ।

उ०पु०	एकवचन	बहुवचन
क०	जाए होईं(जाय के होईं)	जाए होईं
म०पु०	,, ,,	,,
अन्यपु०	,,	,,
केन्द्र ७,८	जाए होईं	जाए होईं

प्रेरणार्थक क्रिया-

यह क्रिया का वह रूप होता है जिससे यह प्रतीत होता है कि कर्ता से क्रिया करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

१- मूल धातु में उल- तथा पुरुष विभक्ति जोड़ कर इस रूप का निर्माण किया जाता है।

अन्यपुरुष	का-उल-एसि	काउलेसि केन्द्र ७,८ कारासि
	चल ,, ,,	चलउलेसि
	उट ,, ,,	उटउलेसि

२- धातु में -वउ जोड़ कर भी इस रूप का निर्माण होता है।

करवउलेसि (करवाया)
धरवउलेसि (धरवाया)
मरवउलेसि (मरवाया)

00

७.४ कर्मवाच्य

वाच्य क्रिया का वह रूप है जिससे हम वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव की प्रधानता का पता लगाते हैं। [illegible] की बोलियों में अधिकांश क्रियापद अकर्मक हैं जिन्हें आवश्यकतानुसार सकर्मक में परिवर्तन कर दिया जाता है।

१- मूल धातु में - आव प्रत्यय जोड़ कर अकर्मक क्रिया को सकर्मक बना देते हैं।

अकर्मक रूप	प्रत्यय - आव	व्युत्पन्न सकर्मक रूप
चढ़		चढ़ाव
गिर		गिराव
सुत		सुताव
ला		लिवाव लवाव १४
कर		कराव

क्रिया के भूतकालिक कृदन्तीय रूप में जाइ जोड़ कर कर्मवाच्य का निर्माण किया जाता है ।

करल न जाइ	करा न जाइ	केन्द्र ७,८,६ कलावनिजात १४
सुनल न जाइ	सुना न जाइ	,,

बाली रूप भी संयुक्त कर ऐसे वाक्यों का निर्माण किया जाता है ।

काम न करइ के बाली

धो न जाइ के बाली

यहां की केन्द्रीय बोली में - आ जोड़ कर भी कर्मवाच्य का निर्माण किया जाता है । यह रूप केन्द्र ७,८,६ में नहीं प्राप्त होता ।

घर	पोताला
धान	कुराला
गगरा	भाला

कर्मणि प्रयोग-

जब क्रिया का अन्वय कर्म के लिंग एवं वचन के अनुसार होता है तो हम उसे कर्मणि प्रयोग कहते हैं । यहां की केन्द्रीय बोली के अतिरिक्त कर्मणिप्रयोग अन्यत्र नहीं पाए जाते ।

(पु०)	भात बुराला
(स्त्री)	दालि बुरालइ
(पु०)	कान बन्हा
(स्त्री)	नाकि बन्हइ
(पुं०)	दिन होला
(स्त्री)	राति होलइ

-आ रूप संयुक्तकर कर्मवाच्य में आने वाले रूप जब स्त्रीलिंग कर्म के साथ आवृत्त होते हैं तो क्रिया का लिंग वचन कर्म के अनुसार ही प्रतिबंधित हो जाया करता है और इसी कारण स्त्री एकवचन में -इ एवं स्त्री बहुवचन में -नी- प्रत्यय जुड़ता है। -नी में -न प्रत्यय पु०बहुवचन बोधक है तथा -ई स्त्रीलिंग बोधक ।

७.५ संयुक्त क्रिया

वा.वा.भा. में क्रिया के इन रूपों का प्रयोग बहुलता से हुआ करता है ।

१- पूर्वकालिक कृदन्त + संयुक्त क्रिया जाना

खाइ जाइ

सूति जाइ

उठि जाइ

पसारि जाइ

पढ़ि जाइ

सुनि जाइ

लिखि जाइ

हँसि जाइ

नाचि जाइ

कूदि जाइ

-आ से व्युत्पन्न गयल रूप (भूतनिश्चयार्थ)

	७,८	केन्द्र ६	केन्द्र ११,१४
खाइ गयल	मारि गा	ग	गइ ग
सूति गयल	सूति गा		
उठि गयल	उठि गा		
छोड़ि गयल	छोड़ि गा		
चढ़ गयल	चढ़ गा		
मरि गयल	मरि गा		

गयल रूप में स्त्रीलिंग बोधक प्रत्यय -इ जोड़ कर समस्त रूपों को स्त्रीलिंग किया जा सकता है ।

पूर्वकालिक कृदन्त + संयुक्त क्रिया जा भविष्यनिश्चयार्थ

	७,८	१४
खाइ जाई	जाए	जाई
नाचि जाई		
उठि जाई		

पड़ि जाई

फाटि जाई

मारि जाई

चूनि जाई

पूर्वकालिक कृदन्त + चुकना (पुनर्निश्चयार्थी)

	केन्द्र ७,८,६,१४
खाइ चुक्ल	चुका
रोइ ,,	,,
गाइ ,,	,,
नाचि चुक्ल	

पूर्वकालिक कृदन्त + देना

	७,८	६,१४	१०
नाचि देलेसि	दिहेसि	देलेसि	नाचस्
हंसि देलेसि	,,		हंसस
रोइ देलेसि	,,		

पूर्वकालिक कृदन्त + डालब

	१४
काटि डालब	डारब
खाइ डालब	

केन्द्रीय बोली में इसके स्थान पर घालब संपरिवर्तक भी प्राप्त होता है ।

पूर्वकालिक कृदन्त + लेना	७,८	६,१४	१२
खाइ ल्या	ल्य		ल
चूनि ल्या			
पी ल्या			
छूति ल्या			

पूर्वकालिक कृदन्त + सकना

	७,८	६,१४	१२
खाइ सकइ	सकइ	स	सक्स
सुनि सकइ			
उठि सकइ			
छोड़ि सकइ			

संयुक्त क्रिया वर्तमान कालिक कृदन्त + सहायक क्रिया

केन्द्र ७,८

सुनत जाइ

उठत जाइ

हंसत जाइ

पढ़त जाइ

भूतकालिक कृदन्त + संयुक्त क्रिया

केन्द्र ७,८	६
कयल जाइ	किया जाइ
सुनल जाइ	सुना जाइ
उठल जाइ	उठा जाइ
बइठल जाइ	बइठा जाइ

क्रियार्थक संज्ञा + संयुक्त क्रिया

इस रूप में केवल चा रूप ही संयुक्त हो पाता है अन्य नहीं ।

उठव् चा

खाव् चा

सुतव् चा

पीअव् चा

पुनरुक्तिवाचक संयुक्त क्रिया-

रहि रहि , सुनि सुनि

कह कह , उठाइ उठाइ

*****

अध्याय - ८

क्रिया विशेषण

क्रिया विशेषण

शब्दों के वे रूप जो विशेषण एवं क्रिया रूपों के पूर्व आकर उनकी विशेषता बताते हैं क्रियाविशेषण कहे जाते हैं। सामान्यतया ये वाक्य में मूल रूप में ही व्यवहृत होते हैं। प्रयोग के अनुसार इनके तीन रूप होते हैं। साधारण रूप, संयोजक रूप तथा अनुबद्ध रूप। अर्थ के अनुसार क्रियाविशेषणों के चार रूप होते हैं।

काल वाचक

स्थान वाचक

परिमाण वाचक

रीतिवाचक

वितरण की दृष्टि से इस जनपद की बोलियों में समस्त प्रायोगिक रूप किसी न किसी रूप में प्राप्त होते हैं। यदि इनमें परिवर्तन देखा जा सकता है तो वह केवल ध्वन्यात्मक प्रतिध्वन्यित है।

८.१ कालवाची क्रिया विशेषण-

केन्द्र १०,११,१२ के अतिरिक्त ये रूप सम्पूर्ण जनपद में समान रूप से व्यवहृत होते हैं।

आजु आजु

कालिह काली-बिहाने

पराउं परों दिन

नरशादिन नरों-दिन

अब अबकी

जब जब

कब कबकी

तब

फेरि

तुरन्त कटै

सबेरे

पाछि

पाछे

एतना में

रोज

दिन भर

कब का

एतना देर

कहत दाएं

एकइ दाएं

हर दाएं

दाएं बेरी संपरिवर्तक साथ साथ आते हैं। वितरण की दृष्टि से दोनों समान हैं। और स्वेच्छापूर्वक प्रयोग में आते हैं।

एक बेरी	एक दाएं
दुइ बेरी	दुइ दाएं
हर बेरी	हर दाएं

८.२ स्थानवाची क्रियाविशेषण

	केन्द्र १०,११
इहां	इहां
उहां	उहां
जहां	जहां
कहां	कहां
तहां	
आगे	आगू
पाछे	पाछू
ऊपर	उपरे
नाले	बाले

पाछे

एतना में

रोज

दिन भर

कब का

एतना देर

कइठ दाएं

एकह दाएं

हर दाएं

दाएं बेरी संपरिवर्तक साथ साथ आते हैं। वितरण की दृष्टि से दोनों समान हैं। और स्वेच्छापूर्वक प्रयोग में आते हैं।

एक बेरी	एक दाएं
दुइ बेरी	दुइ दाएं
हर बेरी	हर दाएं

८.२ स्थानवाची क्रियाविशेषण

	केन्द्र १०,११
इहां	इहां
उहां	उहां
जहां	जहां
कहां	कहां
तहां	
आगे	आगू
पाछे	पाछू
ऊपर	उपरे
ताढे	ताले

खाली	
बस	
बाउर	
बराबर	
अधिक	
कम	
एतना	एतना
ओतना	
जेतना	जेतरा
केतना	केतरा

८.४ रीतिवाची क्रियाविशेषण-

अइसे	
ओइसे	
कइसे	
जइसे	
तइसे	
धीरे	
एकाएक	भीरा बके १३
सेती	सेतिका १०,११,१३
अपनेह	
फट से	
भट से	भटनै १०,११,१३
उलटा	
कहसहू	
बिलकुल	
सही	
सच्चाह	
हाँ	
यहीबदे	

काहे

नाहीं

८.५ नकारात्मक अव्यय-

नाहीं

न

जीनि

मति

८.६ समुच्चयबोधक-

पदग्रामिक रचना का यह वर्ग जो दो पदग्रामों या वाक्यांशों को जोड़ता है।

संयोजक- ।उ उ र। ।अ। यह समस्त क्षेत्र में समान रूप से विलसित होता है।

।पुनि इस रूप का प्रयोग केन्द्र १ तथा ७,८,६ में प्राप्त होता है ,अन्यत्र नहीं।

८.६.१ विभाजक-

समस्त जनपद में बांगरी बोली को छोड़ कर एक ही विभाजक काम में आता है।

कै

हम जानत रहे कै हमार काम न होए । केन्द्र ७

हम कल्ही कै तूं चलि आया । केन्द्र २,३,१

८.६.२ विरोधक-

पै, पर, एवं बाकी तीन विरोधक यहां प्रयुक्त होते हैं जिनमें प्रथम का केवल जौंसा के उपरी भाग में तथा अंतिम दो का सर्वत्र विशेषतः तथा केन्द्रीय बोली में प्रयोग होता है।

पै गिरा पै उटि गा ।

केन्द्र ७

पर हम कहे पर नाही मानेन ।

केन्द्र ७

वोन गबन पर बिदा नाहीं भयल ।

केन्द्र १,२,३,४,५

बाकी हम कहली बाकी सुनलेनि नाहीं ।

केन्द्र १,२,३,४,५ ।

समुच्चय बोधक- दशावाची

प्रस्तुत जनपद की बोलियों में जइसे, जस,जो,जबतक,मति,जउं,नाहित समुच्चय बोधकों का प्रयोग होता है जिसमें जस तथा तस का प्रयोग केवल अवधी भाषी क्षेत्र में होता है, अन्यत्र नहीं ।

जइसे ऊ जइसे आयेन जइसे बाघ ।

विस्मयादि बोधक-

मिर्जापुर जनपद की बोलियों में विस्मयादिबोधक शब्द अधिक संख्या में नहीं प्राप्त होते । सामान्यतया हाइ, बापरे, धन्नि, तथा अग्गे शब्द में व्यवहार में लाए जाते हैं । इनमें से प्रथम तीन रूप प्राय: सर्वत्र व्यवहृत होते हैं किन्तु अन्तिम रूप का प्रयोग केन्द्र सं० १० में खैरवार जाति ही करती है ।

परिशिष्ट

(क) बोली के चुने हुए नमूने

(ख) ग्रन्थ कथन

(ग)

परिशिष्ट - (क)

बोली के चुने हुए नमूने

कहां जात बाड़ू भाई । छोटका भाई के लड़िके ससुर मा गइल बाड़न न ओमे जात बाड़ी । त भैया हम जात रहली अ सांप बिल मे पड़ल रहलस । हमार बात सुनल । का कहीं भाई बड़ी फजीहत भइल । हमार के भागह के पाल तुरते ।

(कहां जा रहे हो भाई ? छोटे भाई के ससुर मा गए हैं, उसी में जा रहा हूं । तो भैया, मैं जा रहा था और सांप बिल में पड़ा था । मेरी बात सुन रहे हो । क्या कहूं भाई बड़ी पोशानी हुई । मुझे तुरत भागना पड़ा ।)

केन्द्र सं० २
बीहड़

एक गवंरइवा रहलि अ एक गौरा रहल । गवंरइवा मरि गइलि त गवंरवा दुसर लेइ आयल । अवतइ गवंरइवा पुरनकी क कूलि अण्डा फचाफच पटकि देहलेसि। ई कूलि एक दुलही देखति रहलि, लागलि रोवइ । अपने परानी से कहलेसि कि हम मरि गइलि त तुहूं दुसरि मेहरि ले आइब्या अ हमरे लइकन क इहइ हालि होई।

(एक गौरइया थी और एक गौरा । गौरइया मर गई तो गौरा दूसरा ले आया । आते ही गौरइया ने पहली गौरइया के अण्डे पटकदिए । यह सब एक बहू देख रही थी, वह रोने लगी और अपने पति सेबोली- कि मैं मर गई तो तुम भी दूसरी स्त्री ले आओगे और मेरे बच्चों की यही दशा होगी ।)

केन्द्र सं० ३ - नन्दना

एकराजा रहे । ओनके तीन रानी रहिन । ऊ मल्ल में बइठ के बोलत रहिन कि जे कोई मल्ल देखत रही ओके इनाम मिले ।

(एक राजा थे । उनको तीन स्त्रियां थीं । वे मल्ल में बैठ कर बोल रही थीं कि जो कोई मल्ल देखता रहेगा उसको इनाम मिलेगा ।)

हम देखताई	। मैं देख रहा हूं।
ऊ देखत रहा	। वह देख रहा था ।
तू देखत रह्य	। तुम देख रहे हो ।
तू देखत रह्यु	। तुम देख रही थी ।

केन्द्र सं० ४ - पचरांव

हम देखत रह्ली । मैं देख रहा था ।

हम सोचत रह्ली कि तुहने होबी । मैं सोच रहा था कि तुम रह होगी।

हम होती त काम न बिगड़ती । मैं होता तो काम न बिगड़ता।

ऊ लोग देखत रह्लन औ हम बइठल रह्ली।वे देखते और मैं बैठा रहता।

केन्द्र सं०५ चुनार

ऊ देखत रहल । वह देख रहा था ।

ऊ देखत रहलन। वे देख रहे हैं ।

हम देखलेइ होइत त ओके न छोड़ित।मैं देखे होता तो उसे न छोड़ता ।

तू भकहू त छोड़ि दिहली नाहीं त मारि डलती।

(तुम ने जो छोड़ दिया नहीं तो मार डालता)

ऊ होतिन त हमहूं चलती । वे होतीं तो मैं भी चलती ।

केन्द्र सं० ६ - धर्मपुर

ऊ देखत रहल । वह देख रहा था ।

ऊ देखत रहलन। वे देख रहे थे ।

हम देखले होवत त ओके न छोड़ित।

हमके कष्ट होत रहा । मिहरारू के कष्ट भवा होए । का बात होइ रही बा । तूं देखत्य त जनत्य के बेमार भए पर का होत । हम राति भर बइठा रहे सिरहाने पर तनिकउ न घटान । त डाक्टर के बलावइ खातिर मनई पठए। जान्या लौटत मान राति होइ गइ । अब का होई । हम सोचे मामिला बिगदा पर बचि गा । भगवान क किरपा रही ।

(मुझे कष्ट हो रहा था । स्त्री को कष्ट हुआ होगा । क्या बात हो रही है । तुम देखते तो समझते कि बिमार होने पर क्या होता है । मैं रात भर सिरहाने बैठा रहा पर थोड़ी भी कमी नहीं हुई । डाक्टर को बुलाने के लिए आदमी भेजा । समझो, लौटते-लौटते रात हो गई । अब क्या हो ? मैंने सोचा मामला बिगड़ गया है पर बच गया । भगवान की दया थी ।)

केन्द्र सं० ७ मुबरा

तं खइबे	। तुम खाओगे
ऊ खाई	। वह खाएगी, वह खाएगा।
सब लोग उनके खइहीं	। वे खाएंगी।
तं खइबे	। तू खाएगा । तू खाएगी।
मं खइबू	। मैं खाऊंगा ।
तंय खालस	। तुम खाते हो, खाती हो ।
ऊ खाय	। वह खाता है, वह खाती है।

बियाह में पहिले जइहीं लगावइ । आइके बात बातें करहीं । फिन बाद में फिरहीं, तब देखै जन्हे जइहीं, त ले जइहीं कुण्डा रोटी बोझ के । त दिन पक्किाईं।

(विवाह में पहले तय करने आयेंगे । आकर बात करेंगे । पुन: वापस चले जाएंगे । पुन: देखने आयेंगे और पुन: भोजन इत्यादि ले आएंगे ।)

केन्द्र सं० १० बमनी

बर बैतरी मंहस माल पायन । बरगद के नीचे मैंने मनी मिली।

लाला। चाउर कवन भाव बेचथौस । लाला चावल किस भाव से बेचते हो।

मंः गाय मंहस दुहि सकथौं । मैं गाय मैंः दुह सकता हूं ।

तंय त मोर परोसी लगथौस । तुम तो मेरे पड़ोसी लगते हो ।

मोर 'दाहनी हथोरी' खजुवाथ । मेरी दाहिनी हथेली खुजलाती है ।

एक राजा जात रहस । साथे डोली रहस। ओमे सुन्दर कनियां बइटल रहस । राजा डोली एक बगइचा में उतरवाइ लिहन व कहन म देखा चाहथौं, बाकी सबै गाठियाथन ।

(एक राजा जा रहा था । साथ में पालकी थी । उसमें सुन्दरी वधू बैठी थी । राजा ने डोली एक बाग में उतरवा दी और कहा मैं देखना चाहता हूं किन्तु सभी इकट्ठे हुए जा रहे हैं ।)

केन्द्र सं० ११

एक बामन देवता रहैन । त ओनके मेहरारू के लइका का संजोग रहल । त बैमउरे पर बड़ा करइला रहल । बामन देवता करइला तोड़लेनि । एक दिन तोड़ लेनि, दूइ दिन तोड़ लेनि । त ओमे से नाग डुलिया निकलन । जब फुफकारि क काटइ दउड़न त बामन देवता कहलेनि के का कहीं भइया के हमरे मेहरारू क अइसन हालति बा ते हम तोड़ए अइली ।

(एक ब्राम्हण देवता थे । तो उनके स्त्री को बच्चे का संयोग हुआ । दीमक कीबांदी पर बहुत करैला था । ब्राह्मण देवता ने करैला तोड़ा । एक दिन तोड़ा, दूसरे दिन तोड़ा तो उसमें से प्यारा नाग निकला । जब फुफकार कर काटने दौड़ा तो ब्राह्मण ने कहा कि भाइ मैं क्या कहूं । हमारे स्त्री की यह स्थिति है तो मैं तोड़ने आया ।)

केन्द्र सं० १ पारासी

गड़ा खजाना

एक अदिमी के चारि लइका रहइं । चारों बड़े कंगचोर रहइं । जब वह अदिमी मरै लागिल त वह आपन चारों बेटवन के बलाइ के कहिस कि जवन खेत के तुम्हो जोतत बोवत बाटे खेत मैं एक बहुत बड़ा रुपया क हण्डा गाड़ल बाटै । मोर मरले के बाद ओके खूब गहिरा गोड़ब । कहीं न कहीं वह रुपया के हण्डा तोम्हके जरूर मिलि जाई ।

लड़िकन जो अपन बाप के मरि जाए के बाद वह खेत के जाइ के गोड़िन और रुपया के हण्डा का पता नहीं चलिस । लजाइ के जवन किहे तवन अपन माई लिहां पहुंचिके अउर सब हाल ब कहिन । महतारी हँस के कहिन अबहीं खेत के नहलइ कोड़ल । जा तुहरन अउरो कोड़ । रुपया क हण्डा जरूर मिली ।

गड़ा खजाना

(एक आदमी को चार पुत्र थे । चारों बड़े कामचोर थे । जब वह आदमी मरने लगा तब वह अपने चारों पुत्रों को बुला कर कहा कि जिस खेत को तुम लोग जोतते बोते हो , उस खेत में एक बहुत बड़ा रुपए का खजाना गड़ा हुआ है । मेरे मरने के बाद उसको बहुत नीचे तक गोड़ना । कहीं न कहीं वह रुपए का खजाना तुम लोगों को जरूर मिलेगा ।

लड़के अपने बाप के मर जाने के बाद, उस खेत को जाकर खूब गोड़े लेकिन उस रुपए के खजाने का पता नहीं चला । शर्म के मारे वे लोग जिस कार्य को किए थे अपने मां के पास पहुंच कर सम्पूर्ण हाल कहे । माता ने हंस कर कहा अभी खेत नहीं गोड़ा गया । जाओ । तुम लोग और गोड़ो । रुपया का खजाना अवश्य मिलेगा ।)

केन्द्र १२ रामपुर पहारी

एक गड़रिये के लड़के की कथा

शिकारी : ऐ लड़का तोर का नांव हवै ?

लड़का : मोर नांव मोहन लागै । पालागी । अपने का कह रहे हैं ।

शिकारी : का तैं बताइ सकथीस कि इहां से सदर कितना दूर हवै ।

लड़का : इहां से छ:-सात कोस हवै मगर ओ डहर बहुत खराब हवै ।

शिकारी : मैं यह बन में डगरी भुलाइ गयल हौं, मैं भूख पियासल यह बन में भुलाइल फिरथौं । मोर साथी संगी छुट गइन हैं । मैं बहुत खोजौं काहीं नहीं मिलिन । तनिक देरी के लिए ओ तैं आपन मेढ़िन के छोड़ दे । मैं तोर गुन के कबौं न भूलहूं । औ तोके कछूं कुछ देहूं ।

लड़का (छमा कर) धीर धर-मैं अपने मेढ़िन के अकेले नहीं छोड़ सकूं । मैं तुंहर संगे चलहूं बकी मेढ़िन को कुलि एका औरत खिलिआइ जाहीं। जंगल हुड़वा-चितवा अउर चोर मार खाहीं ,ले जाहीं ।

शिकारी :तो फिर का होही ।त तुहर मेंढ़ त नाहीं हुहीं । एकाध टे हुड़ार खाइ डालही, एक दुइ टे चोर ले जाहीं, त तुहार का बिगड़ जाही। नुकसान बहन भी होइ वह किसान क होई । मैं तुंहर दु:ख के कारन मैं अइसन इनाम देहूं कि साल भर मैं मेंढ़ चराइ के नाहीं कमाई सकब।

o

एक गड़रिये के लड़के की कथा

शिकारी : ऐ लड़के तुम्हारा क्या नाम है ?

लड़का : मेरा नाम मोहन है । प्रणाम ! आप क्या कह रहे हैं ?

शिकारी : क्या तुम बता सकते हो कि यहां से सदर कितना दूर है ?

लड़का : यहां से छ: सात कोस है, लेकिन रास्ता बहुत खराब है ।

शिकारी : मैं यहां बन में रास्ता भूल गया हूं मैं भूख प्यास से इस बन में भूल कर फिर रहा हूं । मेरे साथी-संगी छूट गए हैं । मैंने बहुत ढूंढा, लेकिन नहीं मिले । थोड़ी देर के लिए तुम अपनी भेड़ों को छोड़ दो ।मैं तुम्हारे गुणों को कभी नहीं भूलूंगा । और तुमको कभी कुछ दूंगा ।

लड़का (क्षमा कीजिए) धैर्य धारण कीजिए । मैं अपनी भेड़ों को अकेले नहीं छोड़ सकता । मैं तुम्हारी साथ कर सकता हूं लेकिन संपूर्ण भेड़ें इधर उधर छिटक जायेंगी । और हुंडार, चिता और चोर मार खायेंगे ले जायेंगे ।

शिकारी तब फिर क्या होगा । लेकिन तुम्हारी भेड़ तो नहीं है । एक दो हुंडार खा डालेगा, एक दो चोर ले जायेंगे, तो तुम्हारा क्या नुकसान हो जायेगा । नुकसान जो भी होगा वह किसान का होगा । मैं तुम्हारे दु:ख के कारण ऐसा इनाम दूंगा कि एक वर्ष भेड़ चरा कर नहीं कमा सकते ।

केन्द्र सं० १३ रामपुर
सूचक- रामधनी ,पटारी

शिकारी : ये बाबू । निगहा एन्दे नामे ?

लड़का : एंगहानामे मोहन कई। ओल्लागादन- एन्दराबादप ।

शिकारी : नीनरिन तेन्गोइ सक्काकइ कि आ बजार एकाच्छादई ।एकागच्छारई।

लड़का : इस्से पंचे सरे कोस रई । काना हले मल्ला दौ ।

शिकारी : मोहन- ऐन ई होइह० नू हले मुलरा केरा । ओन्दका मोक्का भिना इन्नुम कुह्रादन । एह०ना संगि मा ऐंगहासुल अंबारकेरा। ऐन बारिन खूब देहकन लेकिन माला सक्करर । कुक्की घंड़ी रै मेड़हीन अम्बाकिया । ऐन निगांहा नंक्काकरथम माला मुलरोन । की निंगा मुल्लीचियोन ।

लड़का : माई । एंगहा तुल माला मनो ऐन मेंगहामेड़होन माला अम्बोन । ऐन निगहा मने माला कोन येंगंहामेड़नी मुलरी कोर,एंगहा मेड़ होन. तेनुखा घरी मोखी माला होले चोरर कोर कोर ।

शिकारी : तब येन्दैर मनोन । मेड़ नोगा निगहा मल्ली । ओण्टा एण्टन हुड़ार घरी मोखी, मुण्टम होटम चोरर हूं होइ कोर तोब निंगहा एमटा बिगरारी। बिगड़ारी होल्ले निंगा गोल्लस मही बिगड़ारी।

केन्द्र
सूचक- हरिवंश ,धांगर, सिलथम

एक समय कै बात अहइ अकबर बादसाह के दरबार मैं कुलि नउ रतन एकट्ठा भएन । औन म से एकठो मुसलमान कहेसि कै बीरबल के सबसे जादे पइसा काहे मिलथ । बादसाह कहेन त कहेन कै एकर जवाब हम बाद मैं देबइ । कुछु दिन बाद ऊंटन क एक झुण्ड सड़कै पर जात रहा । बादसाह वह मुसलमान से कहने कै जाइ क पूछ कै ऊंटन पर का लदा बा । मुसलमान दउड़ा, पूंछि क राजा के पास आइ व कहेसि के ऊंटन पर चाउर लदा बा ।

(एक समय की बात है, अकबर बादशाह के दरबार में सभी नवरत्न इकट्ठे हुए ।उनमें से किसी मुसलमान ने कहा कि बीरबल को सबसे अधिक पैसा क्यों मिलता है । बादशाह हंसे और बोले कि इसका उत्तर मैं बाद में दूंगा । कुछ दिन बाद ऊंटों का एक झुंण्ड सड़क पर जा रहा था । बादशाह ने मुसलमान से कहा कि जाकर पूछो कि ऊंट पर क्या लदा है । मुसलमान दौड़ा ,पूछ कर राजा के पास आया और कहा कि ऊंटों पर चावल लदा है ।)

केन्द्र सं० ६ दुराजनीपुर

-o-

एक मनई के चारि लड़िका रहे । चारिउ बहुत कमजोर रहे । जब ऊ आदमि मरइ लाग त ऊ अपने चारिउ लड़िकन के बलाइ कह कहिसि कि जउने खेत के तू पचै जोतत बोवत ह ओहि खेत मैं एक बहुत बड़ रूपिया क खजाना गाड़ा अहै । हमरे मरे पर ओकै बहुत तरे तक गोड़ । कहंउ न कहंउ उ खजाना तोहपचन जरूर मिली।

(एक आदमी के चार लड़के थे । चारों बहुत कमजोर थे । जब वह आदमी मरने लगा तब उसने अपने चारों लड़कों को बुला के कहा कि जिस खेत को तुम लोग जोतते बोते हो,उस खेत में बहुत बड़ा रूपया का खजाना गड़ा है । मेरे मरने पर उसे बहुत नीचे तक गोड़ो । कहीं न कहीं वह खजाना तुम लोगों को जरूर मिलेगा।)

केन्द्र सं० १५ मैलोढ़

परिशिष्ट (ख)

सहायक ग्रन्थों की सूची

ग्रन्थ-चयन

१- उदयनारायण तिवारी	- हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, प्रयाग सं० २०२१ ।
२- कामताप्रसाद गुरु	- हिन्दी व्याकरण, काशी, संवत् २००६।
३- जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन	-भारत का भाषा सर्वेक्षण(अनुवाद)उ०प्र०, १९५६ई०।
४- धीरेन्द्र वर्मा	- विशेषांक, प्रयाग, १९६०ई०।
५- विश्वनाथ प्रसाद	-भाषा विज्ञान का पारिभाषिक शब्दकोष, पटना १९५५ ई० ।
६- उदयनारायण तिवारी	- भोजपुरी भाषा और साहित्य, विहार, राष्ट्रभाषा परिषद् पटना, प्रथमसंस्करण, १९५४ ।
७- डा० मुरारीलाल उपरैती	- हिन्दी में प्रत्यय विचार, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्रथम संस्करण, १९६४ ।
८- डा० बाबूराम सक्सेना	- इवोल्युशन आफ अवधी, इण्डियन प्रेस प्रकाशन ।
९- डा० अमरबहादुर सिंह	- अवधी तथा भोजपुरी की सीमांत बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के लिए (डी०फिल्०उपाधि) शोध-प्रबन्ध ।
१०- ए०ए० हिल	- इन्ट्रोडक्शन टु लिंग्विस्टिक स्ट्रक्चर्स, न्यूयार्क, १९५७।
११- ए०आर०केल्कर	- द फोनोलाजी एण्ड माफलिाजी आफ् मराठी, ए थैसिस प्रेजेन्टेड टु द फैकल्टी आफ द ग्रेजुएट स्कूल आफ कार्नेल युनिवर्सिटी फार द डिग्री आफ डाक्टर आफ् फिलोसाफी, १९५८ ।
१२- ब्लाक एण्ड ट्रेगर	- आउटलाइन आफ् लिंग्विस्टिक एनैलिस, लिंग्विस्टिक सोसाइटी आफ् अमेरिका, १९४२ ।

१३- चार्ल्स एफ०हाकेट - एक्कोर्स इन माडर्न लिंग्विस्टिक,न्यूयार्क,१६५८ ।

१४- डैनियल जोन्स - ऐन आउट लाइन आफ़ इंग्लिश फोनैटिक्स, कैम्ब्रिज ,१६५६ ।

१५- गवर्नमेंट आफ़ इण्डिया- ए बेसिक ग्रैमर आफ़ हिन्दी लैन्गुएज़, १६५८

१६- एच०ए०ग्लीजन - ऐन इन्ट्रोडक्शन टु डिस्क्रिप्टिव लिंग्विस्टिक्स, न्यूयार्क,१६५६ ।

१७- एल० ब्लूमफील्ड - लैन्गुएज,लंदन,१६५५ ।

१८- मैरिओ ए०पेई एण्ड एफ०गैनर- ए डिक्शनरी आफ लिंग्विस्टिक्स,न्यूयार्क, १६५४ ।

१६- राबर्ट ए०हाल - लीव योर लैन्गुएज़ एलोन , १६५० ।

२०- एस०एच०केलौग - ए ग्रैमर आफ हिन्दी लैन्गुएज, लंदन,१६५५ ।

परिशिष्ट -(ग)

(जनपद में प्रयुक्त उन शब्दों की अनुक्रमणिका जो जनपद के उन्हीं क्षेत्रों में प्रयुक्त होते हैं जिनके सम्बन्ध में अंकद्वारा संकेत हुआ है । अंक संख्या केन्द्र संख्या की सूचक है ।)

अ

अंउस १,२,३,४,५,६,७,८,६,१४,१५ ।

अंनकस १,२,३ ।

अस्मा -रोटी १३ ।

अम्पठ-सट्टा ११,१२।

अस्तीर-धीरे से ११,१२ ।

अंखिगर १,२,३,५,७ ।

अधेर-बहुत ११,१२।

अक्क- अब १३।

अदिन-इसे १३।

-दुर्दिन १,२,३,४,५,६,७,८।

अम्म-पानी १३।

अबर्क ११,१२।

अमर्री-दाल १३।

अहडो-बैल १३।

अमचुर १,२,३,४,५,६,७ ।

अंकुसी १,२,३,४,५,६।

अग्गे-स्त्रीवाची संबोधन ११,१२।

अठमी-अष्टमी ११,१२ ।

अर्री-शराब १३।

अंगा- कुरता १०।

अंड़ला-साग १३।

अल्ला-कुत्ता १३ ।

आ

आमा- नहीं १३।

आगू-आगे ११,१२।

आस- वह १३।

आयी-मां १३।

आची-पीढ़ा ११,१२।

आर- वे १३ ।

बिच्छुका डंक १,२,३,४,५,६,७,८,१३,१४।

आरा-मोटा ११,१२।

लकड़ी चीरने का यंत्र १,२,३,४,५,६।

आवग्ग-इतना १३ ।

इ

इसन- यहां १३।

इथे-यहां ११,१२।

इपा-नीचा १३।

इसु-तेल १३ ।

उ

उक्ता -दिन १३ ।

उघरा-खुला १,२,३,११,१२।

उघार-खुला १,६,७,८ ।

उघारी-खोलेगी १,३ ।

-चाभी ११,१२ ।

उरवा-उजाला १३ ।

औ

औगीक्ख -नाखुन १३ ।

औइ-गाय १३ ।

-स्वीकारात्मक सूचना १।

-वै ७,८,६ ।

औड़ा-चिड़िया १३ ।

औखा- गरमी १३ ।

औन्टा-एक १३ ।

औढ़ना-वस्त्र ११,१२ ।

क

कहींचि- कुछ ११,१२ ।

कैतरा-कितना ११,१२ ।

कंचा-कच्चा ११,१२ ।

करसा-पानी तीव्रता ११,१२ ।

कोटा-कुत्ता १०।

कोटी-कुतिया १०।

कुटुम-कुटुम्ब १० ।

कोहां-बड़े १३ ।

कत्था-बच्चा १३ ।

काली-कल ११,१२।

कपड़े-शिर १३ ।

कते- कहां ११,१२।

किनरे-देखने १०।

कोहां-ज्येष्ठ १३ ।

कीचिरी -कपड़ा १३ ।

कूबी- किनारा १३।

कड़मा-कमर १३ ।

कूल - पेट १३ ।

किस्स- सूअर १३ ।

कीटा-ठंढा १३ ।

कूला-भीतरी १३।

कड़कुर-दातुन १३।

कांचा-फेना १३।

ख

खैर- गर्दन १३।

खन्ह-आंख १३।

-मकान का एक भाग १,३ ।

खद्दर-लड़का १३ ।

खेलीहाथ-दाहिना हाथ १२ ।

खटगोड़ा-खटमल १०।

खप्पा-जोंक १३ ।

खपली -दुबला १३ ।

खांड़ -नदी १३ ।

-कच्ची चीनी १,२,३,४,५,६,७,८ ।

खांध- कंघी ११।

खेवड़ा-कान १३ ।

खेक्खा-हाथ १३ ।

खैस्स- ध्यान १३।

खेखोली-लोमड़ी ११,१२ ।

खोसा-पीछे १३ ।

खोंपा-केश पाश १०,११,१२ ।

खोंथा-घोंसला १,२,३ ।

ग

गलकच्चक-फक्कड़ ११ ।

गुचा-खाना १३ ।

गुंडा-आंटा १३ ।

गेच्छा-दूर १३ ।

गेदुर- चमगादड़ ११ ।
गोईं-सहेली ११ ।
गोरी-दुलहिन १० ।

घ

घर-मुफसे ११।
घन-लोहे का हथौड़ा १०,११,१२ ।
घुटुनी-जेठानी १३ ।

च

चलनी १,२,३,४ ।
चतरमुहवा-गांजा ११,१२ ।
चपटा-चमड़ा १३ ।
चन्दा-चांदनी १३ ।
चुट्टी-बाल १३ ।
चुतना-नींद १३ ।
चोआ-उठना १३ ।
चोंगी-चीलम ११,१२ ।
चोहेर-कीचड़ १३ ।
चिव्ब-आग १३ ।
चिमटी-चींटी ११,१२ ।
चिरनी-कंघी १०
चिहुरा-गिलहरी ११,१२

छ

छव- छ: १० ।
छोलू-फक्कड़ ११,१२ ।
छेरिका-गड़ेरिया ११,१२ ।
छेरी-बकरी १० ।
छिपनी-थाली १३ ।
छीपा-थाली १० ।

ज

जहही- नींव १०।

जासन-जमा १३ ।

जुक्की-बड़ा १३ ।

जुक्का-तिरछा १३ ।

जुच्छा-खाली ११,१२।

जोख-युवक १३ ।

जोन-चंद्रमा ११,१२,१३ ।

झ

झरिया- झरना १०,११,१२ ।

झार-मरचे की तिताई ११,१२ ।

झूरा-सूखा ११,१२ ।

झेलुआ-झूला ११,१२ ।

झलुआ-झूला १,२,३,४,५,६,७,८ ।

ट

टहंचा-मचान १०।

टेढ़गा-तिरछा ११,१२ ।

टेनी-तौलने में बेईमानी १०,११,१,२,३,४,५,६ ।

ठ

ठोकर-ठोकर १०,११,१२,१,२,३,४,५,६ ।

ठेहुना-घुटना ११,१२ ।

ठेहुन १,२,३,४।

ठाट- खपरैल या फूस रखने के पहले की सज्जा १,२,३,४ ।

ड

डरया-डरपोक १०,११।

डबरा-ऊंचा नीचा ११,१२।

डांगर-दुर्बल ११,१२,१,२,३,४ ।

डेरी-बांया १०,११ ।

डम्भा- कटोरा १०।

डोरिया-स्त्रियों का बाल बांधने का फीता १०।

डउका-लड़का ११,१२ ।

डउकी-लड़की ११,१२ ।

डउकी-लकड़ी का बना हुआ बर्तन १,२,३ ।

ढ

ढश्चा- छप्पर १०।

ढड्हला-लब्बू ११,१२।

ढारी- मार्ग १,३,४,५ ।

-सूत की बनी हुई पेटी जिसे औरतें कमर में बांधती हैं ११,१२।

ढेकुना-खटमल ११

ढेटू-गला ११,१२ ।

ढुहरा- धुंध ११ ।

ढोला-जू ११।

ढील-जू १,३,४,५ ।

-ढीली १,२,३,४।

ढीबा-रुपया १३ ।

ढोड़हा-नाला १३।

ढोर- जानवर ११,१२ ।

त

तरकी- कान का भूषण १,३,१०।

तारकि-लकड़ी जो ईंधन के काम आती है १३ ।

तारहत्थी-हथेली १०।

तरी-नीचे ११।

तरे-नीचे १,३ ।

तरपांवा-पांवके नीचे १० ।

तखमा- जीम १३ ।

तठगा- ग्राम १३ ।

ताची-फूफी १३ ।

तिन्ही-बलवान १३ ।

तीरिवल-चावल १३ ।

थ

थथवा- झगड़ालू ११ ।

थथर-परेशान १,३ ।

द

दूध- स्त्री का स्तन १० ।

दुदुही-स्तन १३ ।

दउआ-पुरुषावाची संबोधन ११।

दुइहां-दूर ११,१२।

दमकनी - थोड़ा ११,१२।

दुलही-पुतरी ११।

दौबरी-फटना १० ।

ब

बरकस- स्वस्थ १,२,१०,११।

प

परसुल-पसुल १०।

पच्चीआजी-दादी १३।

पारती-भूमि जिस पर खेती न हो ११,१२,१,२,३,४,५,६ ।

पहियर- पाहुना १३ ।

पन्ना-लोहा १३ ।

पल्ल- दांत १३ ।

परता-पहाड़ १३ ।

पनैरा- सफेद १३ ।

फ स्सल-पत्थर १३ ।

बिरान- पराई १०।

बिफक्फै- बृहस्पति ११।

बिल्ली- उजाला १३।

बिलचा-चमकीला १३।

बिन्दकी- तारा १३।

बिहना-धूप १३।

बिज्जड़- सांड़ ११।

बीड़ी-सूर्य १३।

बेक-नमक १३।

बेंगचा- मेंढक १३।

बेज्जा- विवाह १३।

बैर-पान १३।

बौकला- छिलका १०,११,१,३।

म

मंडी- लकड़ी १३।

मदरी- छप्पर १०।

मच्चा- बुआ ११।

माटो- बड़ी बहन का पति ११।

मूसु- पुआल १३।

मोड़ी-घासफूस ११।

मौराचकेर अचानक ११।

र

रथी- वह चारपाई जिस पर व्यक्ति मर जाता है उसी को अर्थी के रूप में काम में लाया जाता है। ११,१२।

रिक्क-थोड़ा ११,१२।

रीर- आंसू ११,१२।

ल

लकमा- नाश्ता १३ ।

लह्ठी- लाखसे बना आभूषण ११,१२।

लठिहरा- लाठीवाला ११,१२।

लिलार- मस्तक १३,११,१२,१,३।

स

सजी- वर्तन १३।

सकतहा-सकरा ११,१२।

सकेत- संक्षिप्त १,३,५,६,७।

सवेरक-सवेरा १,३,४,११,१२।

सवत- सपत्नी ११।

सवति- सपत्नी १,३ ।

सूता- गले का एक आभूषण ११।

सुहडी-मछली १३।

साढ़ी-मलाई १,३,११,१२।

म

म - मैं १०।

मंय- मैं ११।

मझिला-बीच का १,३,११,१२।

मनसा- मैंस १३।

महयां- ऊपर १३।

-लड़की २ ।

मदगी- शराब १३।

मजूर- मोर ११।

माढ़- लकड़ी से बिनी चारपाई १०।

माख-बुरा १,३।

माछा-नहीं १३।

मामू- फूफा १३।

मांया- बेटी १३।

माला- रात्रि १३।

माक- सांभर १३।

मैछा- मूंछ ३,११।

मेद-शरीर १३।

मैसमा-काम्पर १३।

मैच्छा- ऊंचा १३।

मिन्दी-आंख के बाल १०।

मौसा- मौसा ११।

मौखना-खाया १३।

मौच्छा- मुंह १३।

मौखारी- काला १३।

मुई-नाक १३।

मुन्हारी- सामने १३।

न

नरेटू- गर्दन ११।

नलस- था १३।

नासगो- भौजाई १३।

नावां- नया १०,११।

नाक- नाक १०।

नानीघर-ननिहाल ११।

नै- कौन १३।

नेई- सांप १३।

निज्जे- नजदीक १०,११।

निखरे ,, १,३।

निचके ,, ४,५,६,७ ।